सी. एन. श्रीकांतन नायर और पोंजिकारा रफ़ी पर केंद्रित परिसंवाद

21 नवंबर 2014, अलुवा

साहित्य अकादेमी ने यूनियन क्रिश्चियन कॉलेज, अलुवा के मलयाळम् विभाग के सहयोग से 21 नवंबर 2014 को अलुवा के यूनियन क्रिश्चियन कॉलेज में सी. एन. श्रीकांतन नायर और पोंजिकारा रफ़ी पर केंद्रित एक परिसंवाद का आयोजन किया।

कॉलेज के प्राचार्य श्री ए. बेनी चेरियन ने परिसंवाद के विषय पर प्रकाश डालते हुए श्रोताओं का प्रतिभागियों से परिचय कराया। मलयाळम् के प्रसिद्ध लेखक और कॉलेज के पूर्व छात्र श्री सेतुमाधवन ने मलयाळम् साहित्य को समृद्ध करने में श्रीकांतन नायर और पोंजिकारा रफ़ी के योगदान पर प्रकाश डाला। श्री ई. पी. राजगोपालन ने बीज भाषण देते हुए पश्चिम और पूर्व में आधुनिकतावाद की अवधारणा पर सोचने-समझने के तरीक़े को एक समान बताया। सत्रांत में सुश्री मैरी जॉर्ज ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया। पहला सत्र, जो श्रीकांतन नायर के साहित्य पर केंद्रित था, की अध्यक्षता श्री सी. आर. ओमानकुट्टन ने की। इस सत्र में श्री एन. ग्रामप्रकाश और श्री मुंजीनाडु पद्मकुमार ने क्रमशः 'सी.एन. श्रीकांतन नायर के नाटकों के रूप विधान' और 'रामायण के नाटकों और सांसारिक चेतना' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किए। दूसरा सत्र पोंजिकारा रफ़ी के साहित्य पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता श्री के. जी. पालोसे ने की। इस सत्र में '*स्वर्गदूतन* : आख्यान और इतिहास' तथा '*कलियुगम* : पाठ इतिहास और इतिहास लेखन' जैसे विषयों पर प्रकाश डाला गया। साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य श्री के. जॉर्ज जोसेफ़ ने समापन सत्र की अध्यक्षता की। मशहूर लेखक और अभिनेता श्री पी. एफ़. मैथ्यूज़ ने इस अवसर पर समापन भाषण दिया। कॉलेज के मलयाळम् विभाग के प्रो. विधु नारायण ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'ग़दर लहर और पंजाबी साहित्य' विषयक संगोष्ठी

22-23 नवंबर 2014, कोलकाता

साहित्य अकादेमी ने पंजाबी साहित सभा के सहयोग से 22-23 नवंबर 2014 को खालसा इंग्लिश स्कूल सभागार, कोलकाता में 'ग़दर लहर और पंजाबी साहित्य' विषयक द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी की कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती मनजीत कौर भाटिया ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों के बारे में जानकारी दी। अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रवेल सिंह ने प्रतिभागियों का परिचय देते हुए संगोष्ठी के उद्देश्य एवं उपयोगिता पर प्रकाश डाला।

श्री एस. त्रिलोचन सिंह, पूर्व अध्यक्ष, अल्पसंख्यक आयोग, भारत सरकार ने कहा कि ग़दर क्रांति का व्यापक प्रभाव विभिन्न भाषाओं के साहित्य पर पड़ा तथा पंजाबी साहित्य भी इससे अछूता नहीं है। प्रसिद्ध पंजाबी विद्वान श्री स्वराज वीर ने अपने बीज भाषण में कहा कि ग़दर क्रांति का प्रभाव पंजाबी लेखकों की मानसिकता एवं उनके साहित्य पर भी हुआ। उन्होंने उस समय की लिखित कविताओं को उद्धृत किया। पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला के कुलपति प्रो. जसपाल सिंह ने इस सत्र की अध्यक्षता की। श्री एस. जोधा सिंह ने उस क्रांति के अपने व्यक्तिगत अनुभवों को साझा किया।

संगोष्ठी तीन सत्रों में विभाजित थी। इन सत्रों की अध्यक्षता क्रमशः श्री मोहन काहलो, श्री दीपक मनमोहन सिंह एवं श्री रवेल सिंह ने की तथा श्री हिमाद्री बैनर्जी, श्री जसविंदर सिंह, श्री बलबीर माधोपुरी, श्री हरदेव सिंह ग्रेवाल, श्री मनजीत सिंह, श्री गुरभजन सिंह गिल, श्री हरजोध सिंह, सुश्री रमिंद्र कौर, श्री रवींद्र रवि, श्री जगमोहन सिंह एवं श्री सीताराम बंसल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

'जां निसार अख़्तर : साहित्य और विचार' जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद

22 नवंबर 2014, मुंबई

साहित्य अकादेमी द्वारा उर्दू के मशहूर शायर जां निसार अख़्तर की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर 'जां निसार अख़्तर : साहित्य और विचार' विषयक एक परिसंवाद का आयोजन अहमद ज़करिया सभागार, मुंबई में 22 नवंबर 2014 को किया गया।

अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी मुश्ताक़ सदफ़ ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए प्रतिभागियों का परिचय कराया। मशहूर शायर और फ़िल्मी गीतकार श्री जावेद अख़्तर ने परिसंवाद में उद्घाटन भाषण करते हुए जां निसार अख़्तर की शायरी में शैली, इमेजरी, गेयता एवं भाषा की सादगी के बारे में बात की।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि अंजुमन-ए-इस्लाम के अध्यक्ष डॉ. ज़हीर ख़ार्जी ने जां निसार अख़्तर और उनकी पत्नी सुफ़िया अख़्तर के आपसी रिश्तों के बारे में बात की। विख्यात आलोचक श्री शमीम तारिक़ ने अपने बीज वक्तव्य में जां निसार अख़्तर की शायरी की आज

श्री चंद्रभान ख़याल, श्री जावेद अख़्तर, श्री ज़हीर क़ाज़ी, श्रीमती शबाना आज़मी तथा श्री शमीम तारिक़

की दुनिया में प्रासंगिकता एवं महत्त्व के बारे में बात की।

अकादेमी के उर्दू भाषा परामर्श मंडल के संयोजक श्री चंद्रभान ख़याल ने सत्र की अध्यक्षता की तथा जां निसार अख़्तर की शायरी का उर्दू में मक़ाम पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

उद्घाटन सत्र के बाद दो विचार सत्र आयोजित हुए, जिनकी अध्यक्षता क्रमशः श्री जावेद अख़्तर तथा श्री शमीम तारिक़ ने की। इन सत्रों में सर्वश्री अब्दुल अहद साज़, बेग एहसास, कलीम जिया और श्री हामिद इक़बाल सिद्दीक़ी ने जां निसार अख़्तर की शायरी के विभिन्न पहलुओं पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

ख़ैरुद्दीन चौधुरी, सौगज्जम ब्रजेश्वर सिंह एवं सगोलसेम धबाल सिंह के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर केंद्रित परिसंवाद

23 नवंबर 2014, कछार

साहित्य अकादेमी द्वारा नहरोल खोरीरोल शिल्लप के संयुक्त तत्त्वावधान में मणिपुरी कवियों ख़ैरुद्दीन चौधुरी, सौगज्जम ब्रजेश्वर सिंह एवं सगोलसेम धबाल सिंह के जीवन एवं कृतित्व पर केंद्रित एक परिसंवाद का आयोजन 23 नवंबर 2014 को कछार, असम में किया गया। इस अवसर पर अकादेमी के कोलकाता कार्यालय प्रभारी श्री गौतम पॉल ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया। नहरोल खोरिरोल शिल्लप के अध्यक्ष श्री एल. अटल सिंह ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बिहारी सिंह ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए कवियों के जीवन एवं साहित्य पर संक्षेप में प्रकाश डाला।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री एनजी. बसंत कुमार सिंह ने की, जिसमें डॉ. एन. बिद्यासागर सिंह, प्रो. एच.

ननी कुमार सिंह एवं श्री ए. द्विजेंद्र कुमार सिंह ने क्रमशः 'सगोलसेम धबाल सिंह का जीवन एवं कृति', 'कवि ख़ैरुद्दीन' एवं 'सौगज्जम ब्रजेश्वर सिंह का जीवन एवं कृति' शीर्षक अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री ओइणम नीलकंठ ने की, जिसमें नौ कवियों सर्वश्री अब्दुस साहिद चौधुरी, तरंगबम सनामच, युमनाम इलावंत, क्षेत्रीमायूम नोबिन, थोकचोम विश्वनाथ, एस. ताहिर अली, लौखम नंद कुमार, अब्दुल हमीद एवं श्रीमती ओइणम उषारानी ने मणिपुरी एवं अंग्रेज़ी में अपनी कविताओं का पाठ किया। कार्यक्रम के अंत में नहरोल खोरिरोल शिल्लप के चौ. विदित कुमार ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

खेयालदास बेगवाणी 'फानी' पर संगोष्ठी

23 नवंबर 2014, भोपाल

साहित्य अकादेमी ने सिंधी साहित्य अकादमी और मध्य प्रदेश संस्कृति परिषद् के सहयोग से 23 नवंबर 2014 को भोपाल के स्वराज भवन में खेयालदास बेगवाणी 'फानी' पर एक संगोष्ठी आयोजित की।

साहित्य अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रकाश ने प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया। सिंधी के प्रसिद्ध विद्वान श्री विष्णु गेहाणी ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। उन्होंने 'फानी' को विलक्षण प्रतिभा का धनी बताते हुए कहा कि वे एक व्यावहारिक और आदर्श शिक्षक थे। उन्होंने 'फानी' के व्यक्तित्त्व के कई महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर चर्चा की, जो उनके रंगकर्म और शिक्षा से संबंधित हैं। श्री प्रेम प्रकाश ने बीज भाषण दिया। उन्होंने 'फानी' को आम लोगों का कवि बताया और उनकी भारत विभाजन से जुड़ी कविताओं से लेकर 1995 तक लिखी कविताओं को सिंधी काव्य परंपरा में बेजोड़ बताया। सत्रांत में सिंधी साहित्य अकादमी, मध्य प्रदेश संस्कृति परिषद् के निदेशक श्री अशोक बुलानी ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन दिया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री वासदेव मोही ने की, जिसमें श्री झामू चुगाणी, श्री खीमण मुलाणी और श्री मोहन गेहाणी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री झामू चुगानी ने 'फानी' के जीवन और कविता को दूसरे कवियों के लिए आदर्श और प्रेरणास्पद बताया। श्री खीमण मुलाणी ने 'फानी' की कविताओं के ज़रिए कई बहुआयामी तथ्यों पर प्रकाश डाला। श्री मोहन गेहाणी ने 'फानी' की कविताओं में उनकी विश्वदृष्टि और दर्शन के प्रतिबिंब पर प्रकाश डाला। दूसरा सत्र श्री मोहन गेहाणी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें श्री चुन्नीलाल वाधवाणी, श्री वासदेव मोही और श्री अशोक बुलाणी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री चुन्नीलाल वाधवानी ने 'फानी' की कविताओं में निहित कलात्मक तत्त्वों पर चर्चा की। श्री वासदेव मोही ने 'फानी' के ज़रिए सिंधी कविताओं में अनेक और अनिवार्य तत्त्वों के जुड़ने पर चर्चा की। श्री अशोक बुलाणी ने 'फानी' के सिंधी रंगकर्म में दिए योगदान पर प्रकाश डाला। सत्र में श्री नारी लछवाणी ने 'फानी' की कविताओं का पाठ किया।

'लोक साहित्य एवं साहित्य' विषयक संगोष्ठी

24-25 नवंबर 2014, सिल्चर

साहित्य अकादेमी द्वारा मणिपुरी विभाग, असम विश्वविद्यालय के सहयोग से 'लोक साहित्य एवं साहित्य' विषयक एक संगोष्ठी का आयोजन रवींद्र मिलनायतन, असम विश्वविद्यालय, सिल्चर में 24-25 नवंबर 2014 को किया गया।

संगोष्ठी के आरंभ में कोलकाता कार्यालय प्रभारी श्री गौतम पॉल ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की योजनाओं के बारे में अवगत कराया। अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बिहारी सिंह ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की तथा प्रो. एच. ननी कुमार सिंह ने बीज वक्तव्य दिया।

श्री गौतम पॉल, श्री रमेंद्र भट्टाचार्य तथा प्रो. एच. बिहारी सिंह

सत्र के मुख्य अतिथि थे असम विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सोमनाथ दासगुप्त।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. एन. सरतचंद्र सिंह ने की, जिसमें श्रीमती एस. अंजू देवी, श्रीमती च. कमला देवी, श्री एन. विद्यासागर सिंह एवं श्री एस. रवींद्र सिंह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. डब्ल्यू. रघुमणि सिंह द्वारा की गई, जिसमें श्रीमती उषारानी शर्मा, श्रीमती अनिता सिंह, श्री अब्दुल खैर चौधुरी, श्री मुशिंद्र सिंह और श्रीमती मेनका सिंह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। तीसरे सत्र में श्री वाई. रासबिहारी सिंह, डॉ. अनिल बोरो, श्री एस. शरत सिंह, श्रीमती थ. रंजना देवी, श्रीमती एस. मरिना सिंह एवं श्री दिलीप सिंह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. एच. बिहारी सिंह ने की। कार्यक्रम के अंत में प्रो. एच. ननीकुमार सिंह ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

'मलयाळम् आलोचना की नई प्रवृत्तियाँ' विषयक परिसंवाद

28 नवंबर 2014, कासरगॉड

साहित्य अकादेमी ने कन्नूर विश्वविद्यालय के मलयाळम् विभाग के सहयोग से 28 नवंबर 2014 को कासरगॉड में 'मलयाळम् आलोचना की नई प्रवृत्तियाँ' विषय पर केंद्रित एक परिसंवाद का आयोजन किया।

विश्वविद्यालय के मलयाळम् विभाग के डॉ. ए. एम. श्रीधरन ने उद्घाटन सत्र में प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया। कन्नूर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. खादर मनगाड ने परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए कहा कि साहित्य का विकास होना उसी तरह आवश्यक है, जिस तरह से विज्ञान का, क्योंकि इन्हीं के ज़रिए सामाजिक बुराइयों को दूर करने में सहायता मिलती है। साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री सी. राधाकृष्णन ने अपने अध्यक्षीय भाषण में साहित्य अकादेमी द्वारा साहित्य के प्रोत्साहन हेतु ली गई कई पहलक़दमियों का ज़िक्र किया और समकालीन मलयाळम् आलोचना पर संक्षेप में प्रकाश डाला। चर्चित आलोचक डॉ. के. जी. मोहनन ने बीज भाषण दिया। सत्रांत में साहित्य अकादेमी, बेंगळूरु के कर्मचारी श्री पुरुषोतम ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद में दो विचार सत्र रखे गए थे, जिनकी अध्यक्षता क्रमशः श्री के. पी. रामनुन्नी और श्री पी.के. पराकदवु ने की। श्री ई.पी. राजगोपाल ने 'केरल की आलोचना', डॉ. वालासालन वदुस्सेरी ने 'पाठ के पुनर्पाठ की महत्ता', डॉ. एम.बी. मनोज ने 'स्त्रीवाद और दलित अध्ययन' तथा डॉ. पी. शिवप्रसाद ने 'सांस्कृतिक अध्ययन और आलोचना' शीर्षक अपने आलेख प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के अंत में श्रीमती पी. सूर्या ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'नेपाली में युद्ध साहित्य' पर परिसंवाद

28 नवंबर 2014, देहरादून

साहित्य अकादेमी ने अखिल भारतीय नेपाली भाषा समिति के सहयोग से 28 नवंबर 2014 को देहरादून में 'नेपाली में युद्ध साहित्य' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन किया।

परिसंवाद के आरंभ में साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी द्वारा नेपाली साहित्य के प्रोत्साहन हेतु चलाई जा रही गतिविधियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला। नेपाली के प्रसिद्ध कवि और आलोचक श्री जीवन नामदुङ ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। अखिल भारतीय नेपाली भाषा समिति के अध्यक्ष श्री पहल सिंह क्षेत्री ने सत्र की अध्यक्षता की। साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य श्री असीत राई ने बीज भाषण दिया। प्रसिद्ध हिंदी और मैथिली कवि श्री बुद्धिनाथ मिश्र इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि थे। प्रथम विचार सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने की, जिसमें श्री लोकनाथ उपाध्याय और श्री योगवीर शाक्य ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री लक्ष्मण श्रीमल ने की, जिसमें श्री सचेन राई, श्री तेजमान बरायली और श्री डंबरमणि प्रधान ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सभी वक्ताओं ने अपने वक्तव्य में नेपाली गद्य, उपन्यास, कहानी, कविता और नाटकों में युद्ध चित्रण पर समान रूप से प्रकाश डाला। ऐसे गीतों का भी पाठ किया गया, जिसमें गोरखाओं की बहादुरी का वर्णन किया गया है। कार्यक्रम के अंत में अखिल भारतीय नेपाली भाषा समिति के महासचिव श्री भूपेंद्र अधिकारी ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'मीडिया और साहित्य' विषयक परिसंवाद

28 नवंबर 2014, कटक

साहित्य अकादेमी ने रवेन्शॉ यूनिवर्सिटी के ओड़िया विभाग के सहयोग से 28 नवंबर 2014 को कटक में यूनिवर्सिटी के हैरिटेज हॉल में 'मीडिया और साहित्य' विषयक एक परिसंवाद का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहु ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने साहित्य को आम जनता तक पहुँचाने में मीडिया की भूमिका पर प्रकाश डाला। श्री मनोज दास ने वस्तुनिष्ठ रिपोर्टिंग किए जाने पर ज़ोर दिया। उन्होंने ऐसे कई उदाहरण दिए, जब सरकार की अक्षमता पर कोई भी बोलने को तैयार नहीं होता, लेकिन ख़बरें तब भी बनी हैं और आम जनता तक पहुँची भी हैं। उन्होंने उन अचर्चित युवा लेखकों का ज़िक्र किया, जिन्हें अपने साहित्य को मीडिया में जगह देने की तलाश रहती है। उन्होंने अख़बारों में साहित्य को ज़्यादा-से-ज़्यादा जगह देने पर बल दिया। श्री सौम्यरंजन पटनायक ने अवकाश को साहित्य के विकास की पूर्व अवस्था कहा। बाज़ारोन्मुख अर्थव्यवस्था में अवकाश दुर्लभ होता जा रहा है। रिपोर्टर अपने समय की माँग के पाबंद होते हैं। उन्होंने इस बात से इनकार किया कि अख़बार लेखकों, साहित्यकारों को नहीं छापते हैं, या जगह नहीं देते हैं, उन्होंने कहा कि लेखकों का यह मानना है कि अख़बार उनकी महान कला को अभिव्यक्त करने का उचित माध्यम नहीं हैं। इसलिए वे भी अपने साहित्य को अख़बार में छपवाने से बचते रहते हैं। उन्होंने कहा कि साहित्य और मीडिया तो राज्य के संरक्षण पर निर्भर रहते हैं। किसी ख़ास परिस्थिति में यह स्वाभाविक है कि उसका अपना एक पक्ष हो। इसीलिए राज्य के मामलों से दूर भागने में मीडिया अपने रुतबे 'चौथा स्तंभ' का कभी भी इस्तेमाल नहीं कर सकता। गौरांग चरण दास ने साहित्य के संप्रेषणात्मक मूल्य पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर 'अधूरा अंधसारा' नामक किताब का भी लोकार्पण किया गया।

श्री मृणाल चटर्जी ने मीडिया को एक ऐसी भाषा का प्रयोग करने की सलाह दी, जो आमलोगों की समझ में आ सके। श्री असित महांति ने 'उत्कल ओईपिका' का ज़िक्र करते हुए बताया कि इतिहास में इस अख़बार ने साहित्य को लोकप्रिय बनाने और साहित्यिक रुचि को विकसित करने में बहुत ही शक्तिशाली और महत्त्वपूर्ण

भूमिका निभाई। श्री रवि क़ानूनगो ने शब्दों के इस्तेमाल पर मीडिया और साहित्य के संघर्ष पर प्रकाश डाला। साहित्य सांस्कृतिक बदलाव की समस्याओं को अपने पाठकों तक पहुँचाता है। श्री शांतुन रथ ने आकाशवाणी कार्यक्रम के ज़रिए स्वतंत्रता के बाद कवियों और लेखकों की प्रतिभागिता पर प्रकाश डाला। श्री रथ ने साहित्य में संरक्षण और उसको लोकप्रिय बनाने में रेडियों की प्रशंसनीय भूमिका का उल्लेख किया।

दूसरे सत्र में श्री प्रद्युम्न सत्पथी ने बताया कि बदलते समय में मीडिया की यह ज़िम्मेदारी बनती है कि वह क्लासिकल ओड़िया की गरिमा को बरक़रार रखे। उन्होंने मीडिया को अच्छे साहित्य के प्रकाशन के लिए भी आग़ाह किया। श्री सुभाष चंद्र सत्पथी ने साहित्य की आमलोगों तक पहुँच बनाने में अनुवाद की महत्ता पर प्रकाश डाला। श्री दीपक सामंत राय ने सभी साामाजिक और राजनीतिक मंचों से ओड़िया के इस्तेमाल करने पर ज़ोर दिया। श्री सतकड़ी होता ने विज्ञान और तकनीकी से आए नए शब्दों को ओड़िया भाषा में सम्मिलित करने पर ज़ोर दिया और उन्होंने एक शब्दकोश बनाने का भी सुझाव दिया, जो इन नए शब्दों को उसमें शामिल करे। श्रीमती जयंती रथ ने कहा कि लोक साहित्य और स्वतंत्रता के बाद लिखे गए साहित्य में इसीलिए वृद्धि हो रही है, क्योंकि उसे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के कार्यक्रमों में जगह दी गई है। श्री दाशरथि दास ने पत्रकारिता में साहित्य को आच्छादित किए जाने की ओर ध्यान आकृष्ट कराया। उन्होंने साहित्यिक गद्य के मीडिया में प्रयोग पर ज़ोर दिया और कहा कि तभी मीडिया साहित्यिक अभिरुचि को विकसित करने में मदद कर सकता है।

'भारतीय अंग्रेज़ी लेखन में सौंदर्य, इतिहास एवं भविष्य की तलाश' विषयक संगोष्ठी

28-30 नवंबर 2014, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा 'भारतीय अंग्रेज़ी लेखन में सौंदर्य, इतिहास एवं भविष्य की तलाश' विषय पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 28-30 नवंबर 2014 को अकादेमी के सभागार में किया गया।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए भारतीय अंग्रेज़ी लेखन में भारत तथा विदेश में प्रत्यक्ष ज्ञान के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि यद्यपि पड़ोसी अंग्रेज़ी देशों में, अब भी भारतीय अंग्रेज़ी लेखन को साहित्य के हाशिये पर रखा जाता है, जिससे भारतीय साहित्य को वैश्विक क्षेत्र पर रखने में सहायता मिली है। इस चर्चा में प्रो. मालाश्री लाल, सुश्री नमिता गोखले, सुश्री इप्शिता चंदा एवं प्रो. हरीश त्रिवेदी ने भाग लिया तथा इस सत्र का संयोजन प्रो. के. सच्चिदानंदन द्वारा किया गया। इस चर्चा के मुख्य मुद्दे लोकप्रिय एवं साहित्यिक लेखन, भारतीय अंग्रेज़ी लेखन का मानक, कथा साहित्य सृजन के लिए भाषा का चुनाव

डॉ. के. श्रीनिवासराव, प्रो. हरीश त्रिवेदी, प्रो. के. सच्चिदानंदन, प्रो. मालाश्री लाल, सुश्री नमिता गोखले तथा सुश्री इप्शिता चंदा

तथा भारतीय अंग्रेज़ी लेखन की परख में आलोचना सिद्धांतों की भूमिका आदि विषय थे।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. पी.पी. रवींद्रन ने की, जिसमें प्रो. सौगत भादुड़ी एवं प्रो. वृंदा नाबार ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। पठित आलेख 'भारतीय अंग्रेज़ी साहित्य में कथा लेखन' तथा 'भारतीय साहित्य में भारतीय अंग्रेज़ी लेखन का स्थान' विषयों पर केंद्रित थे।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. इप्शिता चंदा ने की। इस सत्र में प्रो. निशांत ज़ैदी, प्रो. एम.टी. अंसारी एवं प्रो. आर.राज राव ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. तुतुन मुखर्जी ने की, जिसमें प्रो. जी. एस. जयश्री एवं प्रो. अक्षय कुमार ने भारतीय अंग्रेज़ी लेखन के गद्य एवं पद्य विधाओं में नई प्रवृत्तियों का अविर्भाव विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

चौथे एवं पाँचवे सत्र की अध्यक्षता क्रमशः प्रो. ई. वी. रामकृष्णन तथा प्रो. एम.टी. अंसारी ने की। चतुर्थ सत्र में भारतीय अंग्रेज़ी लेखन में नारीवादी कविता विषय पर अनामिका एवं शशि खुराना ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। पंचम सत्र में 'भारतीय अंग्रेज़ी लेखकों में भाषायी द्वंद' विषय पर प्रो. पी.पी. रवींद्रन, प्रो. आरुणि कश्यप एवं प्रो. तुतुन मुखर्जी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी में उपस्थित विद्वानों द्वारा आलेखों पर खुल कर चर्चा हुई तथा कई प्रश्न उभरकर सामने आए। ये प्रश्न शोध छात्रों के लिए साहित्य के नए द्वार खोलने का काम करेंगे। श्री अनीसुर रहमान, रिजियो राज तथा श्री उत्कर्ष अमिताभ ने भी चर्चा में भाग लिया। अंत में प्रो. के. सच्चिदानंदन ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'तेलुगु साहित्य की समसामयिक प्रवृत्तियाँ' विषयक परिसंवाद

30 नवंबर 2014, ओंगेले

साहित्य अकादेमी ने प्रकाशम डिस्ट्रिक्ट राइटर्स एसोसिएशन के सहयोग से 30 नवंबर 2014 को आचार्य रंगभवन, ओंगेले में 'तेलुगु साहित्य की समसामयिक प्रवृत्तियाँ' विषयक एक परिसंवाद का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी श्री के. पी. राधाकृष्णन ने आगत अतिथियों, प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी द्वारा साहित्य के प्रोत्साहन हेतु ली गई कई पहलक़दमियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला। इस अवसर पर प्रकाशम राइटर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री बी. हनुमा रेड्डी ने अपने उद्घाटन भाषण में एसोसिएशन द्वारा किए गए अनेक कार्यक्रमों पर संक्षेप में प्रकाश डालते हुए साहित्य अकादेमी को इस प्रकार के परिसंवाद आयोजित करने के लिए धन्यवाद दिया। साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एन. गोपी ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए साहित्य और समाज के बीच संबंधों पर प्रकाश डाला। उन्होंने माना कि साहित्यिक आंदोलन और उसके प्रभाव समाज में प्रतिबिंबित होते हैं और साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि सभी साहित्यिक आंदोलनों का उद्देश्य सामाजिक जागरूकता ही होना चाहिए।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. यू. देवपालन ने की, जिसमें प्रो. वी. सत्यनारायण, श्री निखिलेश्वर और श्री मंत्री कृष्णमोहन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। वक्ताओं ने इस सत्र में 'कविता का अभ्युदय या तेलुगु साहित्य में प्रगतिशील आंदोलन', 'दिगंबर कविता आंदोलन' और 'तेलुगु साहित्य की समकालीन काव्य प्रवृत्तियों' जैसे विषयों पर समान रूप से प्रकाश डाला। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. वेल्गा वेंकटप्पैया ने की, जिसमें प्रो. येंदुलरी सुधाकर, डॉ. वी. नागराज्यलक्ष्मी और श्री शेख़ करीमुल्ला जैसे विद्वानों ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सभी वक्ताओं ने तेलुगु साहित्य में 'दलित साहित्यिक आंदोलन', 'समकालीन तेलुगु साहित्य में नारीवादी साहित्यिक प्रवृत्तियाँ' और 'अल्पसंख्यक वर्ग की कविताएँ' पर समान रूप से प्रकाश डाला।

समापन सत्र की अध्यक्षता श्री पौन्नुरी वेंकट श्री निवासुलु ने की। इस सत्र में प्रो. एन. गोपी, डॉ. धारा

रामांध शास्त्री और श्री हनुमा रेड्डी ने अपने विचार व्यक्त किए। प्रकाशम डिस्ट्रिक्ट राइटर्स एसोसिएशन के संयुक्त सचिव डॉ. बीरम सुंदर राव ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'आधुनिक संताली कविता' पर संगोष्ठी
6-7 दिसंबर 2014, मिदनापुर

साहित्य अकादेमी तथा अखिल भारतीय संताली लेखक एसोसिएशन के संयुक्त तत्त्वावधान में 'आधुनिक संताली कविता' पर एक द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 6-7 दिसंबर 2014 को मिदनापुर, पश्चिम बंगाल में किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात संताली लेखक और अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के सदस्य श्री नित्यानंद हेंब्रम ने किया। उन्होंने संताली भाषा में काव्य सृजन की लंबी परंपरा का उल्लेख करते हुए कहा कि संपूर्ण संताली साहित्य का 80 प्रतिशत कविता ही है, लेकिन उन कविताओं का वर्गीकरण अन्य भाषाओं की तरह नहीं है। इसका समुचित वर्गीकरण ज़रूरी है। इस अवसर पर अपने आरंभिक वक्तव्य में चर्चित संताली कवि श्री जदुमणि बेसरा ने संताली कविता के वर्तमान परिदृश्य पर अपने विचार रखे। संगोष्ठी के आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत भाषण करते हुए अकादेमी द्वारा भारतीय भाषाओं सहित संताली भाषा में किए जा रहे कार्यों का संक्षेप में उल्लेख किया।

बीज वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए श्री रूपचाँद हांसदा ने कहा कि आधुनिक कविता में सूचीबद्ध करने में जिन विशिष्टताओं को मानदंड बनाया जाता है, विद्वानों में अभी भी उनको लेकर मतांतर हैं। वरिष्ठ संताली लेखक और अकादेमी के संताली भाषा परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हांसदा की अध्यक्षता में आयोजित उद्घाटन सत्र में श्रीमती दमयंती बेसरा के संपादन में अकादेमी द्वारा प्रकाशित 'आधुनिक संताली कविता संकलन' (1950-2010) का लोकार्पण भी किया गया।

संगोष्ठी का प्रथम सत्र श्रीमती दमयंती बेसरा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें सर्वश्री मदन मोहन सोरेन, दाशरथि सोरेन तथा श्यामचरण हेंब्रम ने क्रमशः संताली कविता में मिथ, प्रतीकवाद तथा कल्पना पर आलेख प्रस्तुत किए। वक्ताओं ने समकालीन संताली कविता के उदाहरण देकर और कवियों के नामोल्लेख करते हुए अपने विचारों को प्रकट किया।

संगोष्ठी के दूसरे दिन द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री जगन्नाथ सोरेन ने की। इस सत्र में श्री शोभानाथ बेसरा और श्री गुरचरण हेंब्रम ने क्रमशः संताली कविता में वर्गीकरण और स्वच्छंदतावाद विषयक अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र श्री आदित्य कुमार मांडी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें सर्वश्री महादेव हांसदा, रामकृष्ण मुर्मू और सनत हांसदा ने क्रमशः आधुनिक संताली कविता की विषयवस्तु और प्रवृत्तियाँ, लोकसाहित्य का प्रभाव तथा अन्य भाषाओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन विषयक आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र की अध्यक्षता श्री रामधन हेंब्रम ने की, जिसमें प्रख्यात संताली कवि श्री अर्जुन चरण हेंब्रम ने समापन वक्तव्य प्रस्तुत किया। संगोष्ठी के अंत में अखिल भारतीय संताली लेखक एसोसिएशन के श्री मंगल सोरेन ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

हाली एवं शिब्ली जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी
7-9 दिसंबर 2014, नई दिल्ली

उर्दू के दो महान लेखकों अल्ताफ़ हुसैन हाली एवं शिब्ली नोमानी के जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर साहित्य अकादेमी द्वारा अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में 7-9 दिसंबर 2014 को एक द्वि-दिवसीय संगोष्टी का आयोजन किया गया।

डॉ. के श्रीनिवासराव, प्रो. गोपीचंद नारंग, प्रो. तलत अहमद, प्रो. ज़मीरुद्दीन शाह, प्रो. सईदा सैयदेन हमीद, अतीक़ुल्लाह तथा श्री चंद्रभान ख़याल

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए उर्दू के विद्वानों हाली एवं शिब्ली के साहित्यिक योगदान के बारे में संक्षेप में उल्लेख किया। अकादेमी के पूर्व अध्यक्ष एवं महत्तर सदस्य प्रो. गोपीचंद नारंग ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में उनकी कविता में सामाजिक परिवर्तन के तत्त्वों और यह भी कि कैसे हाली और शिब्ली दोनों की कृतियों ने नई पहचान बनाई और उनकी उपस्थिति के बारे में विस्तार से बात की। सत्र के मुख्य अतिथि अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्याल के कुलपति ले.ज. ज़कीरुद्दीन शाह ने हाली और शिब्ली की कविताओं में महिलाओं की शिक्षा और राष्ट्र निर्माण की आकांक्षाओं के बारे में बात की। सत्र के विशिष्ठ अतिथि एवं जामिया मिलिया इस्लामिया के कुलपति प्रो. तलत अहमद ने महिलाओं और विशेष रूप से मुस्लिम महिलाओं को शिक्षित एवं सशक्त बनाने में इस जोड़ी के प्रयासों एवं उपलब्धियों की बात की।

मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी की कुलाधिपति प्रो. सैयदा सैयदेन हमीद ने दोनों विद्वानों द्वारा किए गए मुस्लिम महिलाओं को शिक्षा एवं सशक्तीकरण के प्रयासों एवं उपलब्धियों के बारे में बात की। प्रसिद्ध आलोचक एवं लेखक प्रो. अतीक़ुल्लाह ने अपने बीज वक्तव्य में हाली और शिब्ली के लेखन के विभिन्न पहलुओं के बारे में बात की। अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक श्री चंद्रभान ख़याल ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. अख़्तरुल वासे ने की तथा तीन विद्वानों श्री निज़ाम सिद्दीक़ी, प्रो. शाफ़े किदवई एवं डॉ. राशिद अनवर राशिद ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे सत्र में प्रो. कुद्दूस जावेद, डॉ. शम्स बदायूँनी तथा डॉ. वसीम बेगम ने अपने आलेख प्रस्तुत किए, जबकि सत्र की अध्यक्षता प्रो. शरीफ़ हुसैन क़ासमी ने की। तीसरे सत्र की अध्यक्षता प्रो. शाफ़े क़िदवई ने की, जिसमें डॉ. मौला बख़्श, डॉ. सैफ़ी सरौंजी एवं डॉ. वसीम राशिद ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। चौथे सत्र में तीन आलेख प्रो. इर्तिज़ा करीम, डॉ. मंज़र एजाज़ एवं डॉ. अबू बकर आबाद द्वारा प्रस्तुत किए गए तथा सत्र की अध्यक्षता प्रो. अली अहमद फ़ात्मी ने की।

पाँचवे सत्र की अध्यक्षता प्रो. सिद्दीक़ुर्रहमान क़िदवई ने की, जिसमें डॉ. अज़ीज़ परिहार, डॉ. रज़ा हैदर तथा डॉ. हसन रज़ा द्वारा आलेख प्रस्तुत किए गए। छठे सत्र में प्रो. अली अहमद फ़ात्मी, प्रो. शहज़ाद अंजुम एवं डॉ. अजय मालवीय द्वारा आलेख प्रस्तुत किए गए एवं सत्र की अध्यक्षता प्रो. निज़ाम सिद्दीक़ी ने की। सातवें सत्र की अध्यक्षता प्रो. मुहम्मद ज़ाकिर ने की, जिसमें डॉ. यहिया नशीत, डॉ. जमील अख़्तर तथा डॉ. मोहम्मद हादी रहबर द्वारा आलेख प्रस्तुत किए गए। आठवें सत्र में तीन आलेख प्रो. असीम काव्यानी, डॉ. शाहीना तबस्सुम एवं डॉ. दानिश इलाहाबादी द्वारा प्रस्तुत किए गए, जबकि सत्र की अध्यक्षता प्रो. अनीस अशफ़ाक ने की। नवें सत्र की अध्यक्षता प्रो. शीन काफ़ निज़ाम ने की, जिसमें प्रो. अनवर पाशा, डॉ. इक़बाल मसूद एवं डॉ. हसन रज़ा द्वारा आलेख प्रस्तुत किए गए। समापन सत्र की अध्यक्षता

प्रो. इब्ने कँवल ने की, जिसमें डॉ. अशफ़ाक़ अहमद आरफ़ी एवं डॉ. मुश्ताक़ अहमद बानी द्वारा आलेख प्रस्तुत किए गए।

संगोष्ठी के अंत में अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मुश्ताक़ सदफ़ ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'पंजाबियत : वर्तमान से भविष्य की तलाश' विषयक संगोष्ठी

12-13 दिसंबर 2014, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा भाई वीर सिंह साहित्य सदन के संयुक्त तत्त्वावधान में 'पंजाबियत : वर्तमान से भविष्य की तलाश' विषय पर 12-13 दिसंबर 2014 को भाई वीर सिंह साहित्य सदन, नई दिल्ली में एक द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए भारतीय साहित्य में पंजाबी साहित्य के योगदान का संक्षेप में उल्लेख किया। अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रवेल सिंह ने अपने आरंभिक वक्तव्य में पंजाबी लोक संस्कृति की समृद्ध परंपरा का उल्लेख किया। वरिष्ठ पत्रकार एवं लेखक श्री कुलदीप नैयर ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में पंजाबी भाषा, साहित्य एवं परंपरा के विकास एवं संरक्षण की आवश्यकता पर बल दिया। अपने बीज भाषण में प्रख्यात पंजाबी कवि डॉ. जसवंत सिंह नेकी ने पंजाबियत के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत किया। संगोष्ठी में पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला के कुलपति प्रो. जसपाल सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। सत्रांत में भाई वीर सिंह साहित्य सदन के मानद निदेशक श्री महेंद्र सिंह ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों की अध्यक्षता क्रमशः प्रो. मृदुला मुखर्जी, श्री स्वराज वीर, श्री सत्यपाल गौतम एवं श्री प्राण निवले ने की। विभिन्न सत्रों में सर्वश्री स्वराज वीर, सुच्चा सिंह गिल, जोगिंदर सिंह कैरों, सुश्री गुरप्रीत कौर, हरपाल सिंह पन्नू, गुरबचन सिंह बच्चन, राजकुमार हंस, जोगा सिंह, मनमोहन, एस.एस. संधा, सतनाम सिंह चाना एवं रवैल सिंह ने पंजाबियत के विभिन्न पहलुओं पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र की अध्यक्षता श्री प्राण निवले ने की। श्री प्रीतम सिंह ने अपने समापन वक्तव्य में बताया कि किस प्रकार पंजाबी संस्कृति भारत के अन्य स्थानों की तुलना में अधिक जीवंत है। श्री रवींद्र रवि ने संगोष्ठी पर एक विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। संगोष्ठी के अंत में अकादेमी की कार्यक्रम अधिकारी श्रीमती मनजीत कौर भाटिया ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

कोवल्ली लक्ष्मीनरसिंह राव पर परिसंवाद

14 दिसंबर 2014, हैदराबाद

साहित्य अकादेमी ने किन्नर आर्ट थिएटर के सहयोग से 14 दिसंबर 2014 को रवींद्र भारती सभाकक्ष, हैदराबाद में बीसवीं शताब्दी के महान तेलुगु उपन्यासकार कोवल्ली लक्ष्मीनरसिंह राव के व्यक्तित्व और कृतित्व पर एक परिसंवाद का आयोजन किया।

इस अवसर पर साहित्य अकादेमी, बेंगळूरु के क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने आगत प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी द्वारा साहित्य के प्रोत्साहन और प्रकाशन हेतु ली गई अनेक पहलक़दमियों की संक्षेप में चर्चा की। साहित्य अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एन. गोपी ने कोवल्ली लक्ष्मीनरसिंह राव के जीवन और कृतित्व पर संक्षेप में प्रकाश डालते हुए बताया कि कोवल्ली लक्ष्मीनरसिंह राव के उपन्यासों के अधिकांश पात्र मध्यवर्गीय और मज़दूर वर्ग के हैं। श्री ए. एन. जगन्नाथ शर्मा ने बतौर मुख्य अतिथि कोवल्ली के उपन्यासों के अनेक पहलुओं पर प्रकाश डाला। साथ ही उन्होंने यह

भी कहा कि लोककथाओं पर आधारित उपन्यासों को लिखना और प्रस्तुत करना बहुत ही कठिन कार्य होता है, परंतु कोवल्ली ने इस कार्य को सहजतापूर्वक तथा आकर्षक ढंग से पूरा किया। उन्होंने कोवल्ली के उपन्यासों की कई असाधारण विशेषताओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कोवल्ली के प्रस्तुतिकरण की शैली की ख़ास तौर से सराहना की। विशिष्ट अतिथि के तौर पर आमंत्रित कोवल्ली के सुपुत्र श्री लक्ष्मीनारायण ने पिता के कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उनके निजी और पेशेवर जीवन से संबंधित अनेक दिलचस्प दृष्टांतों का वर्णन किया। किन्नर आर्ट थिएटर के अध्यक्ष श्री राव प्रभाकर राव ने श्रोताओं को थिएटर से अवगत कराया और अनेक महान् व्यक्तित्त्वों को याद करते हुए उनके योगदान को थिएटर के ज़रिए सामान्य जनता के सामने लाने को थिएटर की एक विशेषता बताया। श्री द्वान शास्त्री ने बीज भाषण देते हुए कहा कि कोवल्ली की भाषा की सादगी और स्वयं का प्रचार करने के प्रयास से दूर रहना ही कोवल्ली की लोकप्रियता का मुख्य कारण है। उन्होंने कोवल्ली के उपन्यासों का नारीवादी विश्लेषण प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री सत्यनारायण ने की, जिसमें श्रीमती मुक्तेवी भारती, श्री वोलेती परवातीसम और श्री लिंगला रामतीर्थ ने क्रमशः 'कोवल्ली के उपन्यासों की असाधारण विषय वस्तु', 'कोवल्ली के उपन्यासों में पठनीयता' और 'कोवल्ली की लेखन शैली' शीर्षक अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री गुमा शंबाशिव राव ने की, जिसमें श्रीमती भवानी देवी और श्री बी. एस. रामुलु ने अपने आलेख प्रस्तुत किए और 'कोवल्ली के उपन्यासों में परिवार प्रणाली' और 'कोवल्ली के जगयज्ञ में लोकतत्त्व' जैसे विषयों पर प्रकाश डाला गया। श्री गुमा शंबाशिव राव ने 'कोवल्ली के उपन्यासों में सामाजिक चित्रण' पर भी बात की। तीसरे सत्र में श्रीमती एम. सुजाता रेड्डी, श्री नागमल्लेश्वर राव और श्रीमती बी. श्यामला ने अपने आलेख प्रस्तुत किए, जिसमें 'कोवल्ली के उपन्यासों में महिला पात्रों का चित्रण', 'कोवल्ली के उपन्यासों का हास्य-व्यंग्य और संदेश' तथा 'कोवल्ली के उपन्यासों की आकर्षक शैली' पर प्रकाश डाला गया।

प्रो. एन. गोपी ने समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए दिनभर चले परिसंवाद का सारांश प्रस्तुत किया। श्री रालाबंदी कविता प्रसाद ने बतौर मुख्य अतिथि कोवल्ली की लोकप्रियता पर संक्षेप में प्रकाश डाला और पाठकों के बीच भी उनके साहित्य के मूल्य पर बात की। श्री धेनुवुकोंडा श्रीराममूर्ति इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित थे। उन्होंने कोवल्ली के जीवन पर संक्षेप में प्रकाश डाला। कोवल्ली के सुपुत्र श्री कोवल्ली नागेश्वर राव ने अपने पिता के साहित्य में सामाजिक सुधार संबंधी तत्त्वों पर प्रकाश डाला। उन्होंने साहित्य अकादेमी से अपने पिता के साहित्य को दूसरी भारतीय भाषाओं में भी लाने की अपील की। परिसंवाद के अंत में किन्नर आर्ट थिएटर के श्री मदाली रघुराम ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'महिलाओं की साहित्यिक परपराएँ' विषयक परिसंवाद

15 दिसंबर 2014, तिरुन्नवाया

साहित्य अकादेमी ने श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय के सहयोग से दिनांक 15 दिसंबर 2014 को तिरुन्नवाया के विवि सभागार में 'महिलाओं की साहित्यिक परंपराएँ' विषयक एक परिसंवाद का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी, बेंगळूरु के कार्यक्रम अधिकारी श्री के. पी. राधाकृष्णन ने उद्घाटन सत्र में आगत प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया और अकादेमी द्वारा साहित्य की समृद्धि और प्रोत्साहन के लिए किए जा रहे प्रयासों पर संक्षेप में प्रकाश डाला। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परमर्श मंडल के संयोजक

श्री सी. राधाकृष्णन, डॉ. टी.पी. रवींद्रन, प्रो. सावित्री राजीवन,
(पीछे) श्री के.पी. राधाकृष्णन तथा डॉ. एल. सुषमा

श्री सी. राधाकृष्णन ने अपने उद्घाटन भाषण में सामाजिक विकास में महिलाओं की भूमिका और महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए महिलाओं को शिक्षित करने में साहित्य की प्रासंगिकता का उल्लेख किया। साहित्य अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल की सदस्या प्रो. सावित्री राजीवन ने अपना बीज भाषण देते हुए बताया कि महिलाएँ स्वयं को अभिव्यक्त करके आज़ाद महसूस करने लगी हैं और हाल में यह प्रयास भी बड़ी तेज़ी से किए गए हैं कि इनको हाशिए पर पड़ा हुआ मानकर इनके लेखन को 'स्त्री लेखन' की श्रेणी में डाल दिया गया है। उन्होंने साहित्य समुदायों से यह अपील की कि वे इस तरह की श्रेणीबद्धता पर रोक लगाएँ। विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. टी. पी. रवींद्रन ने विषय प्रवेश करते हुए साहित्य अकादेमी को इस बात के लिए धन्यवाद दिया कि उसने इस तरह का परिसंवाद आयोजित करने के लिए विवि को चुना। विवि के निदेशक डॉ. एल. सुषमा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र जिसकी अध्यक्षता डॉ. पी. गीता ने की, जिसमें चार प्रसिद्ध महिला लेखिकाओं डॉ. एस. जानकी, डॉ. के. आर. सजीथा, डॉ. उषाकुमारी और डॉ. रेशमा भारद्वाज ने अपने आलेख प्रस्तुत किए, जिनमें 'स्त्री लेखन की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि', 'दलित महिला लेखन', 'समकालीन स्त्री कविता' और 'महिला मित्रता' जैसे विषयों पर समान रूप से प्रकाश डाला गया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. के. टी. शमशाद हुसैन ने की, जिसमें डॉ. म्यूज़ मैरी जॉर्ज, डॉ. जिशा जोश, के. साजिता, रतीश कुमार और एल. सुषमा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए, जिनमें नारीवादी लेखन 'अहस्तांतरणीय' 'मलयाळम् में समकालीन महिला उपन्यास', 'स्त्री और प्रकृति', 'समकालीन स्त्री आलोचना की नई प्रवृत्तियाँ और विषय' आदि विषयों पर प्रकाश डाला गया। इस परिसंवाद में कई महत्त्वपूर्ण लेखक और विद्वानों ने भी शिरकत की।

डॉ. एम. लीलावती, प्रो. एम. थॉमस मैथ्यू, श्री सी. राधाकृष्णन तथा श्री पी. एम. राघवन

शेरुकड जन्मशतवार्षिकी

16 दिसंबर 2014, पट्टंबी

साहित्य अकादेमी द्वारा श्री नीलकंठ राजकीय संस्कृत महाविद्यालय के मलयाळम् विभाग के सहयोग से प्रख्यात मलयाळम् लेखक शेरुकड गोविंद पिशारोडी की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन 16 दिसंबर 2014 को महाविद्यालय परिसर, पट्टंबी में किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु के कार्यक्रम अधिकारी श्री के.पी. राधाकृष्णन ने प्रतिभागियो एवं अतिथियों का स्वागत किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में लब्धप्रतिष्ठ आलोचक डॉ. एम. लीलावती ने शेरुकड के काव्यशिल्प के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि मानव सम्मान एवं संवेदना शेरुकड के लेखन का मूल तत्त्व है। अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री सी. राधाकृष्णन ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में शेरुकड की लेखकीय विशेषताओं को रेखांकित किया। अपने बीज वक्तव्य में प्रो. एम. थॉमस मैथ्यू ने शेरुकड के लेखन में सामाजिक यथार्थ के वर्णन को इंगित करते हुए आश्चर्य व्यक्त किया कि उन्हें वह स्वीकार्यता क्यों नहीं मिली, जो उन्हें मिलनी चाहिए। सत्रांत में महाविद्यालय के मलयाळम् विभागाध्यक्ष डॉ. पी. गीता ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री पालकीझू नारायणन ने की, जिसमें श्री के.ई.एन. कुंज अहमद, श्री ई.पी. राजगोपालन, डॉ. जी. उषाकुमारी एवं प्रो. एम.आर. महेश ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र 'शेरुकड एवं मलयाळम् नाटक' विषय पर आधारित था, जिसकी अध्यक्षता डॉ. पी. गीता ने की। इस सत्र में श्रीमती पी. सी. देवकी एवं श्री पी. गंगाधरन ने शेरुकड द्वारा नियोजित शिल्प और तकनीक के बारे में बात की एवं उनके जीवन से जुड़े उपाख्यानों को प्रस्तुत किया। डॉ. के.वी श्रीजा तथा डॉ. ई.पी. सोनिया ने अपने आलेख द्वारा शेरुकड के नारी पात्रों तथा महिलाओं की दुर्दशा के बारे में विमर्श प्रस्तुत किए। समापन सत्र की अध्यक्षता श्री सी. पी. चित्रबानू ने की तथा समापन वक्तव्य मलयाळम् के प्रसिद्ध आलोचक प्रो. के.पी. शंकरन ने दिया। कार्यक्रम के अंत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन श्री एच. के. संतोष ने दिया।

'बोडो साहित्य में साहित्यिक आलोचना तथा बोडो बाल साहित्य की वर्तमान स्थिति' पर संगोष्ठी

16 दिसंबर 2014, गुवाहाटी

साहित्य अकादेमी द्वारा बोडो साहित्य सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में 'बोडो साहित्य में साहित्यिक आलोचना तथा बोडो बाल साहित्य की वर्तमान स्थिति' विषयक संगोष्ठी का आयोजन 16 दिसंबर 2014 को बाथोपुरी, गुवाहाटी में किया गया।

संगोष्ठी के आरंभ में कोलकाता कार्यालय प्रभारी श्री गौतम पॉल ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों के बारे में बताया। अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेमानंद मसाहारी ने उद्घाटन वक्तव्य किया। बीज वक्तव्य बोडो साहित्य सभा के उपाध्यक्ष श्री विसेस्वर बसुमतारी द्वारा दिया गया। सत्र की अध्यक्षता प्रो. अनिल कुमार बोडो ने की। बोडो साहित्य सभा के अध्यक्ष श्री कामेश्वर ब्रह्म सत्र के मुख्य अतिथि थे। सत्रांत में बोडो साहित्य सभा के महासचिव श्री कमलाकांत मसाहारी ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र का विषय था 'बोडो साहित्य में साहित्यिक आलोचना', जिसकी अध्यक्षता श्री धरिंदर वारी ने की। इस सत्र में श्री फूकन च. बसुमतारी, श्री बीरहासगिरि बसुमतारी एवं श्री सुनील फूकन बसुमतारी द्वारा आलेख प्रस्तुत किए गए। द्वितीय सत्र 'बोडो बाल साहित्य की

वर्तमान स्थिति' पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता श्री प्रेमानंद मसाहारी ने की। इस सत्र में श्री नवीन मल्ल बोरो, श्रीमती स्वर्णप्रभा चैनारी एवं श्री प्रशांत बोरो द्वारा आलेख प्रस्तुत किए गए। समापन सत्र की अध्यक्षता श्री तरेन बोरो ने की।

का. मु. शेरिफ़ जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद

18 दिसंबर 2014, पापनाशम

साहित्य अकादेमी ने 18 दिसंबर 2014 को पापनाशम के आर. डी. बी. महिला कॉलेज में महान कवि का. मु. शेरिफ़ की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर एक परिसंवाद का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के चेन्नै कार्यालय प्रभारी श्री ए. एस. इलानगोवन ने उद्घाटन सत्र में आगत प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी द्वारा साहित्य के प्रोत्साहन हेतु किए जा रहे अनेक प्रयासों पर संक्षेप में प्रकाश डाला। साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. आर. कामरासु ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए एक कवि, फ़िल्मी गीतकार, स्वतंत्रता सेनानी और एक कार्यकर्त्ता के रूप में का. मु. शेरिफ़ की असंख्य उपलब्धियों और साहित्यिक-सामाजिक योगदान का उल्लेख किया। उन्होंने का. मु. शेरिफ़ को एक ऐसा साहसी योद्धा बताया, जो पूरी दुनिया के तमिऴभाषियों के अधिकार के लिए लड़ा। डॉ. आर. कामरासु ने कहा कि का. मु. शेरिफ़ भारत के एक दुर्लभ राजनयिक होने के साथ-साथ एक महान कवि भी थे। श्री कुमारी अबू बकर ने बीज भाषण दिया, जबकि आर. डी. बी. महिला कॉलेज के संस्थापक श्री दाउद बतचा ने साहित्य अकादेमी को इस बात के लिए धन्यवाद दिया कि उसने उनके कॉलेज को का मु. शेरिफ़ की जन्मशताब्दी वर्ष मनाने के लिए चुना। साहित्य अकादेमी के तमिऴ परामर्श मंडल के सदस्य श्री सुंदर मुरुगन ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. आर. संबथ ने की, जिसमें डॉ. एच. एम. नाथरसा, श्री रथिना वेंकडेशन और प्रो. नसीम बानु ने अपने आलेख प्रस्तुत किए, जिनमें का. मु. शेरिफ़ के फ़िल्मी गीतों, का. मु. शेरिफ़ के संस्मरण और आईशा नाचियर पिल्लै थमिझ के आदर्श पर समान रूप से प्रकाश डाला गया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री रामासामी ने की। इस सत्र में श्री वी. प्रभाकरन, पुलवर श्री प्रभाकरन, डॉ. अलीबाबा और श्री ए. मणि ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। वक्ताओं ने का. मु. शेरिफ़ के समाजवादी आदर्श, का. मु. शेरिफ़ की लेखन शैली, का. मु. शेरिफ़ की आध्यात्मिक जड़ें और का. मु. शेरिफ़ द्वारा श्रीपूर्णम का मूल्यांकन, जैसे विषयों पर अपने विचार प्रकट किए।

समापन सत्र में श्री का. मु. शेरिफ़ सीताकाठी ने समापन भाषण दिया तथा कार्यक्रम के अंत में कॉलेज के उप-प्राचार्य डॉ. सी. थंगमालार ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

डॉ. आर. कामरासु, डॉ. आर. संबथ, श्री आर. वेंकदेशन, श्री दाऊद बतचा, श्री ए.एस. इलांगोवन, श्री सीताकथी, श्री नाथरसा तथा श्री नसीमा बानू

'आधुनिक कन्नड साहित्य का विकास' विषयक परिसंवाद

19 दिसंबर 2014, उजिरे

साहित्य अकादेमी ने उजिरे के धर्मस्थल मंजुनाथेश्वर कॉलेज के सहयोग से 19 दिसंबर 2014 को कॉलेज के सभागार में 'कन्नड साहित्य का विकास' विषयक एक परिसंवाद का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी, बेंगळूरु के क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महालिंगेश्वर ने आगत प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत करते हुए कन्नड साहित्य की समृद्धि और प्रोत्साहन हेतु साहित्य अकादेमी द्वारा किए गए विभिन्न प्रयासों की संक्षेप में चर्चा की। साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. नरहल्ली बालसुब्रह्मण्य ने परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए कन्नड साहित्य की महत्त्वपूर्ण समकालीन और विकासशील प्रवृत्तियों को रेखांकित किया। कन्नड के प्रसिद्ध आलोचक प्रो. एच. एस. राघवेंद्र राव ने बीज भाषण दिया। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. बी. यशोवर्मा ने सत्र की अध्यक्षता की और परिसंवाद के समन्वयक डॉ. बी.पी. संबथ ने सत्रांत में औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र में डॉ. बाला साहेब लोकापुर और डॉ. वेंकटगिरि दलवै ने क्रमशः 'कथा साहित्य रचने मत्तु विन्यास' और 'होशो तेलेमारिना कथानदा तात्विक नीलेगलु' शीर्षक आलेखों का पाठ किया। द्वितीय सत्र में डॉ. नटराज बूदाल और डॉ. कविता राय ने क्रमशः 'काव्य साहित्य रचने मत्तु विन्यास' और 'होश तेलेमारिना काव्यदा तात्विक नीलेगलु' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र में श्री के. सत्यनारायण और डॉ. महालिंग भट्ट ने क्रमशः 'अंकना साहित्यदा रचना मुत्तु विन्यास' और 'होश तेलेमारिना अंकना साहित्यदा तात्विक नीलेगलु' शीर्षक से अपने आलेखों का पाठ किया। चतुर्थ सत्र में प्रो. अविनाश ने 'होश शतमंदा विमर्श' शीर्षक अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। पांचवें सत्र के दौरान छह समानांतर सत्र भी आयोजित किए गए और अनेक विषयों पर विचार-विमर्श किया गया। डॉ. सत्यनारायण मलिपत्ला, डॉ. नरेंद्र राय, डॉ. नागप्पा गोड्डा, डॉ. शरत् कुमार, डॉ. भारती देवी, डॉ. धनंजय कुंबले और डॉ. वरदराज चंद्रगिरि जैसे विद्वानों ने इन सत्रों की अध्यक्षता करते हुए कार्यक्रम में शिरकत की। परिसंवाद के अंत में कन्नड परामर्श मंडल के सदस्य प्रो. अरविंद मालागत्ती ने समापन भाषण प्रस्तुत किया।

'पूर्वी क्षेत्रीय भाषाओं के काव्य एवं कथासाहित्य में आधुनिक प्रवृत्तियाँ' विषयक परिसंवाद

23-24 दिसंबर 2014, इंफ़ाल

साहित्य अकादेमी द्वारा 'पूर्वी क्षेत्रीय भाषाओं के काव्य एवं कथासाहित्य में आधुनिक प्रवृत्तियाँ' विषयक दो दिवसीय परिसंवाद का आयोजन 23-24 दिसंबर 2014 को जवाहर लाल नेहरू मणिपुरी नृत्य अकादमी सभागार, इंफ़ाल में किया गया।

आरंभ में अकादेमी के कोलकाता कार्यालय प्रभारी श्री गौतम पॉल ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल की संयोजिका प्रो. करबी डेका हज़ारिका ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में परिसंवाद के आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। लब्धप्रतिष्ठ मणिपुरी विद्वान प्रो. एन. खगेंद्र सिंह ने अपने बीज वक्तव्य में आधुनिक प्रवृत्तियों के बारे में बात करते हुए कहा कि आधुनिक एवं समकालीन प्रवृत्तियों के मध्य एक सीमारेखा है और विद्वानों को इस बात को ध्यान में रखना चाहिए। अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बिहारी सिंह ने सत्र की अध्यक्षता की तथा सत्रांत में श्री गौतम पॉल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौरहरिदास ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की, जिसमें

श्रीमती ज्योतिरेखा हज़ारिका, श्री सृजता एवं श्रीमती दमयंती बेसरा ने क्रमशः असमिया एवं बाङ्ला कविता तथा संताली कथासाहित्य में आधुनिक प्रवृत्तियाँ विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र में श्री अशोक अविचल, श्री गोपीनाथ ब्रह्म, श्री एल. जयचंद्र सिंह एवं प्रो. प्रतापचंद्र प्रधान ने क्रमशः मैथिली, बोडो एवं नेपाली कविता तथा मणिपुरी कथासाहित्य में आधुनिक प्रवृत्तियाँ विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हांसदा ने की। तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. अनिल बोरो ने की, जिसमें श्री अफसर अहमद, श्री के. राधाकुमार सिंह एवं योगवीर शाक्य ने क्रमशः बाङ्ला कथासाहित्य, मणिपुरी काव्य एवं नेपाली कथासाहित्य में आधुनिक प्रवृत्तियाँ विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। चतुर्थ सत्र में श्री तोरेन बोरो, श्री ताराकांत झा, श्री प्रदीप कुमार बिस्वाल एवं श्री बादल हेंब्रम ने क्रमशः बोडो, मैथिली, ओड़िया एवं संताली कथासाहित्य में आधुनिक प्रवृत्तियाँ विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने की।

समापन सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल की संयोजक डॉ. वीणा ठाकुर ने की तथा श्री निर्मल कांति भट्टाचार्य ने समापन वक्तव्य दिया।

साहित्य अकादेमी का बहुभाषी रचना-पाठ

25-27 दिसंबर 2014, वाराणसी

संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार, साहित्य अकादेमी और काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी के संयुक्त तत्त्वावधान में 'संस्कृति' के अंतर्गत 25-27 दिसंबर 2015 तक दृश्य कला संकाय, काशी हिंदू विश्वविद्यालय के सभागार में बहुभाषी रचना पाठ का आयोजन किया गया। 25 दिसंबर को आयोजित उद्घाटन सत्र में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी अतिथितियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया। उद्घाटन प्रख्यात ओड़िया लेखक श्री मनोज दास ने दिया तथा अध्यक्षीय व्याख्यान अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने दिया। मुख्य अतिथि की भूमिका में प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी थे। अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में कहा कि इस रचना पाठ का उद्देश्य भारत की विविध भाषाओं को सुनना और उनके बीच एक संवाद स्थापित करना है। भारत ऐसा देश है, जहाँ अनेक भाषाएँ और उनकी ध्वनियाँ हैं। कविता और कहानी ने श्रुति परंपरा से आज तक एक लंबी यात्रा की है, लेकिन अभी भी श्रुति परंपरा ही ज़्यादा प्रभावी है। लिपि के आविष्कार के बाद उसका संरक्षण ज्यादा हुआ है, लेकिन उसने अपनी श्रुति परंपरा को खोया भी है। उनका कहना था कि सारी कलाएँ मनुष्य की भीतरी बेचैनी को प्रतिबिंबित करती हैं।

प्रो. कमलेशदत्त त्रिपाठी ने संस्कृत साहित्य से लेकर आज तक की विभिन्न परंपराओं का उल्लेख करते हुए इस तथ्य को रेखांकित किया कि काव्य कभी भी पुरातन नहीं होता है, विचार की एक समानांतर धारा निरंतर उसे वर्तमान में स्थापित रखती है। प्रो. मनोज दास ने लेखन की वाचिक परंपराओं और अध्यात्म के रिश्ते पर प्रकाश डाला। उद्घाटन सत्र का संचालन और धन्यवाद ज्ञापन अकादेमी के उपसचिव श्री ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने किया।

इसी दिन अपराह्न में आयोजित प्रथम सत्र में भारतीय भाषाओं की कहानियाँ हिंदी अनुवाद में प्रस्तुत की गईं, जिसकी अध्यक्षता जाने-माने कथाकार प्रो. काशीनाथ सिंह ने की। इसमें तीन भाषाओं की कहानियों का पाठ हुआ। कोंकणी भाषा के श्री प्रकाश पर्येकर ने 'उदक' कहानी पढ़ी। गुजराती कथाकार श्री मोहन परमार ने गुजराती की कहानी 'आँधी' का पाठ किया तथा मैथिली कथाकार श्री विभूति आनंद ने 'मातृत्त्व' कहानी का वाचन किया।

बहुभाषी रचना पाठ के दूसरे दिन 26 दिसंबर 2014 को पूर्वाह्न में 10 भारतीय भाषाओं के कवियों ने अपनी

रचनाएँ प्रस्तुत कीं। कविता सत्र की अध्यक्षता अकादेमी पुरस्कार विजेता हिंदी कवि श्री ज्ञानेंद्रपति ने की। इसके अंतर्गत असमिया कवयित्री श्रीमती मणिकंतुला भट्टाचार्य, अंग्रेज़ी कवि श्री मिहिर चित्रे, हिंदी कवि श्री हरिश्चंद्र पांडेय, आदिवासी भाषा काकबरोक के कवि श्री चंद्रकांत मुरा सिंह, पंजाबी कवि श्री दर्शन सिंह बुट्टर, संताली कवयित्री श्रीमती जोबा मुर्मू और तेलुगु कवि श्री याकूब ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। सभी कवियों ने अपनी एक कविता मूल भाषा में तथा अन्य कविताओं के हिंदी/अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किए।

अपने अध्यक्षीय भाषण में ज्ञानेंद्रपति ने साहित्य अकादेमी की इस पहल का स्वागत करते हुए कहा कि इस तरह के आयोजनों से भाषाओं के नैन-नक्श सँवरते हैं। सभी भारतीय भाषाओं में आपसी आंतरिकता और सृजनात्मकता के सूत्र हैं और उनमें भारतीय लोक जीवन की छवियाँ देखी जा सकती हैं। इन सभी भाषाओं की कविता में जो प्रतिरोध का स्वर दिखता है, दरअसल वही देश को जोड़ता है और वही भारत के भविष्य के मार्ग को भी निर्धारित करेगा।

अपराह्न में कहानी पाठ सत्र की अध्यक्षता संस्कृत के कवि-कथाकार प्रो. अभिराज राजेंद्र मिश्र ने की। सिंधी कथाकार श्री भगवान अटलाणी और उर्दू कथाकार श्री अब्दुस्समद ने इस सत्र में अपनी कहानियाँ पढ़ीं। सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. मिश्र ने पढ़ी हुई कहानियों पर टिप्पणियाँ कीं और अपनी संस्कृत कहानी का पाठ भी किया।

बहुभाषी रचना पाठ के अंतिम दिन 27 दिसंबर 2014 को पूर्वाह्न के सत्र में भारतीय भाषाओं के कवियों ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं। सत्र की अध्यक्षता अकादेमी भाषा सम्मान से विभूषित भोजपुरी लेखक पंडित हरिराम द्विवेदी ने की। बाङ्ला की युवा कवयित्री सुश्री मंदाक्रांता सेन, हिंदी कवि श्री विमल कुमार, कन्नड के श्री लक्कुरु आनंद, मलयाळम् की श्रीमती अनिता तंपी, मणिपुरी के श्री लघु लेशाङथेम, मराठी के श्री चंद्रकांत पाटील, नेपाली के श्री मनप्रसाद सुब्बा और ओड़िया की श्रीमती प्रवासिनी महाकुड ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

अंतिम सत्र में प्रख्यात हिंदी कथाकार श्रीमती चंद्रकांता की अध्यक्षता में डोगरी लेखक श्री कृष्ण शर्मा ने और तमिळ लेखक श्री नांजिल नाडन ने अपनी कहानियाँ प्रस्तुत कीं। सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्रीमती चंद्रकांता ने कश्मीर के वर्तमान परिवेश पर अपनी कहानी 'आवाज़' प्रस्तुत की। अंत में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अकादेमी के इस पूरे आयोजन के लिए समस्त प्रतिभागी सहभागी वक्ताओं और श्रोताओं के प्रति आभार प्रकट किया। तीन दिन तक चले इस बहुभाषी रचना पाठ में हिंदी के अतिरिक्त 22 भारतीय भाषाओं के कवि/कथाकारों ने भाग लिया।

जयनारायण मल्लिक, वैद्यनाथ मल्लिक विधु एवं आनंद झा न्यायाचार्य जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

27-28 दिसंबर 2014, कोलकाता

साहित्य अकादेमी द्वारा मैथिली साहित्यकार त्रय जयनारायण मल्लिक, वैद्यनाथ मल्लिक विधु एवं आनंद झा न्यायाचार्य पर दो दिवसीय जन्मशती संगोष्ठी साहित्य अकादेमी, कोलकाता के सभागार में आयोजित की गई। संगोष्ठी के आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने मैथिली के उपस्थित विद्वानों, साहित्यकारों, लेखकों एवं श्रोताओं का हार्दिक स्वागत किया।

संगोष्ठी का उद्घाटन मैथिली पत्रिका *कर्णामृत* के संपादक और प्रतिष्ठित मैथिली विद्वान श्री राजनंदन लाल दास ने किया। उन्होंने विस्मृत होते जा रहे अनेक साहित्यकारों को संदर्भित करते हुए साहित्य अकादेमी द्वारा तीन मैथिली साहित्यकारों की स्मृति में आयोजित इस संगोष्ठी के लिए अकादेमी की सराहना की।

विषय प्रवर्तन अकादेमी के मैथिली भाषा परामर्श मंडल की संयोजक श्रीमती वीणा ठाकुर द्वारा किया गया। उन्होंने जयनारायण मल्लिक, वैद्यनाथ मल्लिक विधु एवं आनंद झा न्यायाचार्य के जीवन और कार्यों पर संक्षेप में प्रकाश डाला। बीजभाषण करते हुए श्री कमलकांत झा ने मैथिली साहित्य के इतिहास में तीनों साहित्यकारों के स्थान और महत्त्व को रेखांकित किया।

अध्यक्षीय भाषण करते हुए प्रख्यात मैथिली विद्वान विद्यानंद झा ने कहा कि साहित्यकार को समाज में समुचित सम्मान के साथ ही विभिन्न साहित्यिक संस्थाओं एवं भारत सरकार के द्वारा सम्मान दिया जाना सर्वथा परम आवश्यक एवं श्रेयस्कर है। साहित्य के क्षेत्र में विशिष्ट योगदान करनेवाले सुप्रसिद्ध साहित्यकारों के जन्मशताब्दी समारोह के माध्यम से याद करना, श्रद्धा सुमन समर्पित करना, उनके कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डालना, उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि एवं भावी पीढ़ी के कर्णधार जनमानस के लिए आदर्श प्रेरणा स्रोत हैं।

प्रथम दो सत्र जयनारायण मल्लिक पर केंद्रित थे, जिनकी अध्यक्षता क्रमशः श्री कामदेव झा तथा श्री कमलाकांत झा ने की। डॉ. रवींद्र चौधरी ने 'जयनारायण मल्लिक का जीवनक्रम एवं व्यक्तित्व' शीर्षक आलेख में विस्तार से उनकी रचनाओं का उल्लेख करते हुए उनका महत्त्व प्रतिपादित किया। डॉ. नरेश मोहन झा के आलेख पाठ का विषय था—'मैथिली साहित्य के परिदृश्य में जयनारायण मल्लिक।' श्री झा ने कहा कि जयनारायण मल्लिक एक रोमांटिक कवि माने जाते हैं। मल्लिक जी की रचनाओं में सरसता एवं रोचकता का मिश्रण है एवं उनके गीत ख़ासकर नवगीत के लिए उन्हें याद किया जाता रहेगा, क्योंकि इसमें अनुभूति, सहजता, लयात्मकता एवं भाषा सौंदर्य का विलक्षण समावेश है। द्वितीय सत्र में श्री योगानंद झा ने 'मैथिली साहित्य में जयनारायण मल्लिक का योगदान और उपेक्षा' विषयक अपने आलेख में बताया कि मल्लिक जी पर छायावाद और रहस्यवाद का स्पष्ट असर है। डॉ. खुशीलाल झा ने अपने आलेख में श्री मल्लिक को मैथिली साहित्य के जागरण का सेनानी बताया।

संगोष्ठी के तृतीय और चतुर्थ सत्र वैद्यनाथ मल्लिक विधु पर केंद्रित थे, जिनकी अध्यक्षता क्रमशः डॉ. वीणा ठाकुर और श्री मोहनानंद मिश्र ने की। तृतीय सत्र में श्री आलोक पाठक ने 'वैद्यनाथ मल्लिक विधु का परिचय और साहित्य सेवा' शीर्षक आलेख का पाठ किया। उन्होंने बताया कि *सीतायन* महाकाव्य की रचना कर विधु मैथिली साहित्य में अमर हो गए। साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत इस महाकाव्य में राम की तुलना में सीता के गुणों को सर्वाधिक बताया गया है। बुचरू पासवान ने 'मैथिली रामकाव्य के परिप्रेक्ष्य में *सीतायन*' विषयक आलेख का पाठ किया, जबकि श्री फूलचंद्र झा प्रवीण ने '*सीतायन* की प्रबंधकीय रचना एवं कथा का संघटन' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी के द्वितीय दिन चतुर्थ सत्र में अनमोल झा ने 'लालदास एवं विधु की सीता' शीर्षक आलेख में तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। श्री ताराकांत झा ने अपने आलेख में *सीतायन* की सीता के चारित्रिक वैशिष्ट्य पर प्रकाश डाला। श्री नवीन चौधरी के आलेख का विषय था—'*अंबचरित* और *सीतायन*'। उन्होंने कहा कि ज्योतिरीश्वर से लेकर मनबोध तक लोग रामकथा पर चर्चा नहीं करते थे, अपितु सीता की ही चर्चा अधिक होती थी। चंदा झा और लालदास के रामायण में थोड़ी भिन्नता है। *सीतायन* में गतिशीलता और रोचकता है। यही गुण *अंबचरित* में भी देखने को मिलता है।

संगोष्ठी के पाँचवे एवं छठे सत्र पंडित आनंद झा न्यायाचार्य पर केंद्रित थे, जिनकी अध्यक्षता क्रमशः श्री अशोक अविचल और श्री श्रीपति त्रिपाठी ने की। पंचम सत्र में श्रीमती रेवती मिश्र ने '*प्रबोध चंद्रोदय नाटक* में दार्शनिक और साहित्यक वैशिष्ट्य' शीर्षक आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि आंनद झा कृत मैथिली *प्रबोध चंद्रोदय* दर्शनशास्त्र पर आधारित है। संपूर्ण नाटक में मनुष्य के

विकारों को पात्र के रूप में माना गया है। यह नाटक एक नई दिशा प्रदान करता है। श्री अमलेंदु शेखर पाठक ने आलेख पाठ करते हुए कहा कि आनंद झा न्यायाचार्य एक बड़े दार्शनिक थे। इनका चार्वाक दर्शन प्रसिद्ध है। श्री अशोक झा ने 'आनंद झा की नाट्यकृति' विषयक आलेख प्रस्तुत किया।

षष्ठ सत्र में श्री पंचानन मिश्र ने 'पंडित आनंद झा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया और बताया कि आनंद झा दर्शनशास्त्र के मनीषी विद्वान थे। वे अभिनेता एवं निर्देशक भी थे। सभी भाषाओं को मिलाकर इनकी लगभग 46 कृतियाँ हैं। श्री महानंद ठाकुर ने पंडित आनंद झा की मैथिली कृतियों पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री रामलोचन ठाकुर ने 'संस्कृत विद्वान की शृंखला में आनंद झा का महत्त्व' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया।

समापन सत्र की अध्यक्षता श्री किशोरी कांत मिश्र ने की, जबकि श्री ब्रह्मेंद्र झा ने संपूर्ण संगोष्ठी पर अपना पर्यवेक्षकीय विचार प्रकट किया। समापन भाषण श्री विनोद कुमार ने दिया। अंत में डॉ. वीणा ठाकुर ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'सांप्रदायिकता और मराठी साहित्य' विषयक संगोष्ठी

27-28 दिसंबर 2014, मुंबई

साहित्य अकादेमी ने 27-28 दिसंबर 2014 को मुंबई के अकादेमी सभागार में 'सांप्रदायिकता और मराठी साहित्य' पर एक दो दिवसीय संगोष्ठी का अयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने उद्घाटन सत्र में आगत प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया। प्रसिद्ध विद्वान श्री गोविंद पनसारे ने अपने उद्घाटन भाषण में सांप्रदायिकता का प्रतिरोध करने के विचार के विकास पर जहाँ एक ओर प्रकाश डाला, वहीं दूसरी ओर इसकी जड़ आधुनिक समय से लेकर स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान खंगाली। उन्होंने सांप्रदायिकता से लड़ने के लिए साहित्य की प्रासंगिकता पर बल दिया। श्री राजन गवास ने अपना बीज भाषण देते हुए झूठी पहचान को सांप्रदायिकता के उदय का कारण माना। श्री रंगनाथ पठारे ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए सांप्रदायिकता के कारणों की पहचान के लिए साहित्य की भूमिका पर प्रकाश डाला और कहा कि साहित्य ही इससे संघर्ष कर सकता है। उन्होंने बदलती दुनिया में सांप्रदायिकता के भी चेहरे बदलने पर प्रकाश डाला और कहा कि सांप्रदायिकता के इस बदलते चेहरे की पहचान कराने में साहित्य एक बड़ी भूमिका का निर्वाह कर सकता है।

श्री विनायक तुमराम ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की, जिसमें श्री सीसिलिया कार्वाल्हो, श्री महावीर प्रभाचंद्र शास्त्री और श्री अज़ीम नवाज़ राही ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री अज़ीम नवाज़ राही ने कहा कि आज़ादी के बाद भारत में अल्पसंख्यकों के प्रति सोचने-समझने के ढंग में क्रांतिकारी रूप से बदलाव आया है। अल्पसंख्यकों के प्रति उत्पीड़न का स्वर काफ़ी मुखर हुआ है और उनके साहित्य में असुरक्षा की भावना केंद्र में आई है। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता फ़ादर फ्रांसिस डी. ब्रिटो ने

सर्वश्री राजन गवास, गोविंद पंसारे, रंगनाथ पठारे तथा कृष्णा किंबहुने

की, जिसमें श्री सतीश बड़वे और श्रीमती सुरेखा शाह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री सतीश बड़वे ने स्वतंत्रता के बाद मराठी में लिखे उपन्यासों को सभी प्रकार की सामाजिक बुराइयों का चित्रण करने में समर्थ बताया। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता के बाद लिखे मराठी उपन्यासों में भारत की उपेक्षित, वंचित जातियों और जनजातियों का वास्तविक स्वरूप उभरकर सामने आया है। श्रीमती सुरेखा शाह ने अपने आलेख को दो भागों में बाँटा था। एक में उन्होंने आज़ादी से पूर्व लिखे गए उपन्यासों पर चर्चा की तो वहीं दूसरी ओर आज़ादी के बाद लिखे गए मराठी उपन्यासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज़ादी से पहले के लेखक केवल कुछ जातियों से संबंधित थे, परंतु आज़ादी के बाद कई जातियों, जनजातियों के लेखकों ने भी प्रचुर मात्रा में लेखन आरंभ किया। श्रीमती सुरेखा शाह ने कहा कि इस बदलाव को सराहा भी गया। श्री दिगंबर पाध्ये ने तृतीय सत्र की अध्यक्षता की। इस सत्र में श्री अशोक बाबर, श्री योगीराज बागुल और श्री मेहबूब सैयद ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री अशोक बाबर ने बताया कि भारत ने उन्नीसवीं शताब्दी में पाश्चात्य राष्ट्रवाद के साथ सांप्रदायिकता को पाया। लेकिन इस तथ्य को नकार दिया गया कि पश्चिमी राष्ट्रवाद का जो सिद्धांत है, वह भारतीय संदर्भ में लागू नहीं होता। श्री मेहबूब सैयद ने कहा कि साहित्य को सांप्रदायिक मूल्यों का पालन-पोषण नहीं करना चाहिए। उन्होंने कहा साहित्य को सामाजिक सद्भाव के मूल्यों की स्थापना करनी चाहिए। चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता श्री सतीश बड़वे ने की। इस सत्र में श्री एकनाथ पगार, श्री जी. के. आईनापुरे और श्री कुमार अनिल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री एकनाथ पगार ने कईकादी, कुदमुदे, जोशी, पथरत, कोल्हाटी, गोंधाली, बंजारा, पारधी, मवाची और बेलदार जैसी जातियों और जनजातियों से साहित्य में आनेवाले लेखकों की सराहना की और कहा कि ये लेखक अपनी जातियों और जनजातियों का वर्णन करने में सक्षम हैं। श्री जी. के. आईनापुरे ने मराठी में रचित आत्मकथाओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ये आत्मकथाएँ सिर्फ़ पाठकों के साहित्यिक आस्वाद को ही थोड़ा बदल पाई हैं, उनकी साहित्य के प्रति सोच को नहीं। उन्होंने इस हक़ीक़त पर ज़ोर दिया कि साहित्य की अनुभूति बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। श्री अनिल अवचट ने समापन भाषण दिया। श्री अनिल अवचट ने पिछले कई वर्षों की घटनाओं का उल्लेख करते हुए बताया कि सांप्रदायिकता से मानव का संबंध उसके जन्म से ही है। मानव जाति प्रकृति के बनाए नियमों को रौंदती आई है और उसका संपूर्ण इतिहास ख़ून से लथपथ है। मनुष्य जाति बगैर किसी द्वितीय की सहायता के जीवित नहीं रह सकती। मनुष्य जाति के लिए यह कठिन है कि वह जातियों और प्रजातियों के संकुचित खोल से बाहर निकले। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि साहित्य को इन सभी अमानवीयताओं के ख़िलाफ़ खड़ा होना चाहिए।

'गोलपरिया लोकगीत' पर परिसंवाद

28 दिसंबर 2014, गुवाहाटी

साहित्य अकादेमी ने सादोउ असोम लेखिका समारोह समिति, तेजपुर और कामरूप महानगर ज़िला परिषद्, गुवाहाटी के सहयोग से 28 दिसंबर 2014 को गुवाहाटी

स्वागत व्याख्यान देते हुए श्री अतनु भट्टाचार्य

के कॉटन कॉलेज में 'गोलपरिया लोकगीत' पर एक परिसंवाद का आयोजन किया।

उद्घाटन सत्र में श्री अतनु भट्टाचार्य ने आगत प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया। श्रीमती सुख बरुआ ने सत्र की अध्यक्षता की। श्री फणींद्र कुमार देवचौधुरी ने उद्घाटन भाषण प्रस्तुत किया, जबकि श्री नवीन चंद्र शर्मा ने बीज भाषण दिया। दोनों वक्ताओं ने अनेक प्रकार के गोलपरिया लोकगीतों के बारे में चर्चा की। प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री गंगा शंकर पांडे ने की, जिसमें श्री अमिताभ रंजन कानू, श्रीमती प्रतिमा नेत्री और श्री उपेन राभा हकशाम ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सभी वक्ताओं ने गोलपरिया लोकगीतों के भाव, धुन और उनकी प्रवृत्ति तथा लोकसंगीत की भाषा और उसके मीटर पर प्रकाश डाला। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्रीमती विनीता दत्त ने की, जिसमें श्रीमती गीता सरकार और अनिल सइकीया ने अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए ग्राम्य जीवन का वर्णन और स्थानीयता की उपस्थिति पर प्रभाव डाला। श्री सत्यकाम बरठाकुर ने समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए ऐसे लोकसंगीत की समृद्धि पर प्रकाश डाला तथा उसके संरक्षण तथा प्रोत्साहन की आवश्यकता पर बल दिया। श्रीमती गीता दास ने समापन भाषण प्रस्तुत किया।

'मध्यकालीन भक्ति साहित्य' पर संगोष्ठी

2-3 जनवरी 2015, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी द्वारा अकादेमी की हीरक जयंती समारोहों के अंतर्गत 'मध्यकालीन भक्ति साहित्य' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 2-3 जनवरी 2015 को कलिंग सभाकक्ष, भुवनेश्वर में किया गया।

आरंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए मध्यकालीन भारत में भक्ति आंदोलन की चर्चा की। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के आंदोलनों ने सामाजिक आलोचना के आधिपत्य का मुक़ाबला करने के उद्देश्य से एक उपकरण के रूप में काम किया और उसी समय में दैनिक उत्पीड़न से परे जाने के लिए अनगिनत तरीक़े पेश किए।

अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौरहरिदास ने अपने आरंभिक वक्तव्य में उन सामाजिक परिवर्तनों की बात की, जो पूरे देश में मध्यकालीन भक्ति आंदोलन के प्रभाव से आए और उन्होंने समाज के पीड़ित एवं ग़रीबों के उत्थान में एक सकारात्मक भूमिका निभाई। अकादेमी के महत्तर सदस्य श्री रमाकांत रथ ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में मध्यकालीन भक्ति आंदोलन की भारत के पूर्वी भाग के बारे में बात की। अपने बीज वक्तव्य में श्री प्रदीप ज्योति महंत ने पूर्व और उत्तर-पूर्व के साहित्य और जीवन के मानकों के उत्थान में निभाई गई भक्ति आंदोलन की भूमिका के बारे में बात की। संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित ओड़िशा सरकार के माननीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री श्री अशोक चंद्र पंडा ने भुवनेश्वर में इस महत्त्वपूर्ण संगोष्ठी के आयोजन पर अकादेमी को बधाई दी। ओड़िशा साहित्य अकादमी के अध्यक्ष श्री सतकड़ी होता ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में ओड़िशा के मध्यकालीन भक्ति साहित्य के बारे में बात की। ओड़िशा सरकार के संस्कृति एवं पर्यटन सचिव अरविंद के. पाधी, अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल की संयोजिका डॉ. वीणा ठाकुर इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। सत्रांत में ओड़िशा साहित्य अकादमी के सचिव श्री विष्णु प्रसाद मिश्र ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र 'मध्यकालीन बाङ्ला और मैथिली भक्ति साहित्य का संगम' विषय पर आधारित था और सत्र की अध्यक्षता डॉ. वीणा ठाकुर ने की। इस सत्र में सुश्री अंजना सेन (बाङ्ला) तथा श्री अमलेंदु शेखर पाठक

संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र

(मैथिली) ने क्रमशः 'मध्यकालीन बाङ्ला भक्ति साहित्य पर संत कवि विद्यापति का प्रभाव' तथा 'मध्यकालीन बाङ्ला संत कवियों का मध्यकालीन मैथिली संत साहित्य पर प्रभाव' शीर्षक अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र का विषय था 'ओड़िशा के मध्यकालीन भक्ति आंदोलनों के सामाजिक निहितार्थ', जिसकी अध्यक्षता श्री हरेकृष्ण सत्पथी ने की। इस सत्र में श्री जतिन नायक, श्री कालिदास मिश्र एवं श्री सुरेंद्र कुमार मिश्र ने मध्यकालीन सरलादास के *सरला महाभारत* और ओड़िशा के परवर्ती संत कवियों के कृतित्व और उनकी सामाजिक भूमिका पर ओड़िया भक्ति साहित्य के प्रभाव पर केंद्रित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तृतीय सत्र 'शंकरदेव और पूर्वोत्तर मध्यकालीन भक्ति साहित्य' विषय पर आधारित था, जिसकी अध्यक्षता श्री लक्ष्मीनंदन बोरा ने की। इस सत्र में श्री कनकचंद्र सहरिया (असमिया) और श्रीमती सी. यामिनी देवी (मणिपुरी) ने उत्तर-पूर्व में वैष्णव भक्ति आंदोलन के उत्थान एवं प्रसार में शंकरदेव का प्रभाव और वहाँ की सामाजिक पुनर्रचना में उनकी भूमिका पर केंद्रित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

चतुर्थ सत्र का विषय था 'अतिवादी जगन्नाथ के *ओड़िया भागवत* का सामाजिक सांस्कृतिक प्रभाव'। इस सत्र की अध्यक्षता श्री राजकिशोर मिश्र ने की, जिसमें श्री ब्रजकिशोर स्वेन, श्री असीत महांति एवं श्री सुनील कुमार रथ ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। पंचम सत्र 'भारतीय साहित्य में विद्यापति, जयदेव, सरलादास, शंकरदेव एवं चैतन्यदेव का प्रभाव' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता प्रो. एच. बिहारी सिंह ने की। इस सत्र में श्री संजीव नाथ (असमिया), श्री निर्मलकांति भट्टाचार्य (बाङ्ला), श्री बुद्धिनाथ मिश्र (मैथिली), श्री एन. खगेंद्र सिंह (मणिपुरी) एवं श्री बी.एन. पटनायक (ओड़िया) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

अपने समापन वक्तव्य में डॉ. सीताकांत महापात्र ने हिंदू राज्यों के अधिकारों के पतन के समय पूरे भारत में भक्ति आंदोलन की भूमिका के बारे में बात की। इस सत्र की अध्यक्षता श्री गोपालकृष्ण रथ ने की तथा उन्हीं के द्वारा धन्यवाद ज्ञापन भी किया गया।

यशवंत चित्तल पर परिसंवाद

4 जनवरी 2015, मुंबई

साहित्य अकादेमी द्वारा कन्नड विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में प्रसिद्ध कन्नड कथाकार यशवंत चित्तल पर एक परिसंवाद का आयोजन 4 जनवरी 2015 को मैसूर एसोसिएशन, मुंबई में किया गया।

आरंभ में अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए महान कन्नड विचारक, लेखक, यशवंत चित्तल का संक्षिप्त परिचय दिया। उद्घाटन वक्तव्य कन्नड लेखक एवं आलोचक डॉ. एच.एस. राघवेंद्र राव ने दिया। उन्होंने अपने वक्तव्य में आधुनिक कन्नड साहित्य में कहानी और उपन्यास विधाओं के विकास में चित्तल के योगदान को रेखांकित किया। डॉ. एम.एस. आशा देवी ने विस्तार से चित्तल की रचनाओं में नारीवादी पात्रों और उनकी विशिष्टता की व्याख्या की। अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल की सदस्या श्रीमती पी. चंद्रिका ने चित्तल के कथा की तुलना अद्वितीय अंतर्राष्ट्रीय फ़िल्मों से की, और कहा कि दोनों ही सहज रूप से रचनात्मक एवं जीवंत हैं।

परामर्श मंडल के सदस्य एवं विभागाध्यक्ष, कन्नड विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय डॉ. जी. एन. उपाध्याय ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए अपने वक्तव्य में मुंबई में चित्तल के साथ बिताए क्षणों को याद करते हुए उनके लेखन के बारे में विस्तार से चर्चा की।

डॉ. रघुनाथ, डॉ. सुरेश नायक, डॉ. पूर्णिमा शेट्टी, श्रीमती कमला, डॉ. विश्वनाथ कारनाड, श्री श्रीनिवास जोकट्टे, डॉ. व्यासराव निंजूर और श्री ओमदास कन्नांगर ने भी चर्चा में भाग लिया।

कार्यक्रम के अंत में मैसूर एसोसिएशन के श्री नारायण नाविलेकर ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया। इस परिसंवाद में लेखक विद्वान, छात्र तथा मीडिया के लोग भारी संख्या में उपस्थित थे।

विजयदान देथा, अन्ना राम सुदामा, यादवेंद्र शर्मा चंद्र और लक्ष्मी कुमारी चूड़ावत पर परिसंवाद

4 जनवरी 2015, बीकानेर, राजस्थान

साहित्य अकादेमी ने मुक्ति संस्थान के सहयोग से राजस्थानी के चार उपन्यासकारों विजयदान देथा, लक्ष्मी कुमारी चूड़ावत, अन्ना राम सुदामा और यादवेंद्र शर्मा चंद्र पर दिन भर का एक परिसंवाद आयोजित किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता राजस्थानी परामर्श मंडल के संयोजक और प्रसिद्ध राजस्थानी नाटककार श्री अर्जुनदेव चारण ने की। मुख्य अतिथि के तौर पर इस कार्यक्रम में श्री भंवरलाल भंवर उपस्थित थे। उन्होंने इस परिसंवाद को आयोजित करने के लिए साहित्य अकादेमी की प्रशंसा की। साहित्य अकादेमी से उन्होंने अनुरोध किया कि वह इन महान् लेखकों की अप्रकाशित रचनाओं को सामने लाए। श्री अर्जुनदेव चारण ने कहा कि कोई भी व्यक्ति यदि हमारी संस्कृति और इतिहास को जानना चाहता है तो उसे इन लेखकों की रचनाओं को अवश्य पढ़ना चाहिए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री कैलाश कबीर ने की, जिसमें सर्वश्री मालचंद तिवाड़ी, बुलाकी शर्मा और राजेंद्र जोशी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र का संचालन श्री आनंद वी. आचार्य ने किया।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता श्री मेघराज शर्मा ने की, जिसमें सर्वश्री नीरज दईया, गजे सिंह राजपुरोहित और भरत ओला ने अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए अन्ना राम सुदामा और लक्ष्मी कुमारी चूड़ावत के साहित्य में दिए योगदान पर प्रकाश डाला। समापन सत्र की अध्यक्षता मधु आचार्य 'आशावादी' ने की। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि ख्याति प्राप्त लेखक श्री मालचंद तिवाड़ी उपस्थित थे।

'कोंकणी युवा साहित्य : परिचय, मूल्यांकन एवं भविष्य की यात्रा' विषयक संगोष्ठी

10 जनवरी 2015, गोवा

साहित्य अकादेमी द्वारा फ़ादर एग्नेल कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एवं कॉमर्स के संयुक्त तत्त्वावधान में 'कोंकणी युवा साहित्य : परिचय, मूल्यांकन एवं भविष्य की यात्रा' विषयक संगोष्ठी का आयोजन 10 जनवरी 2015 को कॉलेज परिसर में किया गया। आरंभ में अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. कृष्णा किंबहुने ने लेखक प्रतिभागियों एवं अतिथियों का औपचारिक स्वागत किया। कॉलेज के प्राचार्य फ़ादर फ्रेड्रिक रोड्रिग्स ने अपने आरंभिक वक्तव्य में अकादेमी द्वारा कॉलेज परिसर में इस आयोजन के लिए अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि साहित्य अकादेमी के सहयोग से कॉलेज में इस तरह की महत्त्वपूर्ण संगोष्ठी के आयोजन से वे आनंदित हुए।

प्रख्यात कोंकणी कवि श्री विष्णु सूर्या वाघ ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि यह आवश्यक है कि मूल्यांकन एवं पुनर्मूल्यांकन किया जाए कि साहित्य की वर्तमान स्थिति क्या है। क्या किसी भी वास्तविक आविष्कारिक, प्रयोगात्मक रचनात्मक लेखन को भले ही लेखक की उम्र कितनी हो, युवा लेखन कहा जा सकता है। अतः वास्तविक पाठक को हमेशा और बाद में यह जानने को भी उत्सुक होना चाहिए कि साहित्य में असली क्या है। अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. तानाजी हलर्णकर ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि हमें यह देखने की ज़रूरत है कि वर्तमान पीढ़ी कोंकणी साहित्य को किस तरह देख और परख रही है, और अपने लेखन में उसे किस तरह चित्रित कर रही है। सत्रांत में फ़ादर एग्नेल कॉलेज के सामाजिकी विभाग की विभागाध्यक्ष सुश्री बिउला पारीख ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री शाम वारेनकर ने की तथा 'कोंकणी युवा साहित्य : कल आज और कल' विषय पर श्री प्रकाश पर्णिकर, सुश्री अनवेश सिंगबल एवं फॉदर फ्रांसिस रोड्रिग्स ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। तीनों आलेखों पर खुलकर बात हुई।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री माधव बोरकार ने की तथा इस सत्र में 'कोंकणी युवा साहित्य का मूल्यांकन : अनिवार्यता एवं वर्तमान परिदृश्य' विषय पर श्री मुकेश ताली, सुश्री स्नेहा वारेनकर एवं श्रीमती हेमा नायक ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। तीनों आलेखों पर बाद में बातचीत हुई, यद्यपि युवा लेखकों द्वारा कई अहम मुद्दे छोड़ दिए गए थे।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता श्रीमती राजश्री सैल ने की तथा 'युवा साहित्यकारों की धारणाएँ' विषय पर युवा लेखकों श्री नमन सावंत धावसकर, श्री नरेश नायक एवं सुश्री जोफा गोंजवालिस ने अपने लेखन अनुभवों को साझा किया।

चतुर्थ सत्र युवा रचनाकारों के रचना पाठ पर आधारित था, जिसकी अध्यक्षता सुश्री क्यूनी वेगास ने की। इस सत्र में सुश्री अंतरा भिडे ने निबंध, सुश्री स्मिता प्रभु ने कहानी तथा श्री सूरज नागेकर, श्री जयसन सिक्वेरा एवं सुश्री पूर्वा गुडे ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

कोंकणी परामर्श मंडल के श्री जॉन मेंडोंसा ने समापन वक्तव्य दिया एवं फॉदर मोसिन्हो अतेड ने समापन सत्र की अध्यक्षता की।

'पश्चिमी भारतीय भाषाओं में महिला लेखन' पर परिसंवाद

11 जनवरी 2015, पणजी

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा इंस्टीट्यूट मनेज़ेज ब्रगेंजा, पणजी के संयुक्त तत्त्वावधान में 'पश्चिमी भारतीय भाषाओं में महिला लेखन' विषयक परिसंवाद

सुश्री अरुणा ढेरे, उषा उपाध्याय, श्री पुण्डलिक नाइक,
श्री हरीशचंद्र नागवेंकर तथा सुश्री विम्मी सदारंगाणी

का आयोजन 11 जनवरी 2015 को पणजी में किया गया।

आरंभ में अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. कृष्णा किंबहुने ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। परिसंवाद की मुख्य अतिथि श्रीमती जयश्री रॉय हारमालकर ने कहा कि हमारे समाज की वजह से ही महिलाओं ने गुणात्मक लेखन में क़दम रखा था। उनका यह भी मत था कि महिला लेखन में हमारे समाज का दलित पक्ष भी परिलक्षित होता है। अकादेमी के कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. तानाजी हलर्णकर ने सत्र की अध्यक्षता की तथा कहा कि महिला लेखिकाओं की संख्या में वृद्धि स्वागत योग्य क़दम है। उन्होंने आगे कहा कि महिलाओं द्वारा लिखा गया अद्यतन साहित्य उनका उल्लेखनीय योगदान है।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्रीमती किरण बुडकुले ने की तथा 'महिला लेखन में महिलाएँ' विषय पर गुजराती की सुश्री इंदु जोशी, कोंकणी की सुश्री सोनिया सिरसाट, मराठी की श्रीमती अनुपमा उजगरे एवं सिंधी की सुश्री मीना रूपचंदाणी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री पुण्डलिक नाइक ने की तथा 'महिला लेखन में पुरुष' विषय पर सुश्री उषा उपाध्याय (गुजराती), श्री हरीशचंद्र नागवेंकर (कोंकणी), सुश्री अरुणा ढेरे (मराठी) एवं सुश्री विम्मी सदारंगाणी (सिंधी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र की अध्यक्षता श्री उदय भेंब्रे ने की तथा 'महिला लेखन में समाज' विषय पर गुजराती की सुश्री पारुल देसाई, कोंकणी की प्रियदर्शिनी ताडकोदकर, मराठी की सुश्री शोभा नाइक एवं सिंधी की श्रीमती माया राही ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

राष्ट्रीय नाट्य उत्सव

16-21 जनवरी 2015 बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी द्वारा अपने हीरक जयंती समारोहों के अंतर्गत छह दिवसीय राष्ट्रीय नाट्य उत्सव का आयोजन 16-21 जनवरी 2015 को गुरुनानक भवन, बेंगळूरु में किया गया।

नाट्योत्सव के उद्घाटन का दृश्य

उद्घाटन सत्र में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए साहित्य एवं रंगमंच के अंतर्संबंधों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि अकादेमी नाटकों के विकास के लिए भी कार्य कर रही है, चूँकि यह भी साहित्य की ही एक विधा है। साहित्य अकादेमी द्वारा भरत के *नाट्शास्त्र* से लेकर आधुनिक काल के रवींद्रनाथ ठाकुर आदि नाट्यकारों के नाटकों का भी प्रकाशन किया गया है।

अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. नरहल्ली बालसुब्रमण्य ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि थिएटर की अवधारणा एक जनकला के रूप में है और हाल के दिनों में यह लुप्तप्राय है। उन्होंने आगे कहा कि इस प्रकार के थिएटर उत्सव थिएटर विशेषज्ञों एवं आलोचकों को अवसर प्रदान करेगा।

प्रसिद्ध रंगकमी एवं विद्वान डॉ. भानु भारती ने थिएटर उत्सव का उद्घाटन करते हुए कहा कि साहित्य एवं प्रदर्शन कला मौखिक परपंरा से विकसित हुए हैं। बाद में इन दोनों को अलग मान लिया गया।

अकादेमी के उपाध्यक्ष तथा सत्र के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि थिएटर के क्षेत्र में कई अभिनव प्रयोग किए जा रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि यह बड़े दुख की बात है कि सूचना के इस युग में उन अभिनव प्रयोगों को कलाकारों के बीच साझा नहीं किया जा रहा है। श्री कंबार ने आशा व्यक्त की कि इस उत्सव से थिएटर के लोग, समीक्षक एवं कलाकार लाभान्वित होंगे।

राष्ट्रीय थिएटर उत्सव के दौरान नए नाटकों 'तमाशा न हुआ (हिंदी, भानु भारती), 'जमलीला (राजस्थानी, अर्जुनदेव चारण), मर्णायक (कन्नड, एच.एस. शिवप्रकाश), मोहे पिया (हिंदी, वामन केंद्रे), करीमाई (कन्नड, चंद्रशेखर कंबार) एवं जंगतुर पंगतुर (असमिया लोककथा पर आधारित) का मंचन किया गया। इस अवसर पर लब्धप्रतिष्ठ निर्देशक श्री भानुभारती, श्री अर्जुनदेव चारण, श्री हुलुगप्पा कट्टीमणि, प्रो. वामन केंद्रे, श्री लोकेंद्र त्रिवेदी एवं सुश्री रायंती राभा मंच पर उपस्थित थे।

सतरामदास सोभा सिंह जुरियासिंहानी 'सयाल' जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

18 जनवरी 2015, अहमदाबाद

साहित्य अकादेमी द्वारा सिंधु सेवा समाज, अहमदाबाद के संयुक्त तत्त्वावधान में सतरामदास सोभा सिंह जुरिया सिंहानी 'सयाल' की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन 18 जनवरी 2015 को सिंधु भवन, अहमदाबाद में किया गया।

अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेमप्रकाश ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए प्रतिभागियों का परिचय कराया। अपने बीज वक्तव्य में श्री जेठो लालवाणी ने सयाल को एक शिक्षक, कवि एवं लेखक के रूप में याद करते हुए उनके लेखन की प्रशंसा की और कहा कि सयाल की सिंधी कविताओं एवं शिक्षा में उनके योगदान को लंबे समय तक याद किया जाएगा। सत्रांत में सिंधु सेवा समाज के निदेशक श्री अमर दौलताणी ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा कि उन्हें सयाल के छात्र होने एवं उनकी कविताओं का एक सुधी पाठक होने का गर्व है।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री हूंदराज बलवाणी ने की तथा श्री जगदीश शहदादपुरी ने 'सयाल का जीवन एवं साहित्य' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि विभाजन के बाद सयाल के जीवन में एक नाटकीय मोड़ आया, लेकिन जल्द ही वे उन बाधाओं से निकल आए। श्री वासदेव मोही ने अपने आलेख में कोश निर्माण के क्षेत्र में सयाल के विलक्षण योगदान की चर्चा की। श्री भगवान निर्दोष ने अपने आलेख में सयाल द्वारा *महाभारत, रामायण* की कहानियों की काव्यात्मक पुनर्रचना पर अपना विमर्श प्रस्तुत किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री वासदेव मोही ने की। उन्होंने कहा कि सयाल का एक शिक्षक और कवि का कैरियर एक प्रकाश, पुंज की तरह था। इस सत्र में श्री हूंदराज बलवाणी, सुश्री मीना शहदादपुरी एवं श्री जयराम चिमनाणी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र में श्री चंद्रकांत सयाल, श्री कन्हैयालाल गोपलाणी एवं श्री बलराज जुमानी ने सयाल के साथ बिताये क्षणों को साझा किया। संगोष्ठी का समापन परामर्श मंडल के संयोजक प्रेम प्रकाश के समापन वक्तव्य से हुआ।

'समकालीन भारतीय नाटक' पर संगोष्ठी

19-20 जनवरी 2015, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी द्वारा अपनी हीरक जयंती समारोहों के अंतर्गत 'समकालीन भारतीय नाटक' विषयक संगोष्ठी का आयोजन 19-20 जनवरी 2015 को गुरुनानक भवन, बेंगळूरु में किया गया।

प्रारंभ में अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए साहित्य एवं थिएटर के संबंधों को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि अकादेमी सदैव नाटकों की प्रोन्नति के लिए प्रयत्नशील रहती है, चूँकि यह भी साहित्य की एक विधा है।

लब्धप्रतिष्ठ कन्नड लेखक एवं नाटककार डॉ. गिरीश कार्नाड ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में समकालीन की प्रवृत्ति एवं इसकी संबद्धता के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि उनके शुरू के दिनों में समकालीन पर भारतीय रंगमंच के सुनहरे युग के दिग्गजों का बोलबाला था। उसकी तुलना में वर्तमान के समकालीन नाटककारों द्वारा नाटक की गिनती एवं गुणवत्ता में केवल गिरावट का प्रदर्शन किया गया है।

प्रख्यात कला एवं नाट्य आलोचक श्री माणिक बंद्योपाध्याय ने अपने बीज वक्तव्य में पाठ, साहित्य एवं रंगमंच के संबंधों के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि नाटकों का मूल जीवन ग्रामीण लोक या शहरों से हो सकता है, तथापि यह अभी भी एक पाठ है, साहित्य को दर्शाते साहित्य का एक रूप और विश्लेषात्मक उपकरण को प्रदर्शित करती है।

अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में साहित्य के पूरक प्रकृति के बारे में संक्षेप में बात की। सत्रांत में अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. नरहल्ली बालसुब्रमण्य ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी का प्रथम सत्र 'मंच के लिए लेखन' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता प्रो. नंद किशोर आचार्य ने की। सत्र में रंगमंच के चार प्रतिष्ठित विद्वानों सर्वश्री पुंडलिक नायक, अर्जुनदेव चारण, देवाशीष मजुमदार एवं दत्ता भगत ने मंच के लिए लेखन के विभिन्न परिप्रेक्ष्य और मंच तथा नाटकों के लेखन की समानता पर प्रकाश डालते हुए अपने आलेख प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री भानु भारती ने की, जिसका विषय था 'मंच की संभावनाओं की तलाश'। इस सत्र में डॉ. नीलम मानसिंह, प्रो. के. एस. राजेंद्रन, श्री चंद्रदासन एवं प्रो. के. वी. अक्षरा ने मंच प्रबंधन के क्षेत्र में नए, समकालीन मुद्दों तथा प्रस्तुति एवं प्रबंधन तकनीक के क्षेत्र में नवाचारों पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

अभिनेताओं के विचार पर केंद्रित तृतीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. मोहन अगाशे ने की। इस सत्र में श्री वाई.

उद्घाटन व्याख्यान देते हुए श्री गिरीश कार्नाड

सदानंद सिंह एवं सुश्री एवरी शौरी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री अगाशे ने चर्चित उक्ति 'जीवन एक नाटक है' से विमर्श की शुरुआत करते हुए उसमें अभिनेताओं की भूमिका की बात की। श्री सदानंद सिंह ने 'समकालीन भारतीय माइम के निर्माण में मणिपुरी पारपंरिक कला की भूमिका' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री सिंह ने अभिव्यक्ति के एक माध्यम के रूप में शरीर के उपयोग पर सविस्तार चर्चा की। उन्होंने साथ में वीडियो भी प्रस्तुत किया। सुश्री एवेरी शौरी ने अभिनय के रूप में अभिव्यक्ति के बारे में बात करते हुए बताया कि शरीर की भाव-भंगिमा से पाठ, साहित्य या नाटक को बिना ध्वनि के किस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है।

चतुर्थ सत्र 'नाटक को ऐतिहासिक एवं राजनीतिक बनाने का मतलब' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता डॉ. लोकेंद्र अरंबम ने की। इस सत्र में श्री टी.पी. अशोका, श्री रोजिओ उषम एवं श्री ब्रह्म प्रकाश ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री अशोका का आलेख उत्तर औपनिवेशिक युग में कन्नड रंगमंच और नाटक के परिदृश्य पर केंद्रित था। श्री उषम ने टिप्पणी की कि भारत एवं विदेशों में अभ्यास द्वारा थिएटर की धारणा का सिंहावलोकन तथा हर घटना या कार्रवाई को अभिनय या प्रदर्शन के क्षेत्र में लाया जा सकता है। श्री ब्रह्म प्रकाश ने मणिपुरी थिएटर में नारीवादी दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित किया तथा उत्तर औपनिवेशिक मणिपुरी थिएटर में नाटकों के संस्थानीकरण पर भी प्रकाश डाला।

पंचम सत्र की अध्यक्षता प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी ने की, जिसमें श्री के.जी. पॉलोज, श्री निर्मल सेलवामोनी, श्री आर.एस. नंदकुमार तथा श्री कारमेगम ने अपने आलेख 'अतीत की प्रस्तुति : सिद्धांत एवं व्यवहार' विषय के विभिन्न पहलुओं पर प्रस्तुत किए। श्री त्रिपाठी ने संस्कृत रंगमंच पर बात की। श्री पॉलोज का आलेख रस पर केंद्रित था। श्री सेल्वामोनी ने 'तोलक्कपियम में नाटकों के बीज की तलाश, विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री नंदकुमार ने नाटकीय/संगीतमय पाठ की आलोचनात्मक व्याख्या प्रस्तुत की।

षष्ठ सत्र का विषय था 'नाटक की भाषा'। इस सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात कला एवं नाट्य आलोचक श्री सदानंद मेनन ने की। सत्र में सुश्री उर्मिमाला सरकार, सुश्री अंजना पुरी, श्री दिलीप कुमार बसु एवं श्री कुमारन वलवन ने क्रमशः नृत्य एवं नृत्यकला, संगीत, कविता तथा रंगमंच तकनीक विषय पर केंद्रित अपने आलेख प्रस्तुत किए।

अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए अपने वक्तव्य में कहा कि समय बीतने के साथ भारतीय नाटक एवं रंगमंच मूल्यांकन की पाश्चात्य तकनीक, पाश्चात्य ढंग और अभिनय एवं प्रस्तुति में पाश्चात्य शैली अपना रहे हैं। इस सत्र में प्रख्यात कन्नड कवि एवं नाट्यकार प्रो. एच. एस. शिव प्रकाश ने 'नाटक की प्रस्तुति और रंगमंच' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

'असमिया भाषा में रचनात्मक एवं अखबारी लेखन का तुलनात्मक अध्ययन और असम की मीडिया' विषयक परिसंवाद

20 जनवरी 2015, गुवाहाटी

साहित्य अकादेमी द्वारा गुवाहाटी विश्वविद्यालय के संचार एवं पत्रकारिता विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में 'असमिया भाषा में रचनात्मक एवं अखबारी लेखन का तुलनात्मक अध्ययन और असम की मीडिया' विषयक एक परिसंवाद का आयोजन विश्वविद्यालय सभागार में किया गया।

अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. कमालुद्दीन अहमद ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए परिसंवाद के विषय की उपयोगिता के बारे में बताया। परिसंवाद के मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए विश्वविद्यालय के रेक्टर प्रो. हरिप्रसाद शर्मा ने अपने वक्तव्य में महान पत्रकारों एवं रचनात्मक लेखकों

को संदर्भित किया। उन्होंने खुशवंत सिंह, अटलबिहारी बाजपेयी, वीरेंद्र कुमार भट्टाचार्य, चंद्र प्रसाद सइकीया, राधिका मोहन भगवती, मनोज गोस्वामी, अनिरुद्ध शर्मा पुजारी, सतीश चंद्र काकती आदि नामों का उल्लेख किया। श्री शर्मा ने रचनात्मक लेखन की नई प्रवृत्तियों एवं इसकी महत्ता के बारे में भी बात की।

अपने बीज वक्तव्य में डॉ. रमेश पाठक ने आधुनिक असमिया साहित्य की स्थिति के बारे में चर्चा की। उन्होंने यह भी कहा कि किस प्रकार *अरुणोदय* एवं उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में अन्य समाचारपत्रों ने पत्रकारिता के लिए बुनियाद उपलब्ध कराई। डॉ. पाठक ने असमिया समाचारपत्रों में भाषा के ग़लत उपयोग को भी रेखांकित किया। उनकी राय में पत्रकारिता लेखन के लिए सरल एवं सुगम भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए। गुवाहाटी विश्वविद्यालय के आधुनिक भाषा विज्ञान के प्रोफेसर तथा प्रतिष्ठित समाचार पत्रिका के संपादक श्री दिलीप बोरा ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की। उन्होंने पत्रकारिता लेखन की विभिन्न समस्याओं पर अपने विचार प्रकट किए। डॉ. बोरा ने असमिया मीडिया के लिए और लेखक उत्पन्न करने पर ज़ोर दिया।

गुवाहाटी विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी विभाग के प्रो. विभाष चौधुरी ने कुछ विशिष्ट शब्दों के उपयोग और साथ ही प्रायः असम के अंग्रेज़ी समाचारपत्रों में होनेवाली त्रुटियों को स्पष्ट किया। डॉ. चौधुरी ने असम के समाचार पत्रों में भाषा के समुचित उपयोग के महत्त्व पर बल दिया और असम के समाचारपत्रों में त्रुटियों पर संबंधित जनता द्वारा आवाज़ उठाने के लिए भी कहा।

प्रथम तकनीकी सत्र के द्वितीय वक्ता वरिष्ठ पत्रकार नवा ठकुरिया थे। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि पत्रकारिता में किसी विद्वत भाषा की ज़रूरत नहीं होती और कहा कि पत्रकारिता की भाषा साहित्यिक भाषा से बिलकुल अलग होनी चाहिए। उन्होंने यह भी पत्रकारिता की भाषा संक्षिप्तता और सादगी की भाषा होनी चाहिए।

प्रथम सत्र के अंतिम वक्ता श्री अभिजीत बोरा थे। उन्होंने असम के विभिन्न मीडिया घरानों द्वारा पत्रकारिता की भाषा में होनेवाली त्रुटियों का उल्लेख किया। उन्होंने वहाँ उपस्थित छात्रों को कुछ अनमोल सुझाव भी दिये।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता गुवाहाटी विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. उमेश डेका ने की। इस सत्र के प्रथम वक्ता *इंडियन एक्सप्रेस* के प्रमुख संवाददाता श्री समुद्रगुप्त कश्यप थे। उन्होंने किसी प्रकार के लेखन में सर्वप्रथम सूचनाओं के एकत्र करने पर ज़ोर दिया, चाहे वह रचनात्मक लेखन हो या पत्रकारिता का लेखन। उन्होंने रचनात्मक लेखन की अपेक्षा पत्रकारिता लेखन में वास्तविकता की ज़रूरत पर बल दिया। सत्र के द्वितीय वक्ता असमिया विभाग के डॉ. प्रफुल्ल कुमार नाथ थे, जिन्होंने वहाँ उपस्थित छात्रों को रचनात्मक लेखन के साथ ही पत्रकारिता लेखन के संदर्भ में कुछ दिशा निर्देश दिए। उन्होंने असमिया में पत्रकारिता लेखन एवं रचनात्मक लेखन का तुलनात्मक विश्लेषण भी प्रस्तुत किया।

प्रस्तुत आलेखों से यह बात स्पष्ट हुई कि वर्तमान में असमिया भाषा की पत्रकारिता में जिस भाषा का उपयोग किया जा रहा है, उसे शोभनीय नहीं कहा जा सकता तथा पत्रकारों को इस पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। यद्यपि पत्रकारिता की भाषा साहित्य की भाषा नहीं होती, फिर भी भाषा की अपनी एक मर्यादा होती है और उस मर्यादा का निर्वाह करना आवश्यक होता है।

प्रो. उमेश डेका ने समापन वक्तव्य दिया तथा कार्यक्रम के अंत में संचार एवं पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष प्रो. चंदन कुमार गोस्वामी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

हेम बरुआ जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

22 जनवरी 2015, शिवसागर, असम

साहित्य अकादेमी द्वारा शिवसागर कॉमर्स कॉलेज के सहयोग से हेम बरुआ की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर 22 जनवरी 2015 को कॉलेज प्रांगण में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन सत्र

आरंभ में श्री पंकज ज्योति हज़ारिका ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कॉलेज के प्राचार्य के प्रति इस संगोष्ठी के आयोजन के लिए आभार व्यक्त किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. सौमार ज्योति महंत ने की। उन्होंने हेम बरुआ को कवि, लेखक, राजनीतिज्ञ एवं एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में याद किया।

उद्घाटन वक्तव्य श्री इमरान शाह ने दिया। अपने वक्तव्य में उन्होंने बचपन के उन दिनों को याद किया, जो उन्होंने हेम बरुआ के साथ बिताए थे। श्री शाह ने आगे कहा कि हेम बरुआ के समस्त लेखन में उन्हें उनका यात्रावृत्तांत बहुत पसंद है।

अपने बीज वक्तव्य में प्रो. करबी डेका हज़ारिका ने कहा कि हेम बरुआ असमिया साहित्य एवं राजनीति के एक चमकते सितारे हैं। उन्होंने उस समय को याद किया, जब लेखकों की क़लम रूमानियत से लबरेज़ थी, हेम बरुआ ने अच्छाई एवं प्रेम के रूमानी मानदंडों को रद्द किया। उन्होंने कविता के नए मानदंड विकसित किए, जिनका संबंध जीवन की वास्तविकता से हो। उनकी कविता लोगों के जीवन को दर्शाती है, जो जीने के लिए मरे। श्रीमती निरुपमा महंत के अनुसार हेम बरुआ बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे, जिनकी उपस्थिति समाज के हर हिस्से में महसूस की जाती थी। सत्रांत में श्रीमती लक्ष्मी दत्त ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र का विषय था 'हेम बरुआ और उनका साहित्य', जिसकी अध्यक्षता श्री बसंत गोस्वामी ने की। श्री गोस्वामी ने हेम बरुआ को याद करते हुए उनके यात्रावृत्तांत को अनुपम कृति बताया। श्री अजीत भराली ने हेम बरुआ के विभिन्न युगों की कविताओं के संदर्भ में बात करते हुए कहा कि वे एक ऐसे कवि थे, जिनका सरोकार सामंती समाज से था। बरुआ की कविताओं की आलोचना कई अन्य कवियों ने भी की है।

सत्र के दूसरे वक्ता डॉ. ज्योतिप्रसाद सइकीया ने कहा कि आधुनिक साहित्य में यथार्थवाद एवं रोमांस हेम बरुआ के लेखन के आधार हैं। एक कवि एवं लेखक के अतिरिक्त वे लोक साहित्य के एक आलोचक भी थे। उन्होंने आगे कहा कि समाज के परिवर्तन का प्रभाव साहित्य के परिवर्तन पर भी होता है, जिसे हम हेम बरुआ की रचनाओं में देख सकते हैं।

डॉ. रश्मि गोगोई ने अपना आलेख हेम बरुआ के यात्रा वृत्तांत पर प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि उनका पहला यात्रा वृत्तांत अमेरिका पर *हेगर देखिसा,* असमिया साहित्य में पहला यात्रा वृत्तांत है। उन्होंने आगे कहा कि एक लेखक एवं पाठक के बीच पुल बनाने में उनका यात्रा वृत्तांत अपवाद है।

द्वितीय सत्र का विषय था 'हेम बरुआ एवं उनकी दूसरी गतिविधियाँ'। यह सत्र श्री सोनाराम बरुआ की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। सत्र के प्रथम वक्ता श्री चंदन शर्मा ने हेम बरुआ को एक राजनीतिक क्रांतिकारी के रूप में याद किया। उन्होंने असम की अच्छाई के लिए राजनीतिक पार्टियों को विभाजित किया। उन्होंने असम के कारख़ानों एवं कंपनियों के उन्नयन के लिए बड़ा काम किया। सत्र के दूसरे वक्ता श्री संजीव पॉल डेका का मत था कि हेम बरुआ हालाँकि गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित होने के लिए प्रसिद्ध हैं, परंतु वे एक समाजवादी विचारधारा के व्यक्ति थे।

समापन सत्र की अध्यक्षता श्री खगेंद्र नाथ भुइयां ने की, जिसमें समापन वक्तव्य *असम वाणी* के संपादक श्री

दिलीप चंदन ने दिया। संगोष्ठी के अंत में कोलकाता कार्यालय प्रभारी श्री गौतम पॉल ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'देवकांत बरुआ एवं असमिया कविता की उभरती प्रवृत्तियाँ' विषयक संगोष्ठी

23-24 जनवरी 2015 नगाँव, असम

साहित्य अकादेमी द्वारा ए. डी. पी. कॉलेज, नगाँव के संयुक्त तत्त्वावधान में 23-24 जनवरी 2015 को कॉलेज परिसर में 'देवकांत बरुआ एवं असमिया कविता की उभरती प्रवृत्तियाँ' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी के आरंभ में कोलकाता कार्यालय प्रभारी श्री गौतम पॉल ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए देवकांत बरुआ के जीवन एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल की संयोजिका प्रो. करबी डेका हज़ारिका ने उद्घाटन वक्तव्य दिया, जबकि श्री प्रदीप आचार्य ने बीज भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने बीज वक्तव्य में देवकांत बरुआ के लेखन के विभिन्न पक्षों को रेखांकित करते हुए कहा कि देवकांत ने अपनी कविताओं में नाटकीय एकालाप की तकनीक को अपनाया, जिसे रॉबर्ट ब्राउनिंग ने लोकप्रिय बनाया था। सत्रांत में डॉ. रंजिता कलिता द्वारा औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन दिया गया।

संगोष्ठी का प्रथम सत्र कविता पाठ को समर्पित था, जिसकी अध्यक्षता प्रो. करबी डेका हज़ारिका ने की। इस सत्र में कुल पंद्रह कवियों ने अपनी कविताओं का पाठ किया। कविता पाठ करनेवालों में श्री अनीस उज़ ज़मां, श्री ज्ञान पुजारी, श्री रफ़ीकुल होसैन, श्री समीर ताँती, श्री अनुभव तुलसी, श्री विपुल ज्योति सइकीया, श्री नीलिम कुमार, श्री विनायक बंद्योपाध्याय, श्रीमती नीलिमा ठकुरिया हक़, श्री विमसन कुमार डोले, श्री कुशल दत्त, श्री प्रयाग सइकीया, श्री विजय शंकर वर्मन, श्री प्रणव कुमार वर्मन एवं श्री मृदुल हालै शामिल थे।

संगोष्ठी के द्वितीय दिन तीन विचार सत्र आयोजित थे। प्रथम सत्र 'देवकांत बरुआ एवं असमिया कविता की उभरती प्रवृत्तियाँ' विषय पर केंद्रित था, जो श्री प्रदीप आचार्य की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में डॉ. कमालुदीन अहमद, श्रीमती मोनो ज्योत्स्ना महंत, श्री प्रांजल शर्मा वशिष्ठ एवं संजीव पॉल डेका ने अपने आलेख प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री ज्ञान पुजारी ने की जिसमें डॉ. सत्यकाम बरठाकुर, डॉ. प्राणजित बोरा, श्री देवभूषण बोरा एवं श्री विनायक बंद्योपाध्याय ने अपने वक्तव्य दिए। अंतिम सत्र की अध्यक्षता श्री अनुभव तुलसी ने की। इस सत्र में श्री समीर ताँती, श्री ज्ञान पुजारी, श्री विपुल ज्योति सइकीया एवं श्री नीलिम कुमार ने अपने विचार व्यक्त किए। संगोष्ठी का समापन सत्र प्रो. करबी डेका हज़ारिका की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें समापन वक्तव्य डॉ. नित्यानंद पटनायक ने दिया।

मनुभाई पंचोली 'दर्शक' जन्मशतवार्षिकी

27-28 जनवरी 2015, सनोसरा

साहित्य अकादेमी द्वारा दर्शक फ़ाउंडेशन एवं लोक भारती ग्राम विद्यापीठ, सनोसारा के सहयोग से 27-28 जनवरी 2015 को सारस्वत भवन, सानोसरा, भावनगर में मनुभाई पंचोली 'दर्शक' की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। आरंभ में अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कहा कि दर्शक को एक चिंतक, विचारक, शिक्षाविद्, कथाकार, नाटककार के रूप में उनके योगदान को याद रखा जाएगा। अकादेमी के गुजराती परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. सितांशु यशश्चंद्र ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि दर्शक के प्रमुख चिंतन में गाँधी की विचारधारा थी और एक

श्री मनसुखलाल सल्ला, श्री अरुणभाई दवे, श्री शिरीष पांचाल, प्रो. सितांशु यशश्चंद्र तथा डॉ. कृष्णा किंबहुने

लेखक के रूप में भारतीय स्वतंत्रता का संघर्ष था। अपने बीज वक्तव्य में श्री मनसुख सल्ला ने कहा कि एक लेखक के रूप में दर्शक की एक आँख हमारे इतिहास पर रहती थी तथा दूसरी आँख हमारी दया पर। महात्मा गाँधी का उनपर गहरा प्रभाव है और वे ऐसे लेखक हैं, जो भारत में ग्रामीण जीवन का एक भावुक साधक था। इस सत्र की अध्यक्षता श्री शिरीष पांचाल ने की तथा लोकभारती के निदेशक श्री अरुण भाई दवे ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री रघुवीर चौधरी ने की। इस सत्र का विषय था 'दर्शक का मनोविश्व', जिसमें श्री विद्युत जोशी, श्री महेंद्र चौटलिया एवं श्री प्रकाश शाह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री योगेश भट्ट एवं अंबादान रोहडिया ने संवादी के रूप में भाग लिया।

द्वितीय सत्र 'वाचिकम' में श्री महेंद्र सिंह परमार एवं श्री प्रवीण पंड्या ने दर्शक की रचनाओं का पाठ किया।

द्वितीय दिन का तृतीय सत्र 'दर्शक की भावदृष्टि' विषय पर केंद्रित था, जिसमें सुश्री बिंदु भट्ट, सुश्री मृदुला पारीक, श्री धीरेंद्र मेहता एवं श्रीमती मृणालिनी कामत ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा सुश्री कालिंदी पारीक ने संवादी के रूप में अपने विचार प्रस्तुत किए। यह सत्र श्री शिरीष पांचाल ने सत्र की अध्यक्षता की। अंतिम सत्र की अध्यक्षता श्री नरोत्तम पालन ने की, जिसमें श्री भरत दवे, श्री रमण सोनी एवं बलवंत जानी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा श्री हर्षद त्रिवेदी संवादी के रूप में सम्मिलित हुए।

गोपीनाथ महांति जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

1-2 फ़रवरी 2015, नई दिल्ली

साहित्य आकदेमी द्वारा प्रख्यात ओड़िया लेखक गोपीनाथ महांति की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन 1-2 फ़रवरी 2015 को अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में किया गया।

संगोष्ठी के आरंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए संक्षेप में गोपीनाथ महांति के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में चर्चा की। ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक श्री गौरहरिदास ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि गोपीनाथ महांति का जीवन और कृतित्व संक्रमण के दौर में समाज के उज्ज्वल भविष्य की राह दिखाते हैं। प्रसिद्ध हिंदी आलोचक प्रो. नामवर सिंह ने कहा कि गोपीनाथ महांति के लेखन ने भारत के कई महत्त्वाकांक्षी लेखकों के लेखन में सकारात्मक भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा कि महांति को मात्र एक ओड़िया लेखक की संकीर्ण स्थापना के बजाय अखिल भारतीय लेखक के रूप में पहचाना जाना चाहिए।

अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने गोपीनाथ महांति के बहुमुखी व्यक्तित्व और उनके जीवन की विभिन्न प्रेरणाओं के बारे में बात की। अपने बीज वक्तव्य में लब्धप्रतिष्ठ ओड़िया लेखक डॉ. सीताकांत महापात्र ने गोपीनाथ महांति के जीवन के विविध अनुभवों का एक रिकार्डर के रूप में आकर्षक चित्र प्रस्तुत किया। सत्रांत में गोपीनाथ महांति फ़ांउडेशन ट्रस्ट के श्री ओंकारनाथ महांति ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

अध्यक्षीय व्याख्यान देते हुए प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

संगोष्ठी के प्रथम सत्र का विषय 'गोपीनाथ महांति के नाटक, निबंध और आत्मकथा', जिसकी अध्यक्षता श्री जे. पी. दास ने की। इस सत्र में श्री के. के. महापात्र, श्री संग्राम जेना और श्री अरुण महांति ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री सुमन्यु सत्पथी ने की, जो 'गोपीनाथ महांति और सरला दास' विषय पर केंद्रित था। इस सत्र में श्री राजकुमार मिश्र एवं श्री बसंत कुमार पंडा ने अपने आलेख में यह स्थापित किया कि कैसे गोपीनाथ महांति के शोध से महान ओड़िया संत कवि सरला दास के बारे में नए तथ्यों का उद्घाटन हुआ, जिसने ओड़िया साहित्य के पुनर्लेखन की आवश्यकता उपस्थित कर दी।

तृतीय सत्र 'गोपीनाथ महांति का कथासाहित्य' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता प्रतिष्ठित ओड़िया कथा लेखिका श्रीमती प्रतिभा राय ने की। इस सत्र में श्री विक्रम केशरी दास, श्री गौरकिशोर दास एवं श्रीमती यशोधारा मिश्र ने अपने आलेख द्वारा महांति की कहानियों में सामाजिक यथार्थ और परिदृश्य के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डाला। चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता श्री शांतनु कुमार आचार्य ने की, जो 'रूपाकार लेते स्वर : गोपीनाथ महांति एवं आदिवासी संसार' विषय पर केंद्रित था। इस सत्र में सर्वश्री जतिन नायक, पी. सी. पटनायक, जयंत कुमार बिस्वाल और राज कुमार ने अपने आलेखों द्वारा गोपीनाथ महांति की रचनाओं में आदिवासियों के जीवन के चित्रण की पड़ताल की।

पंचम सत्र 'भारतीय साहित्य में गोपीनाथ महांति का स्थान' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता गुजराती एवं हिंदी के सुपरिचित साहित्यकार श्री रघुवीर चौधरी ने की। इस सत्र में सर्वश्री सायंतन दासगुप्त, मनु चक्रवर्ती, पी.पी. रवींद्रन एवं बी.एन. पटनायक ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। वक्ताओं ने अपने आलेख में अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य पर महांति के प्रभाव का भी मूल्यांकन करने का प्रयत्न किया।

खुशवंत सिंह पर केंद्रित परिसंवाद

2 फ़रवरी, 2015 नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा अंग्रेज़ी के प्रसिद्ध लेखक, पत्रकार खुशवंत सिंह पर एक परिसंवाद का आयोजन 2 फ़रवरी 2015 को अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में किया गया।

आरंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वगात करते हुए खुशवंत सिंह की कृतियों और उनकी विरासत के बारे में संक्षेप में प्रकाश डाला। अकादेमी के अंग्रेज़ी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के. सच्चिदानंदन ने संबोधित करते हुए खुशवंत सिंह को एक बहुआयामी चरित्र वाली महान शख़्सियत के रूप में याद किया और कहा कि

सर्वश्री के. श्रीनिवास राव, के. सच्चिदानंदन, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, हरीश त्रिवेदी, राहुल सिंह तथा एम. जे. अकबर

उनकी पत्रकारिता, हास्य विनोद, धार्मिक सहिष्णुता और साहित्य के प्रति जुनून को रेखांकित किया।

प्रथम सत्र अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें प्रो. हरीश त्रिवेदी, श्री राहुल सिंह एवं श्री एम. जे. अकबर ने खुशवंत सिंह के जीवन के विभिन्न आयामों पर अपने विचार प्रकट किए। इसके बाद श्री सुरेश कोहली द्वारा निर्देशित तथा साहित्य अकादेमी द्वारा खुशवंत सिंह पर निर्मित वृत्तचित्र का प्रदर्शन भी किया गया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. के. सच्चिदानंदन ने की। इस सत्र में सुश्री इंदु बंगा, डॉ. जी. जे. वी. प्रसाद और श्री डेविड देवीदार ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। सुश्री इंदु बंगा ने सिखों के इतिहास पर केंद्रित खुशवंत सिंह के लेखन का उद्देश्य तथा बहैसियत इतिहासकार उनकी सीमाओं के बारे में बात की। डॉ. प्रसाद ने खुशवंत सिंह के कथासाहित्य के यथार्थवादी प्रश्न को चित्रित करने के बारे में विस्तार से बात की। श्री डेविड देविदार का आलेख खुशवंत सिंह द्वारा लिखी गई पुस्तक *दिल्ली* के संदर्भ में था।

प्रो. हरीश त्रिवेदी की अध्यक्षता में संपन्न तृतीय सत्र में प्रो. पुष्पिंदर स्याल और प्रो. एम. असदुद्दीन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री स्याल ने अपने आलेख में महिलाओं के प्रति खुशवंत सिंह के नज़रिए की पड़ताल की तथा उन्होंने इसे साहित्यिक संवेदनशील व्यक्तित्व के विपरीत पाया। प्रो. असदुद्दीन ने खुशवंत सिंह के अनुवादक व्यक्तित्व पर अपने विचार व्यक्त किए। परिसंवाद के पढ़े गए आलेखों श्रोताओं द्वारा सवाल भी पूछे गए तथा टिप्पणियाँ भी की गईं।

जयशंकर प्रसाद पर केंद्रित संगोष्ठी

3-4 फ़रवरी 2015, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा प्रख्यात हिंदी साहित्यकार जयशंकर प्रसाद पर केंद्रित एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में 3-4 फ़रवरी 2015 को किया गया।

संगोष्ठी के आरंभ में अकादेमी के उपचिव श्री ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने औपचारिक स्वागत करते हुए जयशंकर प्रसाद के व्यक्तित्व और कृतित्व पर संक्षेप में प्रकाश डाला।

संगोष्ठी का उद्घाटन गुजराती और हिंदी के प्रख्यात लेखक रघुवीर चौधरी ने किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने कहा कि जयशंकर प्रसाद को देश के आंतरिक स्वरूप की गहरी पहचान थी। उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उन्होंने *कामायनी* के द्वारा ब्रजभाषा की सारी उपलब्धियों को खड़ी बोली में ला दिया। गुजरात में *कामायनी* बेहद लोकप्रिय है और बड़ी श्रद्धा के साथ पढ़ी जाती है।

सर्वश्री रघुवीर चौधुरी, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी तथा प्रभाकर श्रोत्रिय

अपने बीज भाषण में '*कामायनी* का नव सांस्कृतिक विमर्श' शीर्षक से पढ़े गए आलेख में डॉ. प्रभाकर श्रोत्रिय ने विकास और विनाश के परस्पर संबंधों की बात करते हुए कहा कि *कामायनी* में इन सबका जवाब बहुत अच्छे से दिया है। यह कृति आज के समय में भी इतनी प्रासंगिक है कि इसे हम एक भविष्यद्रष्टा कृति कह सकते हैं। उन्होंने कहा कि *कामायनी* बीसवीं सदी के सबसे बड़ी रचना है, लेकिन उसका इस स्तर पर व्यापक अध्ययन नहीं हुआ है।

उद्घाटन सत्र में अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपना अध्यक्षीय व्याख्यान देते हुए कहा, "जयशंकर प्रसाद को हमें हीन नहीं, बल्कि बड़ी और खुली दृष्टि से देखने की ज़रूरत है। किसी के एक दो विपरीत जुमलों के सहारे उसके समूचे रचना-कर्म को ख़ारिज करना उचित नहीं है।"

संगोष्ठी का प्रथम सत्र प्रसाद के काव्य पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी ने की और उसमें डॉ. आशीष त्रिपाठी, डॉ. राजेंद्र प्रसाद पांडेय और डॉ. माधव हाडा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। अपने अध्यक्षीय व्याख्यान में त्रिपाठी जी ने कहा कि *कामायनी* आधुनिक समय में भी प्रासंगिक है। उसे निरर्थक कहना अनर्थ होगा। द्वितीय सत्र प्रसाद की कहानियों पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात आलोचक श्री मधुरेश ने की और प्रो. अजय तिवारी तथा प्रो. एस. शेषारत्नम् ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

शाम को त्रिवेणी सभागार में रूपवाणी, वाराणसी द्वारा श्री व्योमेश शुक्ल के निर्देशन में नृत्य नाटिका *कामायनी* प्रस्तुत की गई। एक घंटे की इस विशिष्ट प्रस्तुति में नृत्य की छऊ, भरतनाट्यम और कत्थक शैलियों का प्रयोग किया गया था।

संगोष्ठी के दूसरे दिन 4 फ़रवरी 2015 को प्रसाद के नाटकों, उनके उपन्यासों तथा उनके काव्य चिंतन पर विचार विमर्श किया गया। नाटकों पर आधारित सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ हिंदी नाट्यकार एवं आलोचक डॉ. नरेंद्र मोहन ने की। इस सत्र में डॉ. आलोक गुप्त, श्री रामगोपाल बजाज और डॉ. सोमा बंद्योपाध्याय ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रसाद के उपन्यासों पर केंद्रित सत्र डॉ. अजय तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें डॉ. रमेश ऋषिकल्प, डॉ. चित्तरंजन मिश्र और श्री नीरज ने अपने आलेखों का पाठ किया। 'प्रसाद का काव्य चिंतन' पर आधारित सत्र की अध्यक्षता करते हुए प्रतिष्ठित हिंदी आलोचक डॉ. नित्यानंद तिवारी ने कहा कि प्रसाद के चिंतन का पूरा ढाँचा सामंजस्य का है। प्रसाद के चिंतन में काव्य भाषा एक स्वाधीन सत्ता के रूप में प्रकट

होती है जो उस समय के दूसरे लेखकों में नहीं है। इस सत्र में डॉ. अनंत मिश्र, डॉ. रामशंकर द्विवेदी और डॉ. विनोद तिवारी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र की अध्यक्षता हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित ने की, जिसमें समापन वक्तव्य प्रख्यात हिंदी आलोचक प्रो. कृष्णदत्त पालीवाल ने दिया। इस सत्र में श्री ओम निश्चल ने पूरी गोष्ठी का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। सत्रों का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी श्री खुर्शीद आलम ने किया।

'भाषा और संस्कृति पर प्रौद्योगिकी के प्रभाव' विषयक संगोष्ठी

5-6 फ़रवरी 2015, तिरुर

साहित्य अकादेमी द्वारा थुंचन मेमोरियल ट्रस्ट, तिरुर के संयुक्त तत्त्वावधान में 5-6 फ़रवरी 2015 को 'भाषा और संस्कृति पर प्रौद्योगिकी का प्रभाव' विषयक एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

आरंभ में अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु के क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों के बारे में बताया।

संगोष्ठी का उद्घाटन प्रसिद्ध मराठी लेखक श्री चंद्रकांत पाटील ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि संस्कृति का स्थायित्व सभ्यता की विविधता पर निर्भर करता है। प्रौद्योगिकी के प्रभाव से संस्कृति बदल रही है। प्रौद्योगिकी के विकास से ही भूमंडलीकरण संभव हो सका है। कोई भी संस्कृति हमेशा उसी स्थिति में नहीं रहती। आभासी वास्तविकता प्रौद्योगिकी की वजह से ही होती है। उन्होंने विकसित देशों में लघु संस्कृतियों के नष्ट होने एवं भाषा को पंगु बनाने के प्रति सावधान किया।

प्रसिद्ध सामाजिक वैज्ञानिक एवं विचारक श्री शिव विश्वनाथन ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि प्रौद्योगिकी संस्कृतियों को नष्ट कर रहा है। लेखकों को प्रौद्योगिकी के प्रभाव के ख़िलाफ़ अपनी आवाज़ उठानी चाहिए। विविधता का नेतृत्व भाषा एवं साहित्य करते हैं। उन्होंने कहा कि जीवन के कई अर्थ हैं। हम स्वतंत्रता के पश्चात् पहले ही 1082 भाषाएँ खो चुके हैं। विज्ञान को लोगों का दर्द समझ में नहीं आएगा। प्रौद्योगिकी भाषा का ही सीमित विचार है। प्रौद्योगिकी केवल पुनरावृत्ति कर सकती है, जबकि भाषा बना सकती है। प्रौद्योगिकी के पास स्थायी स्मृति नहीं है और उसके पास नैतिकता का विस्थापन नहीं है।

अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री सी. राधाकृष्णन ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि हम भविष्य में प्रौद्यागिकी से बच नहीं सकते। उन्होंने अपने एक प्रश्न से समापन किया कि हम कब तक प्रौद्योगिकी से दूरी बनाए रख सकते हैं।

संगोष्ठी का प्रथम सत्र 'भारतीय भाषाओं पर प्रौद्योगिकी का प्रभाव' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात कथाकार श्री एम. मुकंदन ने की। उन्होंने कहा कि जिन देशों ने नई प्रौद्योगिकी का विकास किया है, उनके अपने स्वार्थ एवं छुपे एजेंडे हैं। हमें उनसे सावधान रहना चाहिए, अन्यथा हम मुसीबत में फँस जाएँगे।

तमिलनाडु के प्रतिष्ठित प्रकाशक श्री कानन सुंदरम ने प्रौद्योगिकी के सकारात्मक प्रश्नों को सामने रखा। उन्होंने तमिलनाडु के प्रकाशन इतिहास का एक विस्तृत ब्योरा दिया। उन्होंने यह भी कहा कि इंटरनेट का तमिऴ भाषा के विकास में बड़ा योगदान है। इंटरनेट के द्वारा लोग तमिऴ भाषा का अधिक प्रयोग करने लगे हैं, विशेषतः जो भारत के बाहर हैं, जो कि एक गतिशील तमिऴ की पहचान है। इन्होंने यह भी कहा कि मीडिया के द्वारा भी तमिऴ भाषा समृद्ध हो रही है।

पंजाब से आए श्री जोगा सिंह ने मातृभाषा की अहमियत के बारे में बात करते हुए उसके विकास की बात की। हालाँकि बहुत सारे लोग अंग्रेज़ी जानते हैं, लेकिन अच्छी अंग्रेज़ी बोलनेवाले लोग बहुत कम हैं। भाषा को नष्ट करने के प्रौद्योगिकी के अतिरिक्त कुछ अन्य कारक हैं, जैसे संस्कृत। उन्होंने यह भी कहा कि सभी भाषाओं का परस्पर संबंध है। वास्तव में उनके पूरे वक्तव्य में सारा ज़ोर मातृभाषा के विकास पर था।

संगोष्ठी के दूसरे दिन प्रथम सत्र 'मलयाळम् भाषा पर तकनीकी संस्कृति का प्रभाव' विषय पर केंद्रित था। इस सत्र की अध्यक्षता श्री के. सेतुरमण ने की। उन्होंने कहा कि प्रौद्योगिकी के कारण साहित्यिक गतिविधियाँ आसान हुई हैं। उन्होंने ब्लॉग्स एवं फ़ेसबुक के उदाहरण दिए। इस सत्र में श्री टी. टी. श्रीकुमार ने इलेक्ट्रॉनिक युग में जीवन के दृश्य की बात की और कहा कि प्रौद्योगिकी के माध्यम से हम आज अधिक जानकारी प्राप्त कर पा रहे हैं।

प्रो. वी. सनिल ने कहा कि मनुष्य की बुनियादी ज़रूरतों से बाहर ले जाने के लिए प्रौद्योगिकी एवं मूल्य प्रणाली नहीं होती। यह केवल अपने हित अस्तित्व का ध्यान रखता हैं। हम प्रौद्योगिकी की सीमाओं का निर्धारण नहीं कर सकते। वास्तव में प्रौद्योगिकी चीज़ों को अपने तरीक़े से समझने की हमारी क्षमता कम कर देता है। दरअसल तकनीक पर निर्भरता व्यक्तियों को बेवक़ूफ़ बना देता है। ज्ञान प्रकृति को पहचानने के लिए होना चाहिए, न कि नष्ट करने के लिए। उन्होंने यह भी कहा कि दर्ज की गई प्रविष्टियों के साथ छेड़छाड़ की जा सकती है और डाटा संग्राहक अपनी आवश्यकता के अनुरूप उन्हें व्यवस्थित कर सकता है। उन्होंने सवाल उठाया कि जीवन मूल्यों को पैदा करने का ज़िम्मेदार कौन है। उन्होंने यह कहते हुए समाहार किया कि गाँधी के अनुसार एहसास करने और पहचानने के लिए प्रकृति एक छोटी-सी नाव है।

डॉ. पी. के. राजशेखरन ने 'नए युग में मानवतावाद' विषय पर बात करते हुए कहा कि तकनीक से दूर रहना ज़रूरी नहीं है। वास्तव में धर्म और कार्पोरेट तकनीक का प्रयोग अपनी दुनिया बनाने के लिए कर रहे हैं। नई सभ्यता हमें संदेह का शिकार बना रही है अर्थात् हर चीज़ को संदेह से देखो।

अगले सत्र का विषय था 'तकनीकी का संस्कृति का प्रभाव', जिसकी अध्यक्षता श्रीमती आई. वी. सुनीता ने की। उन्होंने कहा कि हम ऐसे समय में रह रहे हैं, जहाँ हर चीज़ तकनीक द्वारा निर्धारित की जा रही है जो कि स्वागत योग्य स्थिति नहीं है। ऐसा लगता है कि सरकार लोगों के कल्याण से अधिक टेक्नो पार्क पर ध्यान दे रही है।

श्री महेश मंगलत ने 'इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में लेखन' शीर्षक अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने यूनीकोड पर विस्तार से बात की तथा आधुनिक तकनीक द्वारा जिस प्रकार मलयाळम् शब्दों को विकृत किया जा रहा है, की आलोचना की। उन्होंने यह भी कहा कि आधुनिक तकनीक के अनुरूप वर्ण भाषा को बनाते वक्त दूसरी भाषाओं की पहचान बनाए रखना चाहिए।

श्री पी. पी. रामचंद्रन ने 'तकनीकी भाषा एवं संस्कृति' विषयक अपने आलेख में कहा कि साईबर स्पेस प्रिंट मीडिया से अधिक सक्रिय है। यह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता भी देता है। श्री साबू कोल्लूकल ने 'सांस्कृतिक अभिव्यक्ति' शीर्षक आलेख प्रस्तुत करते हुए कहा कि डिजिटल संसार वैश्विक स्तर पर पूँजीगत उपभोक्तावाद लाता है।

प्रेमानंद पर संगोष्ठी

7-11 फ़रवरी 2015, वड़ोदरा, सूरत एवं नंदूरबार

साहित्य अकादेमी द्वारा महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, विविध भारती, बलवंत पारेख सेंटर फ़ॉर जेनरल सेमेंटिक्स एंड अदर ह्यूमन साइंसेज़, महाकवि प्रेमानंद त्रिवेणी, वड़ोदरा एवं महाकवि परमानंद महोत्सव समिति सूरत, दक्षिण गुजरात चेंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज़, अग्रवाल

विकास ट्रस्ट तथा श्रीमती शांताबेन हीराभाई चैरिटेबल ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में एक पाँच दिवसीय संगोष्ठी, संस्कृति यात्रा का आयोजन, प्रेमानंद ने पगले पगले, बड़ोदरा से सूरत, सूरत से नंदूरबार की सांस्कृतिक यात्रा, जहाँ सत्रहवीं शताब्दी के कवि प्रेमानंद ने यात्रा की एवं आवास किया तथा अपने आख्यानों, कविताओं को गाया, 7-11 फ़रवरी 2015 को गुजरात बड़ोदरा, सूरत तथा महाराष्ट्र के नंदूरबार में आयोजन किया गया।

'सिंधी बाल साहित्य' पर परिसंवाद

8 फ़रवरी 2015, अहमदाबाद

साहित्य अकादेमी द्वारा सिंधी साहित्य अकादमी के सहयोग से 8 फ़रवरी 2015 को अहमदाबाद के एम. जी. उच्च विद्यालय में 'सिंधी बाल साहित्य' पर एक परिसंवाद का आयोजन किया।

आरंभ में साहित्य अकादेमी के सिंधी परमर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेम प्रकाश ने परिसंवाद में भाग लेनेवाले अतिथि लेखकों और श्रोताओं का स्वागत किया। अपने उद्घाटन भाषण में श्री यशवंत मेहता ने बाल साहित्य को प्रोत्साहित करने की बात कही। उन्होंने कहा कि अन्य भाषाओं के बाल साहित्य को सिंधी में अनुवाद करने की आवश्यकता है। अपने भाषण में डॉ. प्रेम प्रकाश ने बताया कि 1992 तक सिंधी में बाल साहित्य के प्रोत्साहन और अध्ययन के प्रयास किए जाते रहे हैं, लेकिन उसके बाद एक अंतराल उत्पन्न हो गया। उन्होंने कहा कि इस परिसंवाद के ज़रिए हम उन तमाम संभावनाओं की खोज करेंगे, जो सिंधी में बाल साहित्य को प्रोत्साहित करेंगी। श्री वासदेव मोही ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादेमी को इस बात के लिए बधाई दी कि उसने सिंधी के बाल साहित्य पर परिसंवाद का आयोजन किया। श्री हूंदराज बलवाणी ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की, जिसमें श्री जेठो लालवाणी और श्री खीमण मुलाणी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री जेठो लालवाणी ने द्वितीय सत्र की अध्यक्षता की, जिसमें श्रीमती वीणा शृंगी, श्रीमती विम्मी सदारंगाणी और श्री हूंदराज बलवाणी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. प्रेम प्रकाश ने समापन भाषण दिया, जबकि श्री जगदीश शाहादादपुरी ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

'उर्दू-हिंदी-अंग्रेज़ी : संवाद एवं विनिमय' विषयक परिसंवाद

9 फ़रवरी 2015, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने 9 फ़रवरी 2015 को नई दिल्ली स्थित अपने सभागार में 'उर्दू-हिंदी-अंग्रेज़ी : संवाद एवं विनिमय' विषयक एक परिसंवाद का आयोजन किया।

परिसंवाद आयोजित करने का मुख्य उद्देश्य हिंदी और उर्दू भाषा और उसके साहित्य के इतिहास पर बात करना था। साहित्य अकादेमी के अंग्रेज़ी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के. सच्चिदानंदन ने विषय प्रवेश करते हुए इतिहास का हवाला देते हुए ताराचंद, अमृत राय, शमशुर रहमान फ़ारुकी, स्टुअर्ट मैकग्रेगौर, शेल्डन पोलॉक और अन्य के बीच उर्दू-हिंदी-अंग्रेज़ी के संबंधों में हुए विवादास्पद तर्कों-वितर्कों को उद्धृत किया। उन्होंने इस बात को चिह्नित किया कि किस तरह उर्दू को हिंदी के विरुद्ध खड़ा किया गया, जो संप्रदायवादियों के हाथ का

उर्दू-हिंदी-अंग्रेज़ी परिसंवाद के प्रतिभागी

खिलौना बन गया। उर्दू और हिंदी दोनों का दावा है कि हिंदी उनकी परंपरा का तब से हिस्सा है, जब से अमीर खुसरो, मुल्ला दाऊद और विष्णुदास का अस्तित्व है। उन्होंने इस बात का उल्लेख किया कि गीतों और ग़ज़लों में किस तरह हिंदुस्तानी का प्रयोग हो रहा है और ये दोनों भाषाएँ अंग्रेज़ी के वर्चस्व से मुक़ाबला कर रही हैं तथा इसी संदर्भ में दोनों एक-दूसरे के क़रीब भी आई हैं।

प्रो. हरीश त्रिवेदी, श्री आलोक भल्ला, प्रो. अवधेश कुमार सिंह, श्री अनीसुर रहमान, प्रो. असदुद्दीन, श्री सुमन्यु सत्पथी, सुश्री निशात ज़ैदी और श्री तपन कुमार बसु ने भी परिसंवाद में हिस्सा लिया और समस्या तथा संभावनाओं के विभिन्न पक्षों पर अपने विचार साझा किए। परिसंवाद में भाग लेनेवाले प्रतिभागियों को विषय की गहराई और व्यापकता को समझने में मदद मिली।

'हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता' पर संगोष्ठी

14-15 फ़रवरी 2015, हल्द्वानी

साहित्य अकादेमी द्वारा उत्तराखंड खुला विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में 14-15 फ़रवरी 2015 को हल्द्वानी में 'हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता' पर एक द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

प्रारंभ में अकादेमी के उपसचिव श्री ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने स्वागत भाषण करते हुए चौबीस भारतीय भाषाओं में अकादेमी द्वारा की जा रही गतिविधियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए माखनलाल चतुर्वेदी पत्रकारिता विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. अच्युतानंद मिश्र ने कहा कि सारी दुनिया में साहित्य को जनता तक सरल रूप में पहुँचाने का काम पत्रकारिता ही करती रही है। साहित्य के दर्ज़नों नोबेल पुरस्कार विजेता साहित्यकार पत्रकारिता से जुड़े रहे हैं। हिंदी में महावीर प्रसाद द्विवेदी ने खड़ी बोली गद्य का विकास हिंदी पत्रकारिता के माध्यम से ही किया, साथ ही दुनियाभर के मुद्दों से पाठकों को परिचित करवाया। स्वाधीनता आंदोलन के दौरान तिलक और गाँधी जी ने प्रतिरोध की पत्रकारिता की, जिसकी वजह से उन्हें जेल जाना पड़ा। उस समय पत्रकारिता ने ही सबसे पहले स्वदेशी और बंगाल विभाजन जैसे ज्वलंत मुद्दों को उठाया था। साहित्यिक पत्रकारिता ही उस समय मुख्य धारा की पत्रकारिता थी। लेकिन आज हालात एकदम बदल गए हैं। उन्होंने कहा कि साहित्यिक पत्रकारिता ने पत्रकारिता की विश्वसनीयता इतनी मज़बूत बना दी थी कि लोग अख़बार में लिखी गई ख़बर को झूठ मानने को तैयार ही नहीं होते थे। बाद के दौर में विज्ञापनों के दबाव के चलते साहित्यिक पत्रकारिता हाशिए पर जाने लगी, दुर्भाग्य से किसी ने इसका विरोध नहीं किया। यही वजह है कि एक एक कर हिंदी की नामी साहित्यिक पत्रिकाएँ बंद हो गई हैं।

उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुभाष धुलिया ने कहा कि भूमंडलीकरण और उपभोक्तावाद के आने के बाद से मीडिया में अपराध, सेक्स और दुर्घटनाओं की ख़बरों को ज़्यादा महत्त्व दिया जाने लगा है। इसका कारण यह है कि इसे साधारण पाठक भी सरलता से समझ लेता है, जबकि साहित्यिक पत्रकारिता को समझने में उसे कुछ मुश्किल आती है। लेकिन महत्त्वपूर्ण यह है कि संपादकीय और साहित्यिक पृष्ठ पढ़नेवाले 10-12 प्रतिशत पाठक ही समाज का नेतृत्व करते हैं। इसलिए संचार माध्यमों में साहित्यिक और वैचारिक सामग्री को रोका नहीं जा सकता है। मुक्त अर्थव्यवस्था आने के बाद से मीडिया में संपादक की जगह ब्रांड मैनेजर लेने लगे। ये मैनेजर अख़बार को ऐसा उत्पाद बनाने लगे, जिसे विशाल जनसमूह ख़रीदे। इस वजह से साहित्यिक और सांस्कृतिक विमर्श हाशिए पर चले गए। पत्रकारिता सेवा से व्यापार में बदल गई। इसका उद्देश्य मुनाफ़ा कमाना बन गया। इसी वजह से समाचार उत्पाद बन कर रह गया। पत्रकारिता का उद्देश्य विवेकशील नागरिक बनाना न होकर ज़्यादा क्रय शक्तिवाला उपभोक्ता बनाना हो गया। उन्होंने कहा कि न्यू मीडिया अब असंतोष और

असहमति को अभिव्यक्ति देने का काम कर रहा है, लेकिन इंटरनेट जैसे माध्यम की पहुँच अभी जनसंचार के माध्यमों की तरह नहीं है।

उत्तराखंड मुक्त विवि में पत्रकारिता एवं मीडिया अध्ययन विद्या शाखा के निदेशक गोविंद सिंह ने साहित्य पत्रकारिता के हो रहे ह्रास पर अपने विचार रखे। उनका कहना था कि बाज़ारवाद के हावी होने के कारण ही आज साहित्यिक पत्रकारिता इस स्तर पर पहुँची है। उन्होंने यह भी कहा कि संगोष्ठी में कई ऐसे मुद्दे उठे, जिन पर आगे शोध या संगोष्ठियाँ हो सकती हैं। जानेमाने पत्रकार एवं कवि मंगलेश डबराल का कहना था कि पत्रकारिता इतिहास का पहला ड्राफ्ट होती है और साहित्यिक रचना अंतिम ड्राफ़्ट होती है। उन्होंने कहा कि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में हत्याएँ, बलात्कार, आपदा और झगड़े की ख़बरें भी मनोरंजन बन गई हैं। हिंदी पत्रकारिता हिंदी साहित्य से ही निकली है। भारतेंदु हरिश्चंद्र से लेकर रघुवीर सहाय तक साहित्यकारों ने इसमें महत्त्वपूर्ण योगदान किया। हिंदी के जाने-माने कवि लीलाधर जगूड़ी ने कहा कि केवल बाज़ार को कोसने से कुछ नहीं होगा। बाज़ार तो हज़ारों वर्षों से हमारी संस्कृति का अंग रहा है। यह भी सच है कि वैश्विक बाज़ार से हमारे स्थानीय बाज़ार को पंख लगे हैं। इसलिए बाज़ार का नहीं, अनैतिक बाज़ार का विरोध होना चाहिए। उन्होंने कहा कि महान साहित्यकारों ने भी पत्रकारिता के ज़रिए ही साहित्य में कदम रखे। उन्होंने मार्खेज और अर्नेस्ट हेमिंग्वे का उदाहरण देते हुए बताया कि किस तरह से पत्रकारिता में उन्होंने साहित्य का पहला पाठ सीखा। वरिष्ठ पत्रकार उवं साहित्यकार राजकिशोर का कहना था कि साहित्य, पत्रकारिता और मीडिया तीन पीढ़ियाँ हैं। उन्होंने कहा कि यह भ्रम है कि साहित्य मीडिया को नहीं समझ सकता है। साहित्य में मीडिया पर कई किताबें लिखी गई हैं। जब से ख़बर देना पेशा बना है, तब से ही ख़बर देनेवाला अपने हितों को साधने के लिए इसे इस्तेमाल करने लगा है। साहित्य कपड़ा, खिलौना या फ़िल्म उद्योग की तरह नहीं है। यह समस्या को समझने में मदद करता है, समाज की समझ बनाता है। साहित्य में मनोरंजन कम नहीं है। साहित्य अतुल्य है। पत्रकारिता में यदि साहित्य नहीं होगा तो सिर्फ़ मनोरंजन ही रह जाएगा।

साहित्यकार श्री प्रयाग जोशी ने कहा कि अख़बार के बाद रेडियो ही आकर्षित करता है। क्योंकि वह हमारे कामकाज में व्यवधान नहीं डालता। आज भी उसमें बहुत अच्छे और शिक्षाप्रद कार्यक्रम आते हैं। लेकिन टेलीविज़न और अन्य मीडिया इसे दबाए हुए हैं। उन्होंने कहा कि सोशल मीडिया का अपना अलग महत्त्व है। सबसे पहले इस ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 10 लाख के सूट का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि एक ज़माना था, जब साहित्य से पहला परिचय करवाने का काम पत्रकारिता ही करती थी, अब यह नहीं हो रहा। डॉ. चंद्र त्रिखा ने आतंकवाद के दौर में पंजाब की पत्रकारिता का उल्लेख करते हुए पत्रकारों की शहादत को याद किया। उन्होंने कहा कि इस दौर में बड़े अख़बार समूहों ने घुटने टेक दिए थे। लेकिन छोटे अख़बार और साहित्यिक पत्रिकाएँ झुकी नहीं। उन्होंने कहा कि बाज़ार की चुनौती को हौवा नहीं बनाना चाहिए। प्रसार संख्या बढ़ाना इसका एक तोड़ हो सकता है। लाइव इंडिया वेबसाइट की संपादक श्रीमती गीताश्री ने मीडिया पर दोष मढ़नेवाले साहित्यकारों को आड़े हाथों लिया। उन्होंने मीडिया और साहित्य को दो अलग धाराएँ बताया। उनका कहना था कि साहित्यकार साहित्यिक शुचितावाद को पकड़े हुए हैं, जबकि ज़माना आगे बढ़ गया है। पुराने मूल्यों के नष्ट होने पर ही नए मूल्य आएँगे।

वरिष्ठ पत्रकार एवं कवि श्री पंकज सिंह ने कहा कि साहित्य लिखनेवालों को पत्रकार नहीं माना जाता। साहित्यिक पत्रकारिता और राजनीतिक पत्रकारिता दोनों अलग-अलग चीज़ें हैं। अख़बार में सभी वर्गों को जगह मिलनी चाहिए। अख़बार सिर्फ़ साहित्य से नहीं भरा जा सकता है। पत्रकार एवं साहित्यकार श्री रामकुमार कृषक ने समसामयिक साहित्यिक पत्रिकाओं की सीमाओं और

संभावनाओं पर चर्चा की और कहा कि इन पत्रिकाओं को प्रकाशित करना साहस और संकल्प का छोटी पूँजी का बड़ा उद्यम है। जबकि वरिष्ठ पत्रकार श्री मधुकर उपाध्याय एवं साहित्यकार श्री श्याम कश्यप का कहना था कि पत्रिकाओं को प्रासंगिक होना चाहिए। जिन पत्रिकाओं का अपना व्यक्तित्व होता है, वे ही प्रासंगिक बन सकती हैं। उन्होंने समाज में पढने की रुचि घटते जाने पर खेद प्रकट किया। हल्द्वानी में हुई यह संगोष्ठी मुक्त मंडी के इस दौर में भुला दिए गए साहित्य को नया जीवन देने में इसलिए भी कामयाब रही कि दोनों दिन बड़ी संख्या में कुमाऊँ भर से लोग श्रोता बन बैठे रहे।

के. एस. नरसिंहस्वामी जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

15-16 फ़रवरी 2015, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी द्वारा जैन विश्वविद्यालय, बेंगळूरु के सहयोग से के.एस. नरसिंहस्वामी की जन्मशतवार्षिकी पर एक संगोष्ठी का आयोजन 15-16 फ़रवरी 2015 को विश्वविद्यालय सभागार, बेंगळूरु में किया गया।

आरंभ में अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगळूरु के क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया तथा के. एस. नरसिंहस्वामी के जीवन एवं कृतित्व पर संक्षेप में प्रकाश डाला। अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने उद्घाटन वक्तव्य में के. एस. नरसिंहस्वामी के लेखन की विशिष्टता को रेखांकित करते हुए कन्नड साहित्य में उनके योगदान को महत्त्वपूर्ण बताया। उन्होंने के. एस. के लेखन में पति-पत्नी के साझा प्रेम की नियंत्रित अभिव्यक्ति के बारे में बात की।

लब्धप्रतिष्ठ कन्नड साहित्यकार डॉ. कमला हंपना ने अपने बीज वक्तव्य में के. एस. के साथ बिताए 1950 की यादों को साझा किया तथा अपनी आरंभिक टिप्पणी में पति-पत्नी के शुद्ध एवं वास्तविक प्रेम के बारे में के. एस. की प्रतीकात्मक एवं सरल अभिव्यक्ति की बात की।

अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. नरहल्ली बालसुब्रह्मण्या ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। कवि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर बात करते हुए उन्होंने कहा कि के. एस. किस प्रकार एक आम आदमी के कवि थे। उन्होंने पाब्लो नेरूदा से उनकी तुलना करते हुए समानता के विंदुओं पर प्रकाश डाला।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध फ़िल्म निर्देशक श्री टी.एस. नागाभरन ने की, जिसमें श्री वेंकटेश मूर्ति ने कवि के जीवन एवं कृतित्व पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। विशेषरूप से तथ्य यह है कि पूछताछ और जीवन के सत्य के लगातार जाँचने के लिए कवि के लिए

डॉ. चंद्रशेखर कंबार, श्री एस.पी. महालिंगेश्वर, सुश्री कमला हंपना, श्री नरहल्ली बालसुब्रह्मण्य तथा सुश्री शांति अय्यर

यह दूसरा स्वरूप था। श्री एम. एस. मूर्ति ने अपने वक्तव्य में समय की झलक को साझा किया, जिसमें कवि ने स्वयं को कवि के रूप में स्थापित किया। अध्यक्षीय भाषण में श्री नागाभरन ने 'मैसुरु मल्लिगे' फ़िल्म-निर्माण के समय के. एस. के साथ के अनुभवों को साझा किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध कन्नड कवि डॉ. सुमतिंदा नाडिग ने की, जिसमें आठ प्रतिष्ठित कवियों श्री एस. एम. कृष्णराव (कोंकणी), श्रीमती ललितांबा (हिंदी), श्रीमती मेखला वेंकटेश (अंग्रेज़ी), श्री सा. रघुनाथ (तेलुगु), श्री एन. दास (तमिळ), श्री सुधाकरण रामंतली (मलयाळम्), श्रीमती उषा पी. राय (तुलु) एवं श्री अब्दुल मजीद .खां (उर्दू) ने नरसिंहस्वामी की कविताओं के अनुवाद अपनी भाषाओं में प्रस्तुत किए।

तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. सी.एन. रामचंद्रन ने की, जिसमें श्री श्रीधर हेगड़े, श्री हतवार गिरीश राव (जोगी) एवं श्री श्रीधर बलगार ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। चतुर्थ सत्र श्री बी. आर. लक्ष्मण राव की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें श्री चंद्रशेखर ताल्या, श्री जयंत कैकिनी एवं श्रीमती एच. एल. पुष्पा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इनके आलेखों के मुख्यबिंदु के. एस. नरसिंहस्वामी की रचनात्मक प्रक्रिया को उनकी कविता के माध्यम से समझने की कोशिश की गई। प्रसिद्ध विचारक एवं साहित्यकार श्री ए. आर. मित्र ने समापन वक्तव्य दिया। संगोष्ठी में नगर के गणमान्य, साहित्य रसिक, लेखक, कवि भारी संख्या में उपस्थित थे।

दलित साहित्य पर संगोष्ठी

21-22 फ़रवरी 2015, चेन्नै

साहित्य अकादेमी के हीरक जयंती समारोहों के अंतर्गत अकादेमी द्वारा 'दलित साहित्य : साहित्यिक पूर्णता की ओर' विषयक एक दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन बुक प्वाइंट आडिटोरियम, चेन्नै में 21-22 फ़रवरी 2015 को किया गया।

आरंभ में अकादेमी के उप-कार्यालय चेन्नै के प्रभारी ए. एस. इलानगोवन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया। अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य प्रो. एस. वामा ने कहा कि कैसे दलित साहित्य और सभी साहित्यिक आकांक्षाओं के पूरा होने और पूर्णता के लिए योगदान कर रहा है। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के सदस्य प्रो. आर. कामरासु ने तमिळ परिवेश में दलित लेखन के बारे में चर्चा की। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के सदस्य एवं पत्रकार श्री मालन ने शब्द दलित के विभिन्न अर्थ के बारे में बात की तथा सदी के पिछले चौथाई से अधिक तमिळ परिवेश में दलित साहित्य के योगदान के बारे में विस्तार से बात की।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. आर. कामरासु ने की। इस सत्र में श्री अघगिया पेरियावन ने 'दलित साहित्य का भविष्य' पर अपना आलेख प्रस्तुत करते हुए अतीत के नुक़सान से बचने के लिए दलित साहित्य के समावेश की आवश्यकता के बारे में बात की तथा आशा व्यक्त की कि भविष्य में दलित साहित्य में सभी संप्रदाय एवं क्षेत्र का समावेश होगा। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. आर. संबथ ने की, जिसमें सुश्री पी. शिवकामी और श्री याषण आती ने क्रमशः 'दलित साहित्य का सामाजिक राजनैतिक योगदान' तथा 'दलित कविता की गरिमा और सौंदर्य' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तृतीय सत्र श्री मालन की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें दलित साहित्य की परिभाषा और वर्गीकरण के संबंध में प्रासंगिक सवाल उठाए गए। उन्होंने सभी दीन, दबे, पीड़ित मनुष्यों के बारे में आधुनिक साहित्य में अभिव्यक्ति के बारे में पता लगाने की वकालत की। तीसरी परंपरा के सिद्धांत के बारे में भी उन्होंने बात करते हुए कमज़ोर वर्गों पर आधारित कविता एवं उपन्यास पर विस्तार से चर्चा की। इस सत्र में श्री माथिवन्नन, श्री इमायम और श्रीमती सुकृता रानी ने भी अपने विचार

उद्घाटन सत्र में व्याख्यान देती हुई प्रो. एस. वामा

प्रकट किए। श्रीमती सुकृता रानी ने दलित साहित्य में महिलाओं के चित्रण के बारे में विस्तार से चर्चा की। श्री इमायम ने दलित साहित्य की आवश्यकता के सिद्धांत तथा इसके वर्तमान स्वरूप की आवश्यकता को अच्छी तरह से प्रस्तुत किया। उन्होंने आश्चर्य व्यक्त किया कि अंधविश्वास और अयोग्य प्रथाओं को अभी भी प्रश्रय दिया जा रहा है और यहाँ तक कि विद्रोही लेखकों द्वारा भी इसकी वकालत की जा रही है।

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता तमिळ परामर्श मंडल की सदस्या तथा प्रसिद्ध अनुवादक श्रीमती वी. गीता ने की। उन्होंने महिलाओं एवं दलित समाज द्वारा सामना किए जा रहे समस्याओं का तीक्ष्ण विश्लेषण प्रस्तुत किया और समाज में एक क्रांतिकारी बदलाव की वकालत की। श्री यक्कन ने दलित साहित्य के आगमन पर आदरपूर्वक बात की। दलित राजनीति में सूक्ष्म एवं स्थूल राजनीतिक बदलाव की भी बात की। श्री श्रीधर गणेशन ने दलित साहित्य में अपनी भूमिका की बात की। श्री अथवन दीतचन्य ने एक विशाल और यथार्थवादी विचार और जातिहीन साहित्य की संभावनाओं पर बात की। उन्होंने पुरुषों एवं महिलाओं को जाति के भेदभाव से हीन खेल का मैदान उपलब्ध कराए जाने की कामना की। समापन वक्तव्य श्रीमती वामा ने दिया।

कमल कुमार मजुमदार जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

23-24 फ़रवरी 2015, कोलकाता

साहित्य अकादेमी द्वारा 23-24 फ़रवरी 2015 को कोलकाता स्थित अकादेमी सभागार में प्रख्यात बाङ्ला साहित्यकार कमल कुमार मजुमदार की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर एक द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

आरंभ में अकादेमी के कोलकाता कार्यालय प्रभारी श्री गौतम पॉल ने आगत प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत करते हुए कमल कुमार मजुमदार के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला। बाङ्ला के प्रसिद्ध लेखक श्री आलोक सरकार ने अपने बीज भाषण में कमल कुमार मजुमदार की भाषा पर विस्तार से प्रकाश डाला और उन्होंने बताया कि महान लेखक मजुमदार हमेशा अपने साहित्य में बोलचाल, साधारण और लोकभाषा का प्रयोग करते रहे और परंपरागत बाङ्ला भाषा का प्रयोग करने से बचते रहे। उन्होंने कमल कुमार मजुमदार के परवर्ती लेखन में सधुक्कड़ी भाषा के प्रयोग को रेखांकित किया और कमल कुमार मजुमदार, रवींद्रनाथ ठाकुर, सुधींद्रनाथ राममोहन और विद्यासागर की लेखन शैली पर एक तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया। बाङ्ला के प्रसिद्ध लेखक और विद्वान श्री देवेश रॉय ने बतौर मुख्य अतिथि बोलते हुए कमल कुमार मजुमदार की लेखनी के असाधारण पहलुओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कमल कुमार मजुमदार को आज भी बाङ्ला के लोकप्रिय लेखकों में से एक माना और उनकी लेखन शैली की तुलना शरत्चंद्र, टैगोर और बंकिमचंद्र से की। साहित्य अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने सत्र की अध्यक्षता की और कमल कुमार मजुमदार के महत्त्वपूर्ण साहित्यिक योगदान पर संक्षप में प्रकाश डाला।

प्रथम सत्र कमल कुमार मजुमदार के उपन्यासों पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता श्री वाणी बसु ने की। इस सत्र में श्री मधुमय पॉल और श्री स्वपन पंडा ने अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए मजुमदार के उपन्यासों *अंतर्जली यात्रा* और *पिंझारा बसिया सुख* पर समान रूप से चर्चा की। द्वितीय सत्र भी कमल कुमार मजुमदार के उपन्यासों पर ही केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता प्रो. उज्ज्वल कुमार मजुमदार ने की। इस सत्र में श्रीमती अल्पना घोष, श्री गौतम बसु और श्री सुकांति दत्त ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इन वक्ताओं ने *गोलाप सुंदरी* और *अनिला स्मरने* नामक उपन्यासों पर विमर्श प्रस्तुत किया। तृतीय सत्र की अध्यक्षता श्री राघव बंद्योपाध्याय ने की, जो कमल कुमार मजुमदार की कहानियों पर केंद्रित था। इस सत्र में श्रीमती झुमुर पांडे, श्री रविशंकर बल और श्री सोहराब हुसैन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। इन विद्वानों ने कमल कुमार मजुमदार की कहानियों में भाषा की गहराई और विषय-वस्तु पर प्रकाश डाला। श्री राघव बंद्योपाध्याय ने कमल कुमार मजुमदार की लघु पत्रिकाओं के क्षेत्र में दिए योगदान पर भी संक्षेप में प्रकाश डाला।

चतुर्थ सत्र कमल कुमार मजुमदार के नाटकों और फ़िल्मों पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता श्री दीपंकर दासगुप्त ने की। इस सत्र में श्री संजय मुखोपाध्याय और श्री उज्ज्वल चट्टोपाध्याय ने अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए फ़िल्मों के लिए लिखे गए साहित्य और रंगकर्म में दिए उनके योगदान पर प्रकाश डाला। पंचम सत्र 'कमल कुमार मजुमदार और ललित कला' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता श्री मानसी मजुमदार ने की। इस सत्र में श्री हीरेन मिश्र, श्री समीर रक्षित और श्री सुशोभन अधिकारी ने कमल कुमार मजुमदार चित्रकारी की शुरुआत, कला और शिल्प संबंधी कमल कुमार का दर्शन और कमल कुमार मजुमदार के तकनीकी पक्ष पर समान रूप से प्रकाश डाला। षष्ठ सत्र कमल कुमार के व्यक्तित्व पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता श्री अनिरुद्ध लाहिड़ी ने की। इस सत्र में श्री देवाशीष बंद्योपाध्याय, श्री शुभ्र मुखोपाध्याय और श्री सुब्रत रुदा ने कमल कुमार मजुमदार के व्यक्तित्व की अपरिभाषित प्रकृति, कमल कुमार की धार्मिक प्रकृति और कमल कुमार एक व्यक्ति के रूप में अपने समय में, जैसे विषयों पर प्रकाश डाला। संगोष्ठी के अंत में श्री गौतम पॉल ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

रामनाथ शास्त्री पर केंद्रित परिसंवाद

28 फ़रवरी 2015, जम्मू

साहित्य अकादेमी ने प्रख्यात डोगरी साहित्यकार रामनाथ शास्त्री पर केंद्रित एक परिसंवाद का आयोजन 28 फ़रवरी 2015 को जम्मू में किया।

परिसंवाद के आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रतिभागियों, श्रोताओं, मीडियाकर्मियों और साहित्य-प्रेमियों का हार्दिक

श्री देशबंधु डोगरा नूतन, प्रो. शशि पठानिया, प्रो. वीणा गुप्ता तथा प्रो. ललित मगोत्रा

स्वागत किया। परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए जम्मू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. देवानंद शर्मा ने कहा कि रामनाथ शास्त्री का योगदान न केवल डोगरी साहित्य के लिए अन्यतम है, बल्कि उन्होंने डोगरा समाज के विकास के लिए भी महत्त्वपूर्ण काम किए हैं। इस अवसर पर अपना अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. ललित मगोत्रा ने रामनाथ शास्त्री के बहु-आयामी व्यक्तित्व को रेखांकित किया। प्रख्यात डोगरी कवयित्री श्रीमती पद्मा सचदेव इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थीं। उन्होंने रामनाथ शास्त्री से जुड़े रोचक संस्मरण सुनाए। सत्रांत में डोगरी परामर्श मंडल के सदस्य श्री छत्रपाल ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

विचार सत्रों की अध्यक्षता क्रमशः प्रो. नीलांबर देव शर्मा और प्रो. वीणा गुप्ता ने की। इन सत्रों में डॉ. ओम गोस्वामी, श्री प्रकाश प्रेमी, प्रो. शशि पठानिया और श्री देशबंधु डोगरा 'नूतन' ने रामनाथ शास्त्री के जीवन, काव्य कहानी, अनुवाद और डोगरी आंदोलन के क्षेत्र में उनकी भूमिकाओं और योगदान का मूल्यांकन प्रस्तुत किया।

'गुजराती-हिंदी के अंतर्संबंध' विषयक संगोष्ठी

28 फ़रवरी-1 मार्च 2015, गाँधीनगर

साहित्य अकादेमी ने गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, गाँधीनगर के सहयोग से 28 फ़रवरी-1मार्च 2015 तक विवि परिसर में 'गुजराती-हिंदी के अंतर्संबंध' विषयक एक दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया।'

उद्घाटन सत्र में विवि के हिंदी विभाग के प्रोफ़ेसर डॉ. आलोक गुप्त ने आगत प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी के हिंदी परामर्श मंडल के संयोजक श्री सूर्य प्रसाद दीक्षित ने विषय प्रवेश करते हुए साहित्य अकादेमी द्वारा विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच स्वस्थ संबंधों को प्रोत्साहित करने हेतु ली गई अनेक पहलक़दमियों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपना अध्यक्षीय भाषण देते हुए हिंदी और गुजराती के बीच संबंधों के अनेक पहलुओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि विचारों, अवधारणाओं, शब्दों और ध्वनियों का यह विनिमय या पारस्परिकता असंख्य भारतीय भाषाओं को जीवंत और उसके अस्तित्त्व को बनाए रखने में मददगार होती है। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि गुजरात के महामहिम राज्यपाल श्री ओम प्रकाश कोहली ने साहित्य अकादेमी को इस बात के लिए धन्यवाद दिया कि उसने गाँधीनगर को इस महत्त्वपूर्ण संगोष्ठी के लिए चुना। इस अवसर पर विवि के कुलपति श्री एस. ए. बारी और गुजराती के प्रसिद्ध लेखक श्री रघुवीर चौधरी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। सत्रांत में साहित्य अकादेमी के उपसचिव श्री ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रो. शितांशु यश्चंद्र ने की, जिसमें श्री सतीश व्यास और श्री शंभुनाथ ने अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए गुजराती और हिंदी साहित्य को पुर्नजागरण काल का सम्मानित साहित्य बताया। द्वितीय सत्र 'गुजराती हिंदी भक्ति साहित्य' पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता श्री बलवंत जानी ने की। इस सत्र में श्री दलपत पाढ़ियार, श्री ब्रजेंद्र कुमार सिंघल, श्री राजेश पंड्या और श्री पूरनचंद टंडन ने क्रमशः 'गुजराती निर्गुण साहित्य', 'हिंदी निर्गुण साहित्य', 'गुजराती सगुण साहित्य' और 'हिंदी सगुण साहित्य' शीर्षक अपने आलेखों का पाठ किया। तृतीय सत्र 'गुजराती हिंदी साहित्य और गाँधी' पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता श्री नरेश वैद ने की। इस सत्र में श्रीमती उषा उपाध्याय, डॉ. अनामिका, श्री मनसुख सल्ला और डॉ. सत्यकाम क्रमशः 'गुजराती कविता और गाँधी', 'हिंदी कविता और गाँधी', 'गुजराती उपन्यास और गाँधी' तथा 'हिंदी उपन्यास और गाँधी' शीर्षक अपने आलेख प्रस्तुत किए। चतुर्थ सत्र 'स्वतंत्रता

के बाद का गुजराती-हिंदी साहित्य' पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता श्री महावीर सिंह चौहान ने की। इस सत्र में सर्वश्री विनोद जोशी, अवधेश प्रधान, भरत मेहता और शंभु गुप्त ने क्रमशः 'आधुनिकता और गुजराती साहित्य', 'आधुनिकता और हिंदी साहित्य', 'हाशिए के लोग और गुजराती साहित्य' और 'हाशिए के लोग और हिंदी साहित्य' शीर्षक अपने आलेखों का पाठ किया। समापन सत्र की अध्यक्षता श्री दिनकर जोशी ने की, जबकि समापन भाषण प्रो. नंद किशोर आचार्य ने दिया। संगोष्ठी के अंत में श्री संजीव कुमार दुबे ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

कवि प्रदीप जन्मशतवार्षिकी परिसंवाद

4 मार्च 2015, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा प्रख्यात हिंदी कवि एवं गीतकार कवि प्रदीप की जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में 4 मार्च 2015 को एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के आरंभ में कवि प्रदीप की बेटी मितुल प्रदीप ने एक स्लाइड शो के जरिए अपने पिता की पूरी जीवन यात्रा को बेहद सुरुचिपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया और अपने पिता से जुड़े कई सच्चे-झूठे तथ्यों को स्पष्ट किया। उन्होंने बताया कि पिता शिक्षक बनना चाहते थे, जो वह न बन सके, लेकिन अपने गीतों से उन्होंने एक अच्छे शिक्षक की ही भूमिका निभाई। देशभक्ति की अलखज्योत इलाहाबाद में शिक्षा के दौरान ही जग गई थी। चंद्रशेखर आज़ाद की हत्या का उनके किशोर हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ा था। बाद में गाँधी के व्यक्तित्व ने उन्हें बहुत प्रभावित किया। सुश्री मितुल ने कई पारिवारिक अनुभवों से स्पष्ट किया कि कवि प्रदीप विचारों में बेहद आधुनिक थे और देश और व्यक्तिगत नैतिक आदर्शों के लिए उन्होंने कभी भी कोई समझौता नहीं किया।

श्री रविकांत ने 'पैग़ाम' फ़िल्म के गीत "सुनो सुनो कैसा यह नया ज़माना" के उदाहरण से सिद्ध किया कि धार्मिक रूढ़ियों और आडंबर तथा बाज़ार के ख़तरों को कवि प्रदीप ने बहुत पहले ही समझ लिया था। श्री राजकुमार केसवानी ने उन्हें प्रगतिशील धारा का मानते हुए कहा कि समाज के ग़रीब तबक़े के प्रति उनकी विशेष निष्ठा थी और बिना किसी विचारधारा का झंडा उठाए उन्होंने इसे अपने गीतों में हमेशा प्रस्तुत किया। श्री प्रह्लाद अग्रवाल ने उनकी सामाजिक निष्ठा की तारीफ़ करते हुए कहा कि वे अपने गीतों में जन-जन की बात करते थे, इसीलिए उनके गीत जन-जन तक पहुँचे।

अंत में कार्यक्रम के अध्यक्ष कांति मोहन सोज़ ने उनकी संपूर्ण गीत यात्रा की विशद व्याख्या करते हुए स्पष्ट कहा कि हमें कवि प्रदीप को केवल देशभक्ति या धार्मिक गीतों के रचयिता के रूप में नहीं, बल्कि जीवन के विभिन्न पक्षों को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करनेवाले तथा फ़िल्मी गीतों की भाषा को बदलनेवाले गीतकार के रूप में याद रखना चाहिए। यह कवि प्रदीप की भाषा ही थी, जिससे प्रभावित होकर 1938 में महाकवि निराला ने *माधुरी* में उन पर एक लेख लिखा था।

अंत में धन्यवाद ज्ञापन करते हुए साहित्य अकादेमी के उपसचिव ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने कहा कि यह परिसंवाद कवि प्रदीप को उनकी जन्मशतवार्षिकी पर नए सिरे से समझने और जानने के लिए एक पहल है। भविष्य में इसके अच्छे परिणाम सामने आएँगे और पूरे देश में कवि प्रदीप को व्यापक दृष्टि से जाना एवं समझा जाएगा। कार्यक्रम में कवि प्रदीप की बेटियों के अतिरिक्त उनकी भतीजी सुश्री सीमा मेहता और उनके पति, कवि प्रदीप के मानस पुत्र श्री अविनाश पांडे, श्री सुरेश ऋतुपर्ण, श्री लीलाधर मंडलोई, श्री विष्णु नागर, श्री अरुण माहेश्वरी, श्री लक्ष्मी शंकर वाजपेयी आदि कई महत्त्वपूर्ण लेखक तथा पत्रकार उपस्थित थे।

'बोडो साहित्य में राष्ट्रवाद' पर परिसंवाद

14 मार्च 2015, कोकराझार

साहित्य अकादेमी और बोडोलैंड विश्वविद्यालय के बोडो विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में 14 मार्च 2015 को विश्वविद्यालय के बोडो विभाग में 'बोडो साहित्य में राष्ट्रवाद' पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र में अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. फुकन च. बसुमतारी ने आगत सभी प्रतिभागियों, श्रोताओं, छात्राओं और फ़ैकल्टी के सदस्यों का स्वागत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता बोडो विभागाध्यक्ष डॉ. इंदिरा बोरो ने की। विवि के अकादेमिक पंजीयक डॉ. गणेश च. वारी ने साहित्य अकादेमी की विद्वत मंडली की सराहना करते हुए उसके द्वारा भारतीय साहित्य के विकास के लिए किए गए कार्यों की प्रशंसा की। उन्होंने अपने संबोधन में बताया कि साहित्य अकादेमी अपनी प्राथमिकता में पूर्वोत्तर की भाषाओं, जैसे बोडो और अन्य छोटी भाषाओं को रखती है। मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित विवि के कुलपति प्रो. हेमंत कुमार बरुआ ने साहित्य अकादेमी के अभियान पर अपनी संतुष्टि अभिव्यक्त की। उन्होंने साहित्य अकादेमी को एक गतिशील ताक़त बताते हुए उसे भारतीय भाषाओं के बीच संबंध बनाने और विकसित करने हेतु एक सेतु बताया।

प्रथम विचार सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात बोडो साहित्यकार श्री जनिल कुमार ब्रह्म ने की। इस सत्र में डॉ. इंदिरा बोरो, डॉ. भौमिक च. बोरो और श्री मिहिर कुमार ब्रह्म ने अपने आलेखों का पाठ किया। इन वक्ताओं ने विभिन्न विषयों पर प्रकाश डालते हुए उन प्रबोधनात्मक मुद्दों को रेखांकित किया, जो बोडो साहित्य में प्रतिबिंबित हुए हैं। सत्र में प्रस्तुत किए गए सभी आलेखों का मुख्य उद्देश्य यह था कि बदलते सामाजिक परिदृश्य में साहित्यिक पीढ़ियाँ अपने आपको किस तरह से सकारात्मक और प्रभावी तरीक़े से प्रस्तुत कर सकें। सभी आलेखवाचक बोडो साहित्य में राष्ट्रवादी तत्त्वों के चित्रण की खोज करते हुए पाए गए। डॉ. इंदिरा बोरो ने बोडो गीतों में प्रतिबिंबित बोडो राष्ट्रवाद पर अपना आलेख प्रस्तुत किया, वहीं डॉ. भौमिक च. बोरो ने बोडो नाटकों में प्रतिबिंबित बोडो राष्ट्रवाद पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री मिहिर कुमार ब्रह्म ने जनिल कुमार ब्रह्म और हरिभूषण ब्रह्म की कहानियों का विशेष संदर्भ देते हुए उनमें प्रतिबिंबित बोडो राष्ट्रवाद पर प्रकाश डाला।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता गौहाटी विवि के बोडो विभाग में कार्यरत एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ. स्वर्गप्रभा चैनारी ने की। इस सत्र में डॉ. रुजाब मसाहरी, डॉ. राहेल मसाहरी और डॉ. गगन ब्रह्म कछारी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. रुजाब मसाहारी ने बोडो कविताओं में प्रतिबिंबित राष्ट्रवाद के कुछ उदाहरणों का संदर्भ देते हुए अपने विचार प्रकट किए। डॉ. राहेल मसाहारी ने विषय पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए उसका सूक्ष्म पर्यवेक्षण प्रस्तुत किया। डॉ. गगन ब्रह्म कछारी ने बोडो समाज में व्याप्त नृजातीय राष्ट्रवाद पर प्रकाश डाला। प्रो. चैनारी ने सत्र में प्रस्तुत आलेखों में अभिव्यक्त मुद्दों पर अपने विचार व्यक्त करते हुए संगोष्ठी का समाहार किया।

'पश्चिम बंगाल के बोडोस (मेस्स) की सांस्कृतिक और भाषाई पहचान : भूमंडलीकरण के चेहरे की तलाश' विषयक परिसंवाद

15 मार्च 2015, नरसिंहपुर, पश्चिम बंगाल

साहित्य अकादेमी और जलपाईगुड़ी के पश्चिम बंग बोडो साहित्य सभा के संयुक्त तत्त्वावधान में 15 मार्च 2015 को पश्चिम बंगाल के अलीपुरद्वार के फलकट्टा के नरसिंहपुर में 'पश्चिम बंगाल के बोडोस (मेस्स) की सांस्कृतिक और भाषाई पहचान : भूमंडलीकरण के चेहरे की तलाश' विषयक एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता पश्चिम बंगाल बोडो साहित्य सभा के अध्यक्ष श्री ज्ञान सिंह बसुमतारी ने की। साहित्य अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. फुकन चंद्र बसुमतारी ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। सत्र का उद्घाटन आरबीआई के पूर्व महाप्रबंधक श्री बाबूराम करजई ने किया। साहित्य अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. स्वर्ण प्रभा चैनारी ने बीज भाषण प्रस्तुत किया। एनबीयू के एसोसिएट प्रोफ़ेसर डॉ. दीपल कुमार रॉय ने अपना भाषण प्रस्तुत करते हुए कहा कि विभिन्न कार्यक्रमों के ज़रिए बोडो भाषा और साहित्य का पूरे राज्य में तब तक अधिकाधिक प्रयोग किया जाना चाहिए, जब तक कि पश्चिम बंगाल की सरकार इसे राज्य भाषा के रूप में मान्यता न दे दे। सत्रांत में बालेंद्र मसाहरी ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम विचार सत्र की अध्यक्षता डॉ. रुद्र कुमार ईश्वरी ने की। श्री सुबीन साईबा ने समाज में बोडो भाषा के प्रोत्साहन पर ज़ोर दिया। श्री विद्युत बसुमता ने पश्चिम बंगाल में बोडो भाषा के विस्तार में होनेवाली कठिनाइयों पर चर्चा की। श्री असित बरन नाज़ारि ने पश्चिम बंगाल में बोडो भाषा की वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला और राज्य में इसका प्रसार कैसे हो, इस पर चर्चा की।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता डॉ. फुकन चंद्र बसुमतारी ने की। श्री रमेश चंद्र सुबा ने बोडो संस्कृति पर चर्चा करते हुए उसे समृद्ध संस्कृति बताया। उन्होंने कहा कि बोडो भाषा को देश के स्तर पर व्यापक रूप से विस्तारित करने की ज़रूरत है और इस संबंध में पश्चिम बंगाल सरकार के समर्थन को उन्होंने आवश्यक बताया। श्री सत्येंद्र नाथ मंडल ने बोडो संस्कृति की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। उन्होंने बोडो संस्कृति को समृद्ध तथा अपने आप में अनूठी संस्कृति बताया। श्री सतीश चंद्र नाजिनैरी ने बोडो संस्कृति के रीति-रिवाजों पर प्रकाश डाला।

समापन सत्र में श्री गंभीर सिंह बसुमाता ने सत्र में हुई सारी कार्यवाहियों पर संक्षेप में विश्लेषण प्रस्तुत किया। उन्होंने बोडो भाषा और संस्कृति को समृद्ध बताते हुए समाज में इसके प्रयोग पर बल दिया और विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के ज़रिए पूरे देश में इसको फैलाने की बात की। उन्होंने साहित्य अकादेमी को अपना समर्थन देने के लिए धन्यवाद दिया और उन्होंने उन सभी विद्वानों, पदाधिकारियों, श्रोताओं और लोगों का भी धन्यवाद ज्ञापन किया, जिन्होंने इस आयोजन में भाग लेकर इस परिसंवाद को बड़ी सफलता दिलाई। अंत में श्री श्याम साईबा ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

वहाब पैरी पर संगोष्ठी

18-19 मार्च, 2015, श्रीनगर

साहित्य अकादेमी ने 18-19 मार्च 2015 कश्मीर विवि के शैखुल आलम केंद्र के मरकज-ए-नूर सभागार में उन्नीसवीं शताब्दी के प्रसिद्ध कश्मीरी कवि और अनुवादक वहाब पैरी पर एक दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी का उद्घाटन कश्मीर विवि के अकादेमिक मामलों के डीन प्रो. एम. अशरफ़ वानी ने किया, जबकि सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध कश्मीरी कवि और साहित्य अकादेमी के फ़ेलो प्रो. रहमान राही ने की। प्रो. अशरफ़ वानी ने वहाब पैरी पर बोलते हुए कहा कि उनकी कविताएँ 19वीं शताब्दी के कश्मीर के इतिहास को जानने के लिए विश्वसनीय स्रोत मानी जा सकती हैं। उन्होंने विश्वविद्यालयों से कश्मीरी साहित्य के ऐसे तेजस्वी व्यक्तित्वों पर शोधोन्मुख परियोजनाओं की पहल करने पर ज़ोर दिया। इस अवसर पर प्रो. शाद रमजान ने बीज भाषण प्रस्तुत किया।

आरंभ में कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. मोहम्मद ज़मान आजुर्दा ने अपने स्वागत भाषण में साहित्य अकादेमी द्वारा कश्मीरी भाषा के प्रोत्साहन हेतु

उठाई गई पहलक़दमियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला। प्रो. रहमान राही ने अध्यक्षीय भाषण में वहाब पैरी को एक असाधारण और महान कवि बताया। साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मुशताक़ सदफ़ ने सत्रांत में धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता मोहम्मद अहसन अहसान ने की। इस सत्र में सर्वश्री इक़बाल फ़हीम, बशर बशीर और ग़ुलाम नबी आतिश ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. इक़बाल नाज़की ने की। इस सत्र में सर्वश्री अब्दुल अहद हाजिनी, शहबाज़ हकबारी, रंजूर तिलगामी और मजरुह राशिद ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। तृतीय सत्र में केंद्रीय विवि के कुलपति प्रो. मेहराजुद्दीन बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित थे। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. एम. अशरफ वानी ने की, वहीं इस सत्र में श्री अली मोहम्मद निस्तार और श्री अज़ीज़ हाजिनी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे दिन चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता प्रो. मिशैल सुल्तानपुरी ने की। इस सत्र में सर्वश्री मरगूब बानिहाली, मोहम्मद शफ़ी शाकिर और शफ़ाकत अल्ताफ़ ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। पंचम सत्र की अध्यक्षता प्रो. मोहम्मद ज़मान आज़ुर्दा ने की। इस सत्र में मिशैल सुल्तानपुरी, ग़ुलाम नबी आतिश और ग़ुलाम हसन तसक़ीन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। छठे और अंतिम सत्र की अध्यक्षता ग़ुलाम नबी गौहर ने की, जिसमें सर्वश्री अयाज रसूल नाज़की, नूर मोहम्मद आदिल और सब्बीर अहमद ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

'वैश्विक संदर्भ में आधुनिक संस्कृत कविता' पर संगोष्ठी

19 मार्च 2015, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने 19 मार्च 2015 को अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में 'वैश्विक संदर्भ में आधुनिक संस्कृत कविता' पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया।

साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने उद्घाटन सत्र में आगत प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत करते हुए संस्कृत साहित्य की समृद्ध विरासत पर संक्षेप में प्रकाश डाला और कहा कि दुनिया की कोई भी भाषा और साहित्य संस्कृत साहित्य से बहुत कुछ सीख सकता है। श्री रमाकांत शुक्ल ने अपना अध्यक्षीय भाषण देते हुए संस्कृत की जनश्रुतियों के निर्माण और अभिव्यक्ति पर प्रकाश डाला। अपने उद्घाटन भाषण में श्री अभिराज राजेन्द्र मिश्रा ने इस प्रचलित मान्यता को खारिज किया कि संस्कृत एक मृत भाषा है। उन्होंने वैश्विक संदर्भ में इस भाषा के अध्ययन की आवश्यकता पर बल दिया। प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने अपने बीज भाषण में बताया कि संस्कृत के विद्वानों और इसके प्रयोगकर्ता को चाहिए कि वे अपने प्रयासों द्वारा संस्कृत भाषा को आधुनिक समय के अनुरूप प्रासंगिक बनाएँ और इसे वर्तमान में अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए हर संभव प्रयत्न करें। सत्रांत में अकादेमी के उपसचिव श्री ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री राजेंद्र नानावती ने की। इस सत्र में श्री भागीरथी नंद, श्रीमती मंजुलता शर्मा और श्री विजय पांड्या जैसे विद्वानों ने अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए आधुनिक संदर्भों में अलंकार और बिंब पर चर्चा की। दूसरा सत्र 'उत्तर आधुनिक आलोचना और समकालीन संस्कृत काव्य' पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता प्रो. हरिदत्त शर्मा ने की। इस सत्र में सर्वश्री नीरज शर्मा, बजरंग बिहारी तिवारी और प्रवीण पंड्या ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। तीसरा सत्र 'आधुनिक आलोचना और संस्कृत साहित्य' पर केंद्रित था। इस सत्र की अध्यक्षता श्री हर्षदेव माधव ने की, जिसमें श्री अरुण रंजन मिश्रा, श्रीमती सरोज कौशल और श्री प्रभुनाथ द्विवेदी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

'पूर्वोत्तर भारत का समकालीन साहित्य' विषयक परिसंवाद

20 मार्च 2015, पणजी

साहित्य अकादेमी ने भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय और पश्चिम क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र, उदयपुर के सहयोग से 20 मार्च 2015 को पणजी स्थित कम्पाल के कला अकादमी में 'पूर्वोत्तर भारत का समकालीन साहित्य' विषयक पर एक परिसंवाद का आयोजन किया।

कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक श्री तानाजी हलर्णकर ने परिसंवाद में आगत लेखक प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया। मणिपुरी की प्रख्यात लेखिका श्रीमती मैमचोबी अरमबम ओङबी ने कार्यक्रम का उद्घाटन किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता ख्यातिप्राप्त कोंकणी लेखक श्री पुंडलिक नाइक ने की। श्री नाइक ने कहा कि साहित्य में भौगोलिक सीमाओं का अतिक्रमण करने की क्षमता होती है। उन्होंने कहा कि साहित्य का उद्देश्य सिर्फ़ पाठकों को आनंदित करना ही होता, बल्कि वह पाठकों के मस्तिष्क को भी संस्कारवान बनाता है। सत्रांत में श्री रत्नाकर पाटिल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

इस अवसर पर असमिया में श्री अतनु भट्टाचार्य, बोडो में श्री गोपीनाथ ब्रह्म, मणिपुरी में श्री बुद्धिचन्द्र हेशनाम और श्री सुभाष राई ने नेपाली में अपनी कविताओं का पाठ किया। कविता पाठ के बाद श्री दिलीप चंदन ने असमिया में 'समकालीन असमी साहित्य', श्री अनिल बोरो ने बोडो में 'समकालीन बोडो साहित्य', श्री के. कुंजो सिंह ने मणिपुरी में 'समकालीन मणिपुरी साहित्य' और श्री ज्ञान बहादुर छेत्री ने नेपाली में 'समकालीन नेपाली साहित्य' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

'कोंकणी की साहित्यिक आलोचना' पर संगोष्ठी

22 मार्च 2015, पणजी

साहित्य अकादेमी ने पणजी के इंस्टीट्यूट ऑफ मेनेज़ेज ब्रगेंजा के सहयोग से 22 मार्च 2015 को पणजी के मेनेज़ेज ब्रगेंजा सभागार में कोंकणी की साहित्यिक आलोचना पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया।

इस अवसर पर कोंकणी परामर्श मंडल की सदस्या श्रीमती हेमा नाईक ने आगत लेखक प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया। प्रसिद्ध आलोचक श्री एस. एस. नाडकर्णी ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। उन्होंने गुणवत्तापूर्ण या स्वस्थ्य आलोचना को साहित्यिक विकास में सहायक बताया और कहा कि एक स्वस्थ आलोचना गुणवत्तापूर्ण साहित्यिक मानदंड भी स्थापित करती है। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक श्री तानाजी हलर्णकर ने कोंकणी की वर्तमान साहित्यिक आलोचना पर असंतुष्टि जताई और कहा कि इसमें विश्लेषण की स्पष्टता और तुलनात्मक अध्ययन का अभाव है। इंस्टीट्यूट के अध्यक्ष श्री संजय हरमालकर कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि उपस्थित थे। सत्रांत में श्री रत्नाकर पाटिल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री दामोदर माउजो ने की। इस सत्र में श्री प्रकाश वाजरिकर, श्रीमती रमिता गौरव और श्री शांताराम वर्ध वालवालिकर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। द्वितीय सत्र 'कोंकणी की साहित्यिक आलोचनाः चुनौतियाँ और सीमाएँ' पर केंद्रित था। इस सत्र में श्री रमेश पयुनुरपै, श्री एच.एम. पेरनल और श्री बालकृष्ण कानोलकर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय की 175 वीं जयंती पर संगोष्ठी

23-24 मार्च 2015, कोलकाता

साहित्य अकादेमी द्वारा 23-24 मार्च 2015 को अकादेमी सभागार, कोलकाता में प्रख्यात बाङ्ला साहित्यकार बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय की 175 वीं जयंती के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

आरंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने स्वागत भाषण करते हुए बंकिमचंद्र के बाङ्ला भाषा

और साहित्य में दिए गए योगदान पर संक्षेप में प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि बंकिमचंद्र का साहित्य विविधताओं से भरा हुआ है। बंकिमचंद्र ने बाङ्ला में 13 उपन्यास, अनेक गंभीर साामाजिक, राजनीतिक, व्यंग्य और आलोचनात्मक लेख लिखे हैं। उनके साहित्य का भारत की विभिन्न भारतीय भाषाओं में और अंग्रेज़ी में अनुवाद हुआ है। डॉ. राव ने बंकिमचंद्र की अपने समय के सामाजिक अंधविश्वासों, कर्मकांडों के प्रति आलोचनात्मक रवैये का भी विश्लेषण प्रस्तुत किया।

अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने विषय प्रवेश *दुर्गेशनंदिनी* की प्रथम पंक्ति से किया, जो मार्च 1865 में प्रकाशित हुई थी। उन्होंने बंकिमचंद्र के साहित्य को व्यापक रूप में उद्धृत करते हुए श्रोताओं को बंकिमचंद्र की विविध अभिरुचियों से अवगत कराया। उन्होंने बंकिमचंद्र के ऐतिहासिक उपन्यासों की विषयवस्तु पर भी संक्षेप में प्रकाश डाला और बंकिमचंद्र पर रवींद्रनाथ ठाकुर द्वारा लिखे अंशों को भी उद्धृत किया। प्रसिद्ध अनुवादक और विद्वान प्रो. मानवेंद्र मुखोपाध्याय ने बंकिमचंद्र की विषय-वस्तु की विविधता पर प्रकाश डाला। उन्होंने बंकिमचंद्र के जीवन और पत्राचार से संबंधित अनेक दृष्टांतों से श्रोताओं को अवगत कराया। प्रो. बंद्योपाध्याय ने कहा कि यद्यपि अनेक लोग मानते हैं कि बंकिमचंद्र अंधविश्वासी हिंदू समाज के प्रतिनिधि लेखक हैं। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि बंकिमचंद्र ने उन अंधविश्वासों की प्रासंगिकता के प्रति अनेक सवाल भी उठाए।

विश्व-भारती विवि के पूर्व कुलपति प्रो. सव्यसाची भट्टाचार्य ने बीज भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने बंकिमचंद्र के समाजशास्त्रीय अध्ययन पर ज़ोर दिया। उन्होंने बंकिमचंद्र की याद में टैगोर द्वारा 1894 में एक शोक सभा मनाने को याद किया। टैगोर यह महसूस करते थे कि बंकिमचंद्र को उनके अवदान के बदले कुछ नहीं मिला। बंकिमचंद्र ने मानवशास्त्रीय और समाजशास्त्रीय विषयों पर लिखा, जिसमें समाज में फैली जाति-प्रथा और महिलाओं की भूमिका प्रमुख है। प्रो. भट्टाचार्य ने बंकिमचंद्र की 'जाति' और 'अर्थशास्त्र' का भी विश्लेषण प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के पूर्व सचिव और प्रसिद्ध विद्वान प्रो. इंद्रनाथ चौधुरी ने संगोष्ठी में अन्य वक्ताओं द्वारा दिए गए वक्तव्य पर अपनी समीक्षा प्रस्तुत की, उन्होंने कहा कि टैगोर बंकिमचंद्र के नैतिक उपदेशों को पसंद नहीं करते थे। बंकिमचंद्र ने हमारी प्राचीन विरासत को पुनर्परिभाषित करने का काम किया। डॉ. चौधुरी ने कहा कि बंकिमचंद्र अपने गद्य के ज़रिए आधुनिकता के संदेशवाहक माने जा सकते हैं। प्रो. चौधुरी ने बंकिमचंद्र के उपन्यासों पर मानवता, धर्म, तर्क और देशभक्ति के संदर्भों से चर्चा की। उन्होंने बंकिमचंद्र के साहित्य में चित्रित पात्रों पर भी संक्षेप में एक विश्लेषण प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी कोलकाता कार्यालय प्रभारी श्री गौतम पॉल ने सत्रांत में धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

इन वक्तव्यों के बाद श्री सत्यजित चौधुरी द्वारा संपादित पुस्तक *बंकिमचंद्र 175* का वक्तओं लोकार्पण द्वारा किया गया। श्री चौधुरी ने इस पुस्तक की रचना में योगदान देने के लिए प्रो. तपन बंद्योपाध्याय और सुश्री यशोधरा बागची को भी याद किया।

संगोष्ठी सात सत्रों में विभाजित थी, जिनमें वक्ताओं ने बंकिमचंद्र के साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री सत्यजित चौधरी ने की, जिसमें श्रीमती अनिता अग्निहोत्री, श्री सैकत रक्षित और श्री सुब्रत मुखोपाध्याय ने अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए *कपाल कुंडला, मृणालिनी* और *दुर्गेशनंदिनी* पर प्रकाश डाला। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता प्रो. सुमिता चक्रवर्ती ने की, जिसमें श्री अनिंद्य भट्टाचार्य, श्री अबुल बशर और श्रीमती तृप्ति संता ने *बिषवृक्ष, जुगलान गुड़िया* और *इंदिरा* पर प्रकाश डाला। तृतीय सत्र की अध्यक्षता श्री मानवेंद्र मुखोपाध्याय ने की, जिसमें श्री श्यामपद चक्रवर्ती और श्री स्वप्नमय चक्रवर्ती ने अपने आलेख

प्रस्तुत करते हुए *रजनी, चंद्रशेखर* और *कमलाकांतेर दफ्तर* पर प्रकाश डाला।

द्वितीय दिन के चौथे सत्र की अध्यक्षता डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने की, जिसमें श्री बसव दासगुप्ता, श्री सदन चट्टोपाध्याय और स्वामी शास्त्रज्ञांद ने अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए *राजसिंह, कृष्णकांतेर विल* और *आनंद मठ* पर प्रकाश डाला। पाँचवे सत्र की अध्यक्षता श्री तपन मुखोपाध्याय ने की, जिसमें श्रीमती अनिंदिता गोस्वामी, श्री अभिहित तरफ़दार और प्रो. रूपा गुप्ता ने अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए *राधारानी, सीताराम* और *देवी चौधरानी* पर प्रकाश डाला। छठे सत्र की अध्यक्षता श्री ब्रजगोपाल राय ने की, जिसमें प्रो. विकास राय, प्रो. विश्वजित राय और प्रो. देवलीना सेठ ने अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए *विविध समालोचना, लोक रहस्य* और *बंगदर्शन* पर अपने विचार प्रकट किए। सातवें और अंतिम सत्र में श्री कुमार राणा, श्री मानस कुंडु और प्रो. सत्यवती गिरि ने अपने आलेख प्रस्तुत करते हुए *साम्य, मुंशीराम गुररे जीवनचरित्र* और *कृष्णचरित्र* पर प्रकाश डाला। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. आलोक राय ने की।

'असम के नाट्य साहित्य' पर परिसंवाद

26 मार्च 2015, तिनसुकिया

साहित्य अकादेमी ने असम नाट्य सम्मेलन के सहयोग से 26 मार्च 2015 को तिनसुकिया के मैकुम कॉलेज में 'असमिया के नाट्य साहित्य' पर एक परिसंवाद का आयोजन किया।

असम नाट्य सम्मेलन के महासचिव श्री श्याम सुंदर खाउंद ने परिसंवाद में उपस्थित लेखकों और साहित्य प्रेमियों का औपचारिक स्वागत किया। कार्यक्रम में सर्वप्रथम इंद्र बनिया के निधन पर 2 मिनट का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। परिसंवाद की शुरुआत असम नाट्य सम्मेलन के मैकुम शाखा के सदस्यों के समूह गान से हुई। श्री अमूल्य खतनियार ने सत्र की अध्यक्षता की। असम नाट्य सम्मेलन के उपाध्यक्ष श्री नाज़िम अहमद ने नाट्य सम्मेलन का परिचय कराते हुए कहा कि इस संस्थान ने असम में नाट्य आंदोलन को आगे बढाया तथा नाट्य गतिविधियों पर भी लिखा। कार्यक्रम का उद्घाटन मशहूर शिक्षाविद् की जतिन्द्र नाथ दोवारह ने किया। साहित्य अकादेमी के कार्यकारी मंडल की सदस्या डॉ. करबी डेका हज़ारिका ने अपना आरंभिक भाषण देते हुए कहा कि साहित्य अकादेमी इस परिसंवाद को आयोजित करने का अवसर पाकर अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव कर रही है। विगत वर्ष में साहित्य अकादेमी द्वारा पूरे भारत में वर्ष भर में 466 कार्यक्रम आयोजित किए गए। 'नाट्य साहित्य' और 'नाट्य कला' नाटक के 2 प्रकार हैं। गुणभिराम बरुआ ने 'रामनवमी' लिखकर असम की जनता को एक सफल नाटक दिया। लक्ष्मीनाथ बेजबरुआ ने अपने नाटकों के माध्यम से असमिया नाट्य साहित्य को एक गति प्रदान की। नाटकों के संदर्भ में भी दुलाल राय ने कालिदास, शेक्सपीयर, जीबी शॉ, शंकरदेव, माधवदेव का उदाहरण दिया। उनके अनुसार नाटक निश्चित रूप से साहित्य है। श्री गौतम पॉल ने सत्रांत में धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री पुण्य सइकीया ने की। इस सत्र में श्री प्रभात गोस्वामी ने 'आधुनिक असमिया नाटककार की विकास समस्या' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने असमिया नाटकों के विकास पर प्रारंभिक काल से ही प्रकाश डाला। 'अंकीया नाट' को असमिया नाटक का श्रेष्ठ रूप माना जाता था। ज्योति प्रसाद के काल में काव्यात्मक नाटक ने जन्म लिया। अम्बिका गिरि रायचौधुरी के समय में देशभक्तिपूर्ण नाटकों की रचना की शुरुआत हुई। गुवाहाटी दूरदर्शन केन्द्र ने भी असमिया नाटकों को प्रस्तुत करना शुरू किया। उन्होंने पेशेवर और गैर-पेशेवर नाटकों में अंतर बताते हुए मोबाइल थिएटर ग्रुप को पेशेवर नाटक के उदाहरण के तौर पर पेश किया, जबकि अन्य नाटकों को गैर पेशेवर बताया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री सेबाब्रत बरुआ ने की और दिगंत दत्ता ने 'नाट्य कला बात्याय अरु परिमंडलर सिद्धांत' विषय पर अपना पर्चा प्रस्तुत किया। उन्होंने युवा नाट्य कालाकारों पर आधारित अपने अनुभवों को साझा किया। समापन सत्र की अध्यक्षता मशहूर असमिया लेखक होरेन्द्रनाथ वरठाकुर और सोमरपीठ मंडल ऑफ़ असम नाट्य सम्मेलन के अध्यक्ष श्री हेमेन नीयोग ने की। श्री नीयोग ने परिसंवाद पर अपनी हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की। श्री वरठाकुर ने अपनी खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि इस महत्त्वपूर्ण परिसंवाद के माध्यम से बहुत सारे नाटककारों से एक ही जगह पर मिलने का सुयोग प्राप्त हुआ। उन्होंने कहा कि नाटक सिर्फ पढ़ने या आनंद प्रदान करनेवाली चीज़ नहीं है, बल्कि यह एक साहित्य है। इसीलिए परिसंवाद में सभी ने नाटक को साहित्य के रूप में स्वीकार किया।

'असमिया साहित्यिक आलोचना की प्रवृत्ति' पर संगोष्ठी

27 मार्च 2015, डिब्रूगढ़

साहित्य अकादेमी ने मुनीन बरकतकी की जन्मशतावार्षिकी के अवसर पर डिब्रूगढ़ विवि के सहयोग से 27 मार्च 2015 को डिब्रूगढ़ विवि में 'असमिया साहित्यिक आलोचना की प्रवृत्ति' पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया।

आरंभ में अकादेमी के कोलकाता कार्यालय प्रभारी श्री गौतम पॉल ने आगत अतिथियों और प्रतिष्ठित व्यक्तियों का स्वागत किया तथा असमिया साहित्य में मुनीन बरकतकी के योगदान पर संक्षेप में प्रकाश डाला। मुनीन बरकतकी (1915-1993) एक बहुमुखी प्रतिभा संपन्न व्यक्ति थे। वे साहित्य, पत्रकारिता, रंगकर्म, पेंटिंग्स, खेल, फिल्म, संगीत के धुरंधर तो थे ही साथ ही उनकी राजनीति में भी रुचि थी। उनकी 12 कहानियाँ और रेखाचित्र, पाँच कविताएँ, एक एकांकी, विविध आलेख, टिप्पणियाँ, पत्र समीक्षाएँ, संपादक के नाम पत्र और एक जीवनीपरक अध्ययन पुस्तक (विस्मृत व्यक्तिक्रम) सभी कुछ प्रकाशित हो चुके हैं। मुनीन बरकतकी ने असम के साहित्यिक परिदृश्य पर अपनी एक अमिट छाप छोड़ी है।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रो. करबी डेका हज़ारिका ने की। डिब्रूगढ़ विवि के असमिया विभागाध्यक्ष प्रो. निरंजन महंत ने आरंभिक भाषण देते हुए मुनीन बरकतकी की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। असम साहित्य सभा के पूर्व अध्यक्ष और मशहूर असमिया लेखक डॉ. नगेन सइकीया ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। अपने संक्षिप्त भाषण में डॉ. सइकीया ने मुनीन बरकतकी का जीवन परिचय देते हुए उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। उन्होंने बरकतकी को असम के एक मशहूर, संपन्न परिवार में पैदा होनेवाले एक ऐसे शख्स थे, जिन्होंने असमिया साहित्य को आधुनिक आलोचना से समृद्ध किया। बरकतकी ने अपने स्कूल के दिनों से ही साहित्य आरंभ कर दिया था। 'विस्मृत व्यतिक्रम' उनकी एकमात्र ऐसी रचना है, जो उनके जीवन काल में प्रकाशित हो सकी। मुनीन बरकतकी असमिया साहित्य में मुख्य रूप से एक आलोचक के रूप में याद किए जाते हैं। असमिया में विधिवत आलोचना की शुरुआत 60 के दशक में बेनीकांत काकती से हुई। श्री नगेन सइकीया ने मुनीन बरकतकी के लेखन/आलोचना पर पश्चिमी आलोचक मैथ्यू आरनोल्ड और टीएस इलियट के प्रभाव को रेखांकित किया। श्री सइकीया ने असमी साहित्यिक आलोचना के महत्त्वपूर्ण स्तम्भों भबेन बरुआ, केबिन फुकन, हीरेन गोहाईं और आनंद बरमुदै का उल्लेख किया।

डिब्रूगढ़ विवि के प्रोफेसर आनंद बरमुदै ने अपना बीज भाषण प्रस्तुत किया। अपने भाषण के जरिए प्रो. बरमुदै ने मुनीन बरकतकी आलोचना पर टी. एस. इलियट के प्रभाव पर प्रकाश डाला। बरकतकी ने अपनी 'ऐतिह्य और आधुनिकता' में टी. एस. इलियट को विशेष रूप से उद्धृत किया है। मुनीन बरकतकी अपने आलेखों के

माध्यम से असमी साहित्य के एक स्तंभ के रूप में परिलक्षित होते हैं। प्रो. बरमुदै ने असमिया आलोचना के इतिहास लेखन की आवश्यकता पर बल दिया। उद्घाटन सत्र का धन्यवाद ज्ञापन श्री सत्यकाम बरठाकुर ने किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता उपेन्द्र बरकतकी ने की। उन्होंने अपने भाषण में मुनीन बरकतकी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि मुनीन बरकतकी अपने 'विस्मृत व्यतिक्रम' के ज़रिए लोकप्रिय हुए। उन्होंने युवा आलोचकों को भी प्रोत्साहित किया। उन्होंने मुनीन बरकतकी को आलोचनात्मक पत्रकारिता का एक महत्त्वपूर्ण स्तंभ कहा। प्रथम सत्र में अपना आलेख 'मुनीन बरकतकी का साहित्य' प्रस्तुत करते हुए अनुराधा शर्मा ने ने मुनीन बरकतकी के व्यक्तित्व की कुछ झलकियाँ प्रस्तुत की। दूसरा आलेख डॉ. जयंत कुमार बोरा ने प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने 'असम की जीवनियाँ और मुनीन बरकतकी की विस्मृत व्यतिक्रम' पर प्रकाश डाला। अपने आलेख के जरिए डॉ. बोरा ने असम की जीवनियों के विकास पर प्रकाश डाला।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता श्री सतीश चंद्र भट्टाचार्य ने की। अपने संक्षिप्त भाषण में डॉ. भट्टाचार्य ने असमिया साहित्य की आलोचना में योजनाबद्ध अध्ययन का अभाव बताया। उन्होंने कहा कि बीसवीं शताब्दी के मध्य से असम की साहित्यिक आलोचना में एक नई प्रवृत्ति की शुरुआत होती है। इस संदर्भ में उन्होंने हीरेन गोहाईं, भवेन बरुआ, गोविंद प्रसाद शर्मा जैसे प्रमुख आलोचकों का नाम लिया। द्वितीय सत्र का पहला पर्चा प्रस्तुत करते हुए श्रीमती गीताश्री तमुली ने आधुनिक असमिया आलोचना की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला। गीताश्री तमुली ने असम का पहला समाचारपत्र *अरुणोदय* से असम की आलोचनात्मक परंपरा की शुरुआत का उल्लेख किया। सत्र का दूसरा आलेख प्रस्तुत करते हुए दिव्यज्योति बोस ने असम की समकालीन आलोचना की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला। समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो. भीमकांत बरुआ ने की। उन्होंने अपने भाषण में साहित्य को पूर्वाग्रह से मुक्त रहना चाहिए इस बात पर प्रकाश डाला। बरुआ के अनुसार पाठक ही साहित्य के असली आलोचक होते हैं। मुख्य वक्ता के तौर पर बोलते हुए श्री बसंत कुमार गोस्वामी ने असम की वर्तमान साहित्यिक आलोचना पर अपना मूल्यवान भाषण प्रस्तुत किया। उन्होंने 'पाठ आधारित आलोचना' की विशेषकर चर्चा की और इसके लिए असमिया साहित्य से कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए। डॉ. गोस्वामी ने समकालीन आलोचना की प्रवृत्तियों की चर्चा पर ज़्यादा ज़ोर दिया।

अज्ञेय के गद्य लेखन पर परिसंवाद

27 मार्च 2015, कुशीनगर

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली ने अज्ञेय भारती संस्थान और श्रद्धानिधि ट्रस्ट, गोरखपुर के सहयोग से 27 मार्च 2015 को 'अज्ञेय' का गद्य लेखन' पर एक परिसंवाद का आयोजन किया।

इस अवसर पर भारती संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष श्री महेश्वर मिश्रा ने आगत प्रतिभागियों और श्रोताओं का स्वागत किया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अपने आरंभिक भाषण में अज्ञेय के साहित्यिक योगदान में विविधता पर प्रकाश डाला। हिंदी के प्रसिद्ध कवि और विद्वान डॉ. केदारनाथ सिंह ने अपना अध्यक्षीय भाषण देते हुए अज्ञेय के उपन्यासों में कल्पना और मानववाद के अद्भुत सम्मिश्रण पर प्रकाश डाला। श्री चित्तरंजन मिश्र ने अपना बीज भाषण देते हुए वर्तमान युग में अज्ञेय के उपन्यासों की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला।

परिसंवाद का प्रथम सत्र 'अज्ञेय का कथा साहित्य' और द्वितीय सत्र पर केंद्रित 'अज्ञेय का कथेतर गद्य' था।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात कवि और ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित और डॉ. केदारनाथ सिंह ने की। डॉ. चितरंजन मिश्र ने विषय प्रवर्तन किया। इस सत्र में

श्री गोविंद मिश्र, श्री शीन क़ाफ निज़ाम, डॉ. कृष्णचंद्र लाल, डॉ. रेवती रमण ने वक्तव्य दिया। द्वितीय का अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्षत डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने की। विषय प्रवर्तन डॉ. अरुणेश नीरन ने किसा। सत्र में डॉ. रामदेव शुक्ल, डॉ. सदानंद गुप्त, डॉ. अनंत मिश्र और डॉ. अनिल राय ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किए।

श्रद्धानिधि न्यास की तरफ़ से डॉ. दयानिधि मिश्र ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। संगोष्ठी का संचालन अकादेमी के उपसचिव श्री ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने किया।

'लक्ष्यधर चौधुरी और उनका समकालीन नाट्य साहित्य' विषयक परिसंवाद

29 मार्च 2015, गुवाहाटी

साहित्य अकादेमी ने असम नाट्य सम्मेलन के सहयोग से 29 मार्च 2015 को गुवाहाटी के स्टेट म्यूज़ियम कॉन्फ्रेंस हॉल में 'लक्ष्यधर चौधुरी और उनका समकालीन नाट्य साहित्य' विषयक एक परिसंवाद का अयोजन किया।

आरंभ में असम नाट्य सम्मेलन के अध्यक्ष श्री दुलाल राय ने स्वागत भाषण करते हुए लक्ष्यधर चौधुरी के जीवन और तत्कालीन समय में नाट्य क्षेत्र की समस्या और उसके विकास पर चर्चा की। डॉ. रमेश पाठक ने सत्र की अध्यक्षता करते हुए परिसंवाद में आगत श्रोताओं का प्रतिभागियों से परिचय कराया। स्वर्गीय लक्ष्यधर चौधुरी के सुपुत्र डॉ. अमरज्योति चौधुरी ने अपने पिता से संबंधित अनेक महत्त्वपूर्ण बातें बताईं। उन्होंने बताया कि राजनीति और नाटक दोनों समानांतर सामाजिक सेवा के माध्यम हैं और दोनों आम जनता की सेवा के लिए ही तत्पर हैं, इसलिए दोनों के बीच में एक अच्छा पारस्परिक संबंध है।

विचार सत्र की अध्यक्षता डॉ. शैलेन भराली ने की। भराली ने कहा कि वे परिसंवाद के विषय के कोई बहुत बड़े जानकार नहीं है। इसके बावजूद उन्होंने लक्ष्यधर चौधुरी और उनके समकालीन नाट्य साहित्य पर बहुत ही मूल्यवान बातें कहीं। श्री अरुण शर्मा ने लक्ष्यधर चौधुरी के नाटकों का विश्लेषण करते हुए कहा कि चौधुरी और उनके समकालीन असमी नाटककारों पर बाङ्ला नाटकों का गहरा प्रभाव है। परिसंवाद के एक अन्य प्रतिभागी श्रीमती लीलासेन तालुकदार ने लक्ष्यधर चौधुरी के नाटकों पर अपने विचार प्रकट किए। श्री अंजनज्योति चौधुरी ने लक्ष्यधर चौधुरी के नाटकों पर संगीतमय भाषण प्रस्तुत किया। लक्ष्यधर चौधुरी के समकालीन नाटकों के साथ एक महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि उस समय नाटक के क्षेत्र में बदलाव आ रहे थे। लक्ष्यधर चौधुरी के समय में नाटकों के आकार-प्रकार धीरे-धीरे छोटे होते जा रहे थे, नाटकों से प्रदर्शनकारी नृत्य और गीत ग़ायब होते जा रहे थे। इन सबके बावजूद बाङ्ला नाटकों की ओर से कोई चुनौती सामने नहीं आ रही थी, क्योंकि वह लक्ष्मीनाथ पद्मनाथ का दौर था। असमिया नाटकों पर उस समय केवल स्वतंत्रता आंदोलन का प्रभाव था।

हिंदी सप्ताह समारोह

15-22 सितंबर 2014, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने अपने प्रधान कार्यालय में 15-22 सितंबर 2014 तक 'हिंदी सप्ताह' का सफल आयोजन किया। उद्घाटन समारोह में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने कार्यक्रम का संचालन किया। उन्होंने सप्ताहव्यापी आयोजित किए जाने वाले कार्यक्रमों का ब्यौरा दिया। इसके अतिरिक्त उन्होंने अकादेमी में हो रहे हिंदी कार्यों का भी ब्यौरा दिया। अकादेमी की उपसचिव श्रीमती रेणु मोहन भान ने कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रयाग शुक्ल का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि हम हिंदी सप्ताह को उत्सव की तरह मनाते हैं।

श्री प्रयाग शुक्ल ने अपने व्याख्यान में कहा कि ऐसे आयोजन किए जाने चाहिए। उन्होंने हिंदी दिवस की सबको बधाई दी। उन्होंने कहा कि मेरा लिखना-पढ़ना ज़्यादातर हिंदी में ही होता है। सभी भारतीय भाषाओं का समान महत्त्व है। हमारी भाषाओं का विराट संसार है। गाँधी जी हिंदी के प्रबल समर्थक रहे, उन्होंने हिंदी को देश की राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाया। यदि आप भाषा के साथ आत्मीय संबंध नहीं बनाएँगे, तब तक आपकी उस भाषा के लिए रुचि नहीं जागेगी। हमारे समाज में आक्रामकता बढ़ती जा रही है, इससे मैं बहुत विचलित हो जाता हूँ। उन्होंने जयशंकर प्रसाद की एक कविता भी सुनाई : "उस दिन जब इस जीवन-पथ में...।" अज्ञेय जी की भी एक कविता सुनाई 'यायावर'। उन्होंने सरकारी कामकाज हिंदी में करने की प्रेरणा दी और इस बात का क्षोभ प्रकट किया कि सभी भाषाओं में शब्द कम होते जा रहे हैं। हम अपनी बात दूसरों तक नहीं पहुँचा पा रहे हैं। उन्होंने कहा कि भाषा को समाज

निशांत, देवेंद्र कुमार देवेश, प्रयाग शुक्ल एवं रेणु मोहन भान

बचाता है। आप जितनी भाषाओं को जानोगे, आपके लिए उतना ही अच्छा है। कार्यक्रम के अंत में राजभाषा अनुभाग के हिंदी अनुवादक श्री निशांत ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

22 सितंबर 2014 को सायं 4.00 बजे 'हिंदी सप्ताह' का समापन समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने किया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने आमंत्रित अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी की राजभाषा गृह पत्रिका 'आलोक' के संयुक्तांक 19-20 का लोकार्पण किया गया। अकादेमी के उपसचिव ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने 'आलोक' पत्रिका पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि तथा संस्कृति मंत्रालय में राजभाषा निदेशक श्री वी.पी. गौड़ ने सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग पर प्रकाश डाला। तत्पश्चात् कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री लीलाधर मंडलोई तथा कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री वी.पी. गौड़ ने 'हिंदी सप्ताह' के विजयी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र तथा पुरस्कार राशियाँ वितरित कीं। श्री मंडलोई ने अपने व्याख्यान में हिंदी में अधिकाधिक कार्य करने पर बल दिया। कार्यक्रम के अंत में अकादेमी की *समकालीन भारतीय साहित्य पत्रिका* के अतिथि संपादक डॉ. रणजीत साहा ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

क्षेत्रीय कार्यालयों में हिंदी दिवस समारोह

हिंदी दिवस
29 सितंबर 2014, कोलकाता

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा हिंदी दिवस समारोह 29 सितंबर 2014 को कोलकाता कार्यालय में मनाया गया जिसमें सभी स्टाफ सदस्यों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अरुण कांजीलाल ने की। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि एवं निर्णायक हिंदी शिक्षिका श्रीमती रजनी पोद्दार ने हिंदी को प्रोत्साहन देने हेतु सभी स्टाफ सदस्यों से कहा कि हिंदी दिवस के पावन अवसर पर हम यह संकल्प लें कि कार्यालय के काम-काज में हिंदी का प्रयोग अधिक से अधिक करेंगे। इस अवसर पर कार्यालय के प्रमुख श्री गौतम पाल ने हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने पर बल दिया। इस अवसर पर श्रीमती अरुणा मुखोपाध्याय भी निर्णायक के रूप में उपस्थित थीं। हिंदी दिवस समारोह के अंतर्गत सुलेख, प्रश्नमंच एवं कविता-पाठ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया तथा उसमें विजय प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया। अंत में श्री अरुण कांजीलाल ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

हिंदी दिवस
22 सितंबर 2014, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु में 22 सितंबर 2014 को हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि जैन विश्वविद्यालय, बेंगळूरु के भाषा विभाग की डीन डॉ. एम.पी. राव थीं। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि "मैं मुख्य अतिथि के रूप में इस कार्यक्रम में आकर तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं की निर्णायक बन कर स्वयं को सम्मानित महसूस कर रही हूँ। मुझे ज्ञात है कि प्रत्येक वर्ष इस कार्यक्रम को बड़ी ही निष्ठापूर्वक मनाया जाता है तथा वे हिंदीतर भाषी लोग, जिन्होंने हिंदी भाषा के प्रचार में अपना योगदान दिया है, को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया जाता है।" उन्होंने अपने व्याख्यान में हिंदी के विभिन्न पहलुओं तथा उसके महत्त्व पर भी प्रकाश डाला।

क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु में इस अवसर पर तीन प्रतियोगिताओं श्रुतलेख, सुलेख तथा निबंध-लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेनेवाले विजयी प्रतिभागियों को कार्यक्रम की मुख्य अतिथि ने पुरस्कार प्रदान किए।

हिंदी सप्ताह
15-22 सितंबर 2014, चेन्नई कार्यालय

साहित्य अकादेमी के चेन्नई कार्यालय में 15-22 सितंबर 2014 तक हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया। समापन दिवस पर सुविख्यात हिंदी अनुवादक श्री शौरिराजन ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उन्होंने एक राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी के विभिन्न सांस्कृतिक तथा साहित्यिक परंपराओं के मूल्यों की विस्तारपूर्वक चर्चा की। इस अवसर पर कविता-पाठ तथा हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। श्री शौरिराजन ने विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया। कार्यालय प्रभारी श्री ए.एस. इलांगोवन ने श्री शौरिराजन का आभार

व्यक्त किया तथा साहित्य एवं साहित्यिक मूल्यों को हिंदी भाषा द्वारा मिलनेवाले प्रोत्साहनों के महत्त्व की चर्चा की।

हिंदी सप्ताह

14-20 सितंबर 2014, मुंबई

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई में 14-20 सितंबर 2014 के मध्य 'हिंदी सप्ताह' का आयोजन किया गया। इस दौरान कार्यालय के अधिकारी, कर्मचारी एवं संविदात्मक कर्मचारियों के लिए सुलेख, निबंध लेखन और अनुवाद प्रतियोगिताओं का आयोजनक राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा किया गया। इन सभी प्रतियोगिताओं में हर साल की तरह सभी अधिकारी-कर्मचारियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया।

12 सितंबर 2014 को पुरस्कार वितरण समारोह के लिए सुप्रसिद्ध हिंदी और उर्दू लेखक श्री नूर परकार को अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। मुंबई कार्यालय के क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने अतिथि का स्वागत करते हुए उनके साहित्य का परिचय दिया। श्री नूर परकार ने अपने भाषण में कहा कि दुनिया में हमारा राष्ट्र भाषाओं में सबसे संपन्न है। यह हमारी सांस्कृतिक पहचान है। हिंदी ही एकमात्र भाषा है जो आज के समय में एक सेतुभाषा की भूमिका निभा सकती है। उन्होंने कर्मचारियों का प्रतियोगिताओं में उत्साह देखकर सभी को बधाई दी और प्रशंसा की।

अंत में सभी विजयी प्रतिभागियों को अतिथि श्री नूर परकार के हाथों से पुरस्कार दिए गए। क्षेत्रीय सचिव ने विजेताओं को बधाई देते हुए श्री नूर परकार जी एवं कर्मचारियों के प्रति आभार प्रकट किया।

साहित्यिक कार्यक्रम शृंखला

लेखक से भेंट

साहित्य अकादेमी समय-समय पर 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन करती है, जिसके अंतर्गत किसी प्रख्यात लेखक को अपने जीवन और कृतित्व के बारे में बताने के लिए आमंत्रित किया जाता है, जिससे अन्य लेखक, विद्वान और पाठक रचनाकार और उसके कृतित्व के विषय में गहरी और व्यक्तिगत समझ विकसित कर सकें। इस वर्ष निम्नलिखित लेखकों ने इस कार्यक्रम में अपने विचार व्यक्त किए।

टी. पद्मनाभन (मलयाळम् लेखक)
3 मई 2014, पय्यानुर

मुनिपल्ले राजू (तेलुगु लेखक)
27 जुलाई, 2014, हैदराबाद

जसवंत सिंह नेकी (पंजाबी लेखक)
13 अगस्त 2014, नई दिल्ली

खेरवाल सोरेन (संताली लेखक)
30 अगस्त 2014, बेटनोटी, ओड़िशा

बीनापाणि महांति (ओड़िया लेखिका)
30 अगस्त 2014, भुवनेश्वर

पुत्तसेरी रामचंद्रन (मलयाळम् लेखक)
30 अगस्त 2014, तिरूवनंतपुरम

प्रभाकर नारायण कावठेकर (संस्कृत लेखक)
4 सितंबर 2014, इंदौर

कृष्ण सिंह मोक्तान (नेपाली लेखक)
13 सितंबर 2014, दार्जलिंग

सतीश आलेकर (मराठी नाटककार)
14 सितंबर 2014, औरंगाबाद

मुरलीधर जेटली (सिंधी लेखक)
10 अक्टूबर 2014, नई दिल्ली

तेमसुला आओ (अंग्रेज़ी लेखिका)
17 अक्तूबर 2014, शिलांग

माधव बोरकर (कोंकणी कवि)
17 अक्तूबर 2014, पणजी

प्रकाश प्रेमी (डोगरी कवि)
18 अक्तूबर 2014, जम्मू

प्रकाश पाडगांवकर (कोंकणी कवि)
18 अक्तूबर 2014, पणजी

महाबलेश्वर सैल (कोंकणी लेखक)
19 अक्तूबर 2014, पणजी

मनोहर सहाणे (मराठी लेखक)
5 नवंबर 2014, सतारा

दिब्येंदु पलित (बाङ्ला लेखक)
21 नवंबर 2014, कोलकाता

वीणेश अंतानी (गुजराती लेखक)
29 नवंबर 2014, मुंबई

दुर्गा प्रसाद उपाध्याय (नेपाली लेखक)
18 जनवरी 2015, नगाँव

दलिप कौर टिवाणा (पंजाबी लेखिका)
25 मार्च 2014

मेरे झरोखे से

इस शृंखला में, एक प्रसिद्ध लेखिका/लेखक दूसरे प्रसिद्ध समकालीन लेखक के जीवन और कृतित्व के बारे में अपनी प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करती/करता है। इस वर्ष निम्नलिखित लेखकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

महाश्वेता देवी पर नवनीता देवसेन (बाङ्ला)
2 अप्रैल 2014, कोलकाता

विजय मिश्र पर रंजीत पटनायक (ओड़िया)
27 अप्रैल 2014, पुरी

प्रफुल्ल दास पर अभिराम बिसवाल (ओड़िया)
28 जून 2014, केंद्रपाड़ा

गुलाम नबी खुशदिल पर अब्दुल अहद हाजिनी (कश्मीरी)
18 अगस्त 2014, बंदीपोरा, जम्मू एवं कश्मीर

असदुल्ला आफ़ाकी पर अली एहसान (कश्मीरी)
19 अगस्त 2014, चराई शरीफ, जम्मू एवं कश्मीर

रसिकलाल पारिख पर महेश चंपकलाल एवं विष्णुप्रसाद त्रिवेदी पर रमन सोनी (गुजराती)
26 अगस्त 2014, बड़ौदा

पूरबी बरमुदै पर गोंविद प्रसाद शर्मा (असमिया)
27 अगस्त 2014, ड्रिबूगढ़

शिवनाथ पर नीलांबर देव शर्मा (डोगरी)
5 सितबंर 2014, जम्मू

मो. अली ताज पर नमी क़ौसर (उर्दू)
28 सितबंर 2014, भोपाल

मधुरातांकम राजाराम पर सिंगामनेनि नारायण (तेलुगु)
5 अक्तूबर 2014, तिरुपति

नामदेव ढसाल पर वसंत पाटणकर (मराठी)
17 अक्तूबर 2014, मुंबई

गोंविदचंद्र पांडेय पर कमलेश दत्त त्रिपाठी (संस्कृत)
21 नवबंर 2014, नई दिल्ली

हरिवंशराय बच्चन पर अजित कुमार (हिंदी)
27 नवबंर 2014, नई दिल्ली

श्याम सुंदर हेम्ब्रम पर भोगला सोरेन
1 फरवरी 2015, बोकारो

धर्मवीर भारती पर पुष्पा भारती
20 फरवरी 2015, नई दिल्ली

अर्जुन देव मन्बूर पर गुलज़ार अहमद राठेर
7 मार्च 2015, जम्मू

जयंत नायक पर देवीदास कदम
27 मार्च 2015, गोवा

नवनीता देवसेन पर रामकुमार मुखोपाध्याय
27 मार्च 2015, कोलकाता

कविसंधि

साहित्यिक कार्यक्रम 'कवि संधि' के अंतर्गत काव्य-प्रेमियों को किसी वरिष्ठ कवि/कवयित्री द्वारा कविताएँ सुनने का अवसर प्राप्त होता है। इस वर्ष इस कार्यक्रम शृंखला के अंतर्गत देश के विभिन्न प्रांतों में 15 कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

मोहन दुखुन (नेपाली कवि)
21 जून 2014, खरसाङ, पश्चिम बंगाल

धरनीधर वारी (बोडो कवि)
21 जून 2014, गुवाहाटी

जय गोस्वामी (बाङ्ला कवि)
27 जून 2014, कोलकाता

दिलीप झावेरी (गुजराती कवि)
18 जुलाई 2014, भुज

विमला (तेलुगु कवयित्री)
27 जुलाई 2014, हैदराबाद

यग्नेश दवे (गुजराती कवि)
23 अगस्त 2014, अहमदाबाद

विष्णु खरे (हिंदी लेखक)
25 अगस्त 2014, मुंबई

हरेकृष्ण डेका (असमिया कवि)
28 अगस्त 2014, दिगबोई, असम

नयना अदरकर (कोंकणी कवि)
7 सितंबर 2014, गोवा

देवदास छोट्टराय (ओड़िया कवि)
12 सितंबर 2014, भुवनेश्वर

के. सच्चिदानंदन (मलयाळम् कवि)
16 सितंबर 2014, नई दिल्ली

गिरधर राठी (हिंदी कवि)
30 सितंबर 2014, नई दिल्ली

नंद झावेरी (सिंध) कवि)
11 अक्तूबर 2014, पुणे

चंपा शर्मा (डोगरी कवयित्री)
19 अक्टूबर 2014, जम्मू

जुकांति जगन्नाथन (तेलुगु कवि)
30 अक्टूबर 2014, हैदराबाद

मंगलेश डबराल (हिंदी कवि)
30 मार्च 2015, दिल्ली

कथासंधि

इस कार्यक्रम में वरिष्ठ कथाकारों द्वारा अपने नव-लिखित उपन्यास या नई कहानियों के अंश पढ़े जाते हैं तथा उन पर पाठकों के साथ चर्चा की जाती है। इस वर्ष निम्नलिखित लेखकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

गंगेश गुंजन (मैथिली लेखक)
13 जून 2014, नई दिल्ली

नंदेश्वर दैमारि (बोडो लेखक)
21 जून 2014, गुवाहाटी

गुलज़ार सिंह संधु (पंजाबी लेखक)
20 जुलाई 2014, मोगा, पंजाब

माया राही (सिंधी लेखिका)
20 जुलाई 2014, मुंबई

मिहिर सेनगुप्ता (बाङ्ला लेखक)
12 अगस्त 2014 कोलकाता

अरूप पंतगिया कलिता (असमिया लेखक)
20 अगस्त 2014, गुवाहाटी

लालचंद सोरेन (संताली लेखक)
30 अगस्त 2014, बेतनोती, ओडिशा

बादल हेम्ब्रम (संताली लेखक)
31 अगस्त 2014, बारीपद, ओडिशा

गजानन जोग (कोंकणी लेखक)
7 सितंबर 2014, गोवा

धनवीर पुरी (नेपाली लेखक)
26 सितंबर 2014, मिरिक, पश्चिम बंगाल

पी. सत्यवती (तेलेगु लेखक)
27 सितंबर 2014, विजयवाड़ा

भगवान अटलानी (सिंधी लेखक)
2 नवबंर 2014, कोटा

संजीव (हिंदी लेखक)
19 नवंबर 2014, नई दिल्ली

तरुणकांति मिश्र (ओड़िया लेखक)
29 नवंबर 2014, भुवनेश्वर

हीरो शेवकानी (सिंधी लेखक)
4 दिसंबर 2014, उलहासनगर

संतोष सांग्रा (डोगरी लेखक)
25 दिसबंर 2014, जम्मू

मोहनलाल पटेल (गुजराती लेखक)
20 जनवरी 2015, गांधीनगर

अस्मिता

हिंदी कवयित्रियाँः- स्वाति मेंलकानी, रेणु पंत तथा रजनी अनुरागी,
22 मई 2014, नं दिल्ली

ओड़िया कथा लेखिकाएँ :- मुकुल मिश्र, सविता भोई, निवेदिता जेना, वंदना मिश्र तथा सुचित्रा पाणिग्रही, 5 जुलाई 2014 बोलनगिर, ओडिशा

अर्चना दत्त (अंग्रेज़ी), ममता किरण (हिंदी), तथा जे. भाग्यलक्ष्मी (तेलुगु)
14 अगस्त 2014, नई दिल्ली

उर्दू कवयित्रियाँ तथा कथा लेखिकाएँः- साहिबा अनवर, तबस्सुम फ़ातिमा, शाहिदा सिद्दीक़ी, नसीम निक़हत, राशिदा बाकी हया, अज़रा परवीन, सलमा हिज़ाब तथा रुख़साना लाड़ी
31अगस्त 2014, लखनऊ

बोडो कथा लेखिकाएँ : रूपाली (स्वरगीअरे), स्वप्ना बागलेरी, सनसुमवी खुंगरीं बासुमतारे, धोनश्रीस्व...तथा रश्मि ब्रह्म
14 दिसंबर 2014, उडगुरी

संताली कथा लेखिकाएँः जोबा मुर्मू होलिका मरांडी, लुसी टुडु तथा मणि सोरेन
1 फरवरी 2015, बसेकसासे

ए. सत्या (तमिळ), रमा भारती (हिंदी) तथा लीना शर्मा (असमिया)
26 फरवरी 2015, नई दिल्ली

पंजाबी कथा लेखिकाओं के साथ अस्मिता
24 मार्च 2015, चंडीगढ़

लोकः विविध स्वर

यह कार्यक्रम क्षेत्रीय गायन एवं नृत्य प्रस्तुतियों पर आधारित है, जिसमें व्याख्यानों के साथ-साथ प्रदर्शन भी सम्मिलित है। इस वर्ष निम्नलिखित कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

अंकीया नाटक प्रस्तुति
26 अगस्त 2014, शिवसागर

बिहु, तीवा, माइसिंग बोडो तथा झुमुर लोक नृत्य प्रस्तुति
7-8 नवंबर 2014, पुरूलिया

सुनाराम बेसरा द्वारा पंरपंरागत संताली नृत्य तथा गीत प्रस्तुति
6 दिसंबर 2014, मेदिनीपुर

लोक संस्कृति में बाँसुरी की भूमिका पर प्रस्तुति
18 जनवरी 2015, हावड़ा

डांग, लाग्ने तथा बाहा नृत्य प्रस्तुति
22 मार्च 2015, डिब्रगढ़

मुलाक़ात/ युवा साहिति

जी.एन. उपाध्या, वरगुरु रामचंद्रप्पा, भरतकुमार पोलिपु, श्रीनिवास जोकटे तथा पूर्णिमा सुधारक शेट्टी (कन्नड़ लेखक) 7 जून 2014, मुंबई

ओड़िया लेखकः प्रधुम्न कुमार साहु, सुजित कुमार सुधीर के ढंगडामाझी, अशोक कुमार राउत, कमल कुमार महांति तथा नीललोहित महापात्र,
4 जुलाई 2014, सोनपुर, ओडिशा

लक्ष्मी कृपा, नयनतारा, आदित्यन एलिज़ाबेथ जयकुमारी
12 जुलाई 2014, माथलापोल, चेन्नै

पंजाबी कवि तथा लेखकः संपूर्ण सिंह, तालेवालिया, अमनदीप सिंह, दर्शन सिंह गुरु तथा सुरजीत बरद,
20 जुलाई 2014, मोगा, पंजाब

असमिया महिला लेखिकाएँः नवज्योति पाठक, मृदुल हालै, प्राग्ज्योति महंत, जुनमनि साहू, आकाश दीप्त ठाकुर तथा गीताली बोरा,
25 अगस्त 2014, जोरहाट, असम

डोगरी लेखक तथा कविः सरोज बाला, तारा चंद कलंदरी, अशोक अंबर, मो. रफ़ीक रफ़ीक तथा पद्म देव नादान
18 अक्टूबर 2014, जम्मू

मुलाक़ातः एन. टी. राजकुमार, लक्ष्मी मणिवण्णन, नाद शिवकुमार तथा किलकुलम विल्लावन,
16 नवंबर 2014, दिल्ली

युवा साहित्य कार्यक्रम
20 नवंबर 2014, दिल्ली

सुनिल फूकन बसुमतारी, अनो ब्रह्म, धीरजुज्योति (बोडो लेखक)
15 दिसबंर 2014 गुवाहाटी

युवा संताली लेखकः सुचित्रा हांसदा तथा मांगत मुर्मू
1 फरवरी 2015, बोकारो

युवा लेखक समारोह
11-12 फरवरी 2015, शिलांग

सुशील सिद्धार्थ (हिंदी) सागर सापकोटा (नेपाली), ओकेद्रों खुनदोंगबम (मणिपुरी), अनुप्रिया (हिंदी), रणजीत सिंह चौहान (उर्दू) तथा शशि भूषण द्विवेदी (हिंदी)
16 फरवरी 2015, दिल्ली

कश्मीरी लेखकों के साथ युवा साहित्य
18 मार्च 2015, श्री नगर

सिंधी लेखकों के साथ युवा साहित्य
18-19 मार्च 2015, कच्छ

कवि अनुवादक

उमा शंकर चौधरी (हिंदी कवि) तथा प्रकाश भातंब्रकेर (मराठी अनुवादक)
16 अगस्त 2014, मुंबई

केदारनाथ सिंह (हिंदी कवि) तथा सोमा बंद्योपाध्याय (बाङ्ला अनुवादक)
29 अगस्त 2014, कोलकाता

अर्जुन चरण हेम्ब्रम (संताली कवि) तथा आन्पा मरांडी (ओड़िया अनुवादक),
31 अगस्त 2014, भूवनेश्वर

मंगलेश डबराल (हिंदी कवि) तथा खिरोद परीदा (ओड़िया अनुवादक)
31 अगस्त 2014, भुवनेश्वर

ईशिता भादुड़ी (बाङ्ला कवयित्री) तथा प्रयाग शुक्ल हिंदी अनुवादक)
5 दिसंबर 2014, नई दिल्ली

राजेंद्र भंडारी कृत नेपाली कविताओं का प्रदीप बिहारी द्वारा हिंदी अनुवाद
मणिकुंतला भट्टाचार्य कृत असमिया कविताओं का दिनकर कुमार द्वारा हिंदी अनुवाद
18 फरवरी 2015 दिल्ली

आविष्कार

बाँसुरी के साथ मोहिनी मोहन पटनायक द्वारा कालिदास कृत मेघदूत की प्रस्तुति
27 जून 2014, भुवनेश्वर

प्रीति प्रकाश प्रजापति (लेखक, संगीतकार तथा गायक)
28 अगस्त 2014, नई दिल्ली

रामनाथ शास्त्री के गीत तथा गज़ल पर शाम साजन तथा उनके द्वारा प्रस्तुति
28 फरवरी 2015, जम्मू

रमाकांत रथ कृत कविता श्रीराधा का नाटकीकरण
29 मार्च 2015, राउरकेला

नारी चेतना

तमिळ महिला कथा लेखिकाएँ
14 अगस्त 2014, मन्नरगुडी

तमिळ महिला कथा लेखिकाएँः सुदरवल्ली, कला विशु, राजलक्ष्मी, इलामती जानकीरमन,
22 सितंबर 2014, कुड्डालौर

विमलाकुमारी, रेगिना, कोपुरी पुष्पादेवी जयश्री तथा कावेरी सत्यवती (तेलुगु लेखिकाएँ), प्रतिबंदला रजनी, उमामहेश्वरी, येल्लाप्रद वाणी सरोजिनी तथा तल्ला सीता महालक्ष्मी (तेलेगु कवयित्रियाँ)
27 सितंबर 2014, विजयवाड़ा

मराठी महिला कथा लेखिकाएँः उर्मिला पवार, छाया महाजन, ललिता गाडगे तथा संजीवनी ताडगांवकर,
4 अक्टूबर 2014, जलना

मलयाळम् महिला कथा लेखिकाएँः चंद्रमती, सावित्री राजीवन तथा प्रसन्ना मणि,
11 अक्टूबर 2014, मनमपूर, केरल

नारी चेतनाः मालावथी, लॉरिंस मैरी तथा पद्मा विलासिनी
18 नवंबर 2014, नागेरकोइल

आकांक्षा पारे काशिव (हिंदी), पारमिता सत्पथी (ओड़िया) तथा तरन्नुम रियाज़ (उर्दू),
14 जनवरी 1015, नई दिल्ली

आज महिला लेखन क्या है?
अंग्रेज़ी लेखिकाएँ–देवप्रिया रॉय, हिंदी लेखिकाएँ–अनामिका, सविता सिंह, रोहिणी अग्रवाल तथा वी. के कार्तिक
19 फरवरी 2015, नई दिल्ली पुस्तक मेला

नारी चेतना
7 मार्च 2015, जम्मू

तमिळ महिला कथा लेखिकाओं के साथ नारी चेतना
8 मार्च 2015, चेन्नै

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर आयोजित नारी चेतना कार्यक्रम
8 मार्च 2015, बेंगळूरु

व्यक्ति और कृति

जदुनाथ प्रसाद दास (हृदयरोग विशेषज्ञ तथा कलाकार)
26 अप्रैल 2014, भुवनेश्वर

के. बी. योगी (सेवानिवृत्त उच्च अधिकारी)
21 जून 2014, खसडि, पश्चिम बंगाल

एन. राजमुहन सिंह (वैज्ञानिक)
28 जून 2014, इंफ़ाल

भाग्येश झा (नौकरशाह)
12 सितंबर 2014, अहमदाबाद

मानस बिहारी वर्मा (वैज्ञानिक)
20 सितंबर 2014, दरभंगा

फनींद्रनारायण नार्जरि (चिकित्सक)
25 सितंबर 2014, मुंबई

भीमराव पांचाळ (मराठी गज़ल गायक)
10 अक्टूबर 2014, मुंबई

जाह्नु बरुआ (फ़िल्म निर्माता)
8 नवंबर 2014, पुरुलिया

अशोक विजय गुप्त (वरिष्ठ विधिवेत्ता)
25 दिसंबर 2014, जम्मू

सूर्य सिंह बेसरा (राजनीतिज्ञ)
1 फरवरी 2015, बोकारो

महादेव लोहाना (चिकित्सक एवं शल्य चिकित्सक)
7 फरवरी 2015, अहमदाबाद

पार्थ घोष (वैज्ञानिक)
20 मार्च 2015, कोलकाता

बाल साहिती

अतीया ज़ैदी, शमा शर्मा, श्याम सिंह शशि, अमृता त्रिपाठी तथा भीम प्रधान
20 फरवरी 2015, दिल्ली

वर्णमाला शृंखला

साहित्य अकादेमी ने 'वर्णमाला' नामक नई कार्यक्रम शृंखला की शुरुआत की है। अनुवाद अध्ययन केंद्र (center for trangcation studies), सेंट स्टीफ़न कॉलेज, नई दिल्ली के साहचर्य से। यह कार्यक्रम छात्रों तथा गंभीर शोधकर्त्ताओं के लिए एक विशेष मंच है, जिससे वह वैश्विक लेखकों के साथ पारस्परिक विचार-विमर्श की शृंखला से जुड़कर उन्हें वैश्विक अभिव्यक्ति प्रदान करता है।

रूसी-अमेरिकी कवि फ़िलिप निकोलयेव द्वारा कविता-पाठ
12 फ़रवरी 2015, दिल्ली

दक्षिणी अफ्रीकी लेखक एवं चिंतक अरि सितास का व्याख्यान
16 फ़रवरी 2015, दिल्ली

शासकीय निकायों की बैठकें

कार्यकारी मंडल
22 अगस्त 2014, गुवाहाटी
19 मार्च 2015, दिल्ली

सामान्य परिषद
22 अगस्त 2014, गुवाहाटी
9 मार्च 2015, दिल्ली

वित्त समिति

17 जून 2014, दिल्ली
27 नवंबर 2014, दिल्ली

क्षेत्रीय मंडल बैठकें

पूर्वी क्षेत्रीय मंडल
22 जून 2014, गुवाहाटी

उत्तर क्षेत्रीय मंडल
23 जुलाई 2014, दिल्ली

पश्चिमी क्षेत्रीय मंडल
27 जून 2014, मुंबई

दक्षिणी क्षेत्रीय मंडल
14 जून 2014, बंगलूरू

भाषा परामर्श मंडल की बैठकें

असमिया : 22 मई 2014
बाङ्ला : 22 मई 2014
बोडो : 22 मई 2014
डोगरी : 5 जून 2014
अंग्रेज़ी : 15 जून 2014
गुजराती : 4 अप्रैल 2014
हिंदी : 4 मई 2014
कन्नड : 17 मई 2014
कश्मीरी : 7 जून 2014
कोंकणी : 3 मई 2014
मैथिली : 6 मई 2014
मलयाळम् : 18 मई 2014
मणिपुरी : 4 जून 2014
मराठी : 12 मई 2014
नेपाली : 20 जून 2014
ओड़िया : 26 अप्रैल 2014
पंजाबी : 2 मई 2014
राजस्थानी : 11 जून 2014
संस्कृत : 30 अप्रैल 2014
संताली : 23 मई 2014
सिंधी : 2 मई 2014
तमिऴ : 24 मई 2014
तेलुगु : 17 अप्रैल 2014
उर्दू : 15 मई 2014